वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

3.3

एक वर्ष में 5 अंक 15 भाषाओं में

समाजशास्त्र का पेशा

रेविन कोनेल
रेन्डाल्फ डेविड

क्रान्ति तथा प्रति–क्रान्ति

नाजनीन शाहरोकनी
परस्तू डोकाउहाकी
समिन फदाई
अब्बास वारिज काजमी
मोना अबाजा

विश्वविद्यालय संकट में

सतेन्द्र कुमार
क्लोस डोरे
स्टीफन लैसिन्च
इन्गो सींज

> नगरीय मैक्सिको में अपहरण योग्य

> मैक्सिको में विखण्डन तथा असमानता

> जापान में समाजिक असमानता

> हाइकू, सौन्दर्य एवं सादगी

> बिल्बाओ में कार्यकारी समिति की सभा

> पौलिश सम्पादकों का परचिय

> कनाडियन समाजशास्त्र आईएसए का स्वागत करता है

> सम्पादक के नाम पत्र

सूचना पत्र

GD

अंक 3 / क्रमांक 3 / मई 2013

www.isa-sociology.org/global-dialogue/

International Sociological Association

> सम्पादकीय

विश्वविद्यालय संकट में

यह लिखते समय रेविन कोनेल सिडनी विश्वविद्यालय में धरनें पर हैं और समाजशास्त्र के पेशे पर अपने दृष्टिकोण को अभिवयक्त कर रही हैं जो कि इस अंक में लिखा गया है। वह अपने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक कर्मचारियों की हडताल में सम्मिलित हैं जो कि कार्यकाल में कमी, अनियमितिकरण, तथा शैक्षणिक स्वतन्त्रता के हनन – जैसी प्रक्रियाएं जो कि दुनिया भर के अधिकांश विश्वविद्यालयों को फिर चाहे वे सर्वोत्कृष्ट हो अथवा साधारण को प्रभावित कर रही हैं के विरुद्ध प्रर्दशन कर रहे हैं।

जैसे जैसे विश्वविद्यालय सार्वजनिक सम्पत्ति से निजी सम्पत्ति की ओर परिवर्तित हो रहे हैं, वैसे ही वे अपने उत्पादों को अपने ग्राहकों (विद्यार्थीगण, सरकारों, निगमेंा, और अन्य जिन्हें भी वो आकर्षित कर सकते हों) को बेचने की ओर परिवर्तित हो रहें हैं। ग्राहको के लिए प्रतियोगिता चरम पर है तथा इसलिए विश्वविद्यालय अपने आप को राष्ट्रीय तथा वैश्विक क्रम विन्यास में उपर उठानें के लिए कोशिश कर रहे हैं ताकि वह अपनी छाप छोड सकें। अकादमिक वर्ग इन क्रम विन्यासों का विराध कर सकता है जो कि उनके स्वंय के बनाए हुए हैं, वे अपनी शर्तो पर तथा उत्साह के साथ प्रतियोगिता करते हैं। इसका तात्पर्य हुआ न केवल अंग्रेजी भाषाई जर्नल्स के लिए लिखना बल्कि अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित जर्नल्स के लिए भी लिखना यानि कि अमेरिका तथा इंग्लैड के राष्ट्रीय जर्नल्स जो कि प्रश्नों, मुद्दों तथा पद्धतियों को अपने स्थानीय तरीकों से बनाते हैं। दक्षिण के समाजशास्त्री, लेकिन केवल दक्षिण के ही नहीं, अक्सर अत्यावश्यक समस्याओं जिनका कि उनके अपने देश सामना कर रहे हैं से दूर कर दिये जाते हैं।

कतिपय के पास ही साधन हैं, हिम्मत है, अथवा रुचि है कि वह व्यवस्था को उछाल सकें। अतः हमें जर्मन समाजशास्त्रीय एशोसिएशन को सलाम करना चाहिए कि उन्होनें राष्ट्रीय क्रम विन्यास का बहिष्कार करने का निर्णय लिया जैसा कि जैना स्थित फ्रैड्रिक शिलर विश्वविद्यालय के तीन समाजशास्त्रियों ने यहां प्रतिवेदित किया है। इसी के साथ हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि अधिकांश विश्वविद्यालय जो कि क्रम विन्यास में नहीं टिकते हैं, ''अछूत'' विश्वविद्यालयों के एक बडे वर्ग की निर्मिती करते हैं। सतेन्द्र कुमार का परीक्षण बतलाता है कि उत्त्र प्रदेश (भारत) में इसका क्या तात्पर्य है जहां विश्वविद्यालय कालेजों को प्रत्यापन अधिकार बेचकर पैसा बना रहे हैं जो कि राज्य अनुदानित शुल्क वाली नकली डिग्रियां बेच रहे हैं। इस प्रकार सार्वजनिक धन राजनितिज्ञों की निजी जेबों में चला जाता हैं जो कि कालेजों को एक राजनैतिक मशीन की तरह चलाते हैं। यह सिडनी विश्वविद्यालय से भिन्न विश्व संस्तरण के दूसरे छोर पर है, लेकिन दबाव तो समान ही हैं।

नाजनीन शाहरोकनी, एवं परस्तू डोकाउहाकी महिला विद्यार्थियों के बढते हुए नामांकरण के उत्तर में ईरानी सरकार द्वारा आयोजित प्रतिधात का विवरण दे रहें हैं। ईरान के बहुत सारे 2009 के ग्रीन प्रर्दशनकारी (देखें अब्बास वारिज काजमी तथा सिमिन फदाई के लेख) इन कालेजों के भिन्न मतावलम्बीयों के वर्ग के थे। अतः कोई आश्चर्य नहीं कि ईरानी सरकार अपने विश्वविद्यालयों पर सर्तक नजर रखती है।

इन सभी मामलों में विश्वविद्यालय एवं समाज को अलग करने वाली कला गायब हो रही है। हम समाज से बाहर होने दिखावा नहीं कर सकते। अतः हमें किसी एक पक्ष का साथ देने के लिए बाध्य किया जाता है – क्या हम विवेकपूर्ण तथा विपणनकर्ताओं के साथ है अथवा कि उनके आलोचकों तथा मतभिन्नता वाली जनता के साथ हैं। समाजशास्त्र के पेशे पर लिखते हुए रेन्डी डेविड दर्शाती हैं कि राजनैतिक रुप से असत्कारशील फिलीपीन्स में भी आलोचक तथा सार्वजनिक मुठभेड को बनाए रखना संभव है। फिर भी इस प्रकार के डरावने विश्व में जहां पर कि हिंसा का सामान्यीकरण हो गया हैं जैसा कि मोना अबाजा ने मिश्र के लिए तथा एना विलारियल ने मैक्सिको के लिए लिखा है में भाग लेने के लिए साहस की आवश्यकता है। लोग हमें सुनना न चाहते हों परन्तु यह चुप रहने का कोई कारण नहीं है।

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 15 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

रेविन कोनेल, *आस्ट्रेलियन नारीवादी तथा सदर्न थ्योरी की लेखिका समाजशास्त्री को एक संस्तरित तरीके से संगठित वैश्विक श्रमिक प्रक्रिया में भाग लेते हुए देखती हैं जो कि बाजार द्वारा परिसरों पर हमलों से और अधिक विकृत हो गये हैं।*

प्रख्यात फिलिपीनो समाजशास्त्री ***रेन्डाल्फ डेविड*** *एक ऐसे आलोचनात्मक विनियोजित जीवन का वर्णन करते हैं जो कि समाजशास्त्र के सार्वजनिक क्षेत्र में संचारण के प्रति समर्पित है और दर्शाते हैं कि यह किस प्रकार राजनैतिक विनियोजन से भिन्न है।*

नाजनीन शाहरोकनी *एवं* ***परस्तू डोकाउहाकी*** *दर्शाती हैं कि किस प्रकार ईरानियन विश्वविद्यालयों में महिला विद्यार्थियों की वृद्धि नें लैंगिक पृथक्करण की युद्धनीतियों को बढ़ावा दिया है क्यों कि सरकार पुरुषों के श्रम बाजार के हितों की रक्षा करना चाहती है और पुरुषत्व पर संकट का निवारण करना चाहती है।*

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Célia da Graça Arribas, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Rossana Marinho, Angelo Martins Júnior, Lucas Amaral.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Katherine Gaitán.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Shahrad Shahvand, Saghar Bozorgi, Najmeh Taheri.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Takako Sato, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka, Yutaka Maeda, Shuhei Naka.

Poland:
Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Krzysztof Gubański, Zofia Włodarczyk, Adam Mueller, Patrycja Pendrakowska, Emilia Hudzińska, Justyna Witkowska, Konrad Siemaszko, Julia Legat.

Romania:
Cosima Rughiniş, Ileana-Cinziana Surdu, Lucian Rotariu, Angelica Helena Marinescu, Adriana Bondor, Alina Stan, Andreea Acasandre, Catalina Gulie, Monica Alexandru, Mara Şerban, Ioana Cărtărescu, Telegdy Balazs, Marian Mihai Bogdan, Cristian Constantin Vereş, Ramona Cantaragiu, Elena Tudor, Monica Nădrag.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Asja Voronkova, Ekaterina Moskaleva, Julia Martinavichene.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş, Zeynep Baykal, Gizem Güner.

Ukraine:
Svitlana Khutka, Olga Kuzovkina, Polina Baitsym, Mariya Domashchenko, Iryna Klievtsova, Daria Korotkyh, Mariya Kuts, Lidia Kuzemska, Anastasiya Lipinska, Yulia Pryimak, Myroslava Romanchuk, Iryna Shostak, Ksenia Shvets, Liudmyla Smoliyar, Oryna Stetsenko, Polina Stohnushko, Mariya Vorotilina.

Media Consultants: Annie Lin, José Reguera.

Editorial Consultant: Abigail Andrews.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीयः विश्वविद्यालय संकट में 2

समाजशास्त्र का पेशा – विश्व पैमाने पर संकलित योगदान
रेविन कोनेल, आस्ट्रेलिया 4

समाजशास्त्र का पेशा – सार्वजनिक परिवेश मे आलोचनात्मक सम्बद्धता
रेन्डाल्फ एस डेविड, फिलीपीन्स 6

> क्रान्ति तथा प्रति–क्रान्ति

प्रतिघात : ईरानी विश्वविद्यालयों में लैंगिक पृथक्करण
नाजनीन शाहरोकनी, यूएसए तथा परस्तू डोकाउहाकी, ईरान 8

ईरान के हरित आन्दोलन के पीछे कौन है?
समिन फदाई, जर्मनी 11

अतीत की उपयुक्तता : ईरान में हरित आन्दोलन
अब्बास वारिज काजमी, संयुक्त राज्य अमेरिका 13

मिस्र की प्रति–क्रान्ति की हिंसा
मोना अबाजा, मिस्र 16

> विश्वविद्यालय संकट में

भारतीय विश्वविद्यालय कैसे लाभ अर्जित करने वाली मशीन बन जाते हैं?
सतेन्द्र कुमार, भारत 19

अकादमिक क्रम विन्यास का जर्मन समाजशास्त्रियों द्वारा बहिष्कार
क्लोस डोरे, स्टीफन लैसिन्च एव इन्गो सींज, जर्मनी 21

> मैक्सिको पर फोकस

अपहरण योग्य : नगरीय मैक्सिको में हिंसा के सामान्यीकरण पर
एना विलारियल, मैक्सिको 23

मैक्सिको के युआओ के मध्य सामाजिक विखण्डन
गोन्जालो ए सारावी, मैक्सिको 25

> जापान का परिचय

समकालीन जापान में सामाजिक असमानता
स्वाको शिरहासे, जापान 27

हाइकू–सादगी में सौन्दर्य
कोइची हासेगावा, जापान 28

> आईएसए के आसपास से

बिल्बाओ में कार्यकारी समिति की बैठक
माईकल बुरावे, यूएसए 30

पौलिश सम्पादक दल का परिचयः लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला
कैरोलिना मिकोलाजेवस्का, पौलेण्ड 33

कनाडाई समाजशास्त्र आपके स्वागत हेतु तत्पर है
पैट्रिजिया अलबनीज, कनाडा 35

सम्पादक के नाम पत्र
डेविड लेहमन, यूके तथा हिलेरी रोज, यूके 37

> समाजशास्त्र का पेशा

विश्व पैमाने पर संकलित योगदान

रेविन कोनेल, सिडनी विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया

रेविन कोनेल

रेविन कोनेल एक आस्ट्रेलियन समाजशास्त्री हैं जिन्हें वर्गशक्ति एवं विद्यालयों में वर्ग एवं लिंग के मध्य सम्बन्धों से जुड़े अनुसंधान कार्यों के कारण प्रसिद्धि प्राप्त हुई। अपनी पुस्तकों 'जेण्डर एण्ड पावर' (1987) में लैंगिक सम्बन्धों के संस्थागत आधार का सिद्धान्त एवं मैंस्क्यूलैनिटीज (1995) में आधिपत्यवादी पुरूषत्व के विचार के कारण, जिसकी सामान्यतः चर्चा की जाती है, रेविन कोनेल को विश्व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। समाजशास्त्र के इतिहास के प्रति उनकी सदैव रूचि रही तथा उत्तर क्षेत्र के द्वारा समाजशास्त्र की आधारभूतीय स्थापना के प्रति उन्होंने स्पष्ट विचार व्यक्त किये। अपने एक विवादास्पद लेख 'व्हाई इज क्लासिकल थ्योरी क्लासिकल?' में मुख्य धारायी समाजशास्त्र की तीखी आलोचना की है। इस लेख को 'सर्दन थ्योरी' (2007) में विस्तार दिया गया है। यह पुस्तक दक्षिण के विश्व (वैश्विक दक्षिण) के सिद्धान्तकारों को प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करती है। रेविन कोनेल के योगदान में निहित विचार यह है कि ज्ञान सृजन के सन्दर्भों के बाहर ज्ञान को समझा नहीं जा सकता है। इन संदर्भों के प्रति रेविन कोनेल सदैव आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करती रहीं। विस्तृत जानकारी हेतु देखें http://www.raewynconnell.net/

यदि आप समाजशास्त्री हैं तो आप एक श्रमिक हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं तो आप श्रम शक्ति का एक भाग हैं। बौध वह पक्ष है जो आपको महानतम होने के भ्रम से बचाता है एवं अन्य श्रमिकों के साथ आपकी सम्बद्धता सम्बन्धी विचार को निर्मित करता है। आपका व्यवसाय ज्ञान को निर्मित करना है एवं उस ज्ञान को शिक्षण का रूप देना एवं उसका क्रियान्वन करना है। यह एक सामूहिक परियोजना होती हैं न कि व्यक्ति–केन्द्रित। प्राकृतिक ज्ञान की भाँति समाज विज्ञान भी सहभागी ज्ञान के विषय में है। यह पक्ष मूलतः सार्वजनिक है। जिस प्रसार को आप जानते हैं उसे 'सार्वजनिक क्रिया' (पब्लिक एक्शन) की संज्ञा ठीक ही दी जाती है। सामाजिक विश्व को जानने की सामाजिक प्रक्रिया में आप जो योगदान करते हैं का पक्ष ही आपको समाजशास्त्री बनाता है।

> समाजशास्त्र हेतु खोज :

1960 के दशक में, में जब विद्यार्थी थी तो ऑस्ट्रेलिया में समाजशास्त्र का शिक्षण अधिक प्रचलन में नहीं था। मैंने इतिहास में डिग्री प्राप्त की एवं सरकार/शासन में उच्च डिग्री प्राप्त की। वह एक अच्छा बौद्धिक प्रशिक्षण था परन्तु समूचा विश्व अनेक विपत्तियों का शिकार था। मैं उस विद्यार्थी आन्दोलन का भाग थी जो वियतनाम में युद्ध तथा विश्वविद्यालयों में संकीर्णतावाद/पुरातनपन्थी दृष्टिकोण को चुनौती के संदर्भ में था। हमें अधिक उपयुक्त/समीचीन एवं प्रतिबद्ध ज्ञान की आवश्यकता थी। अतः हमने स्वयं को विकसित करने के प्रयास किये तथा एक सृजनशील स्वतन्त्र विश्वविद्यालय को स्थापित करने की कोशिश की।

पीएच. डी. डिग्री प्राप्ति के बाद, मैं एक संदर्भ प्रारूप की खोज में अमेरिका के एक प्रसिद्ध विभाग में, जो समाजशास्त्र से सम्बद्ध है, गयी। मैंने पाया कि इस विभाग में कमोबेश गृहयुद्ध की स्थित है जो रेडीकल विद्यार्थियों एवं दक्षिणपन्थी विद्यार्थियों के मध्य है। शीघ्र ही विश्वविद्यालय विद्यार्थी हड़ताल के कारण बन्द कर दिया गया। लेकिन मुझे वहाँ कुछ महान विचारकों जैसे लेवी स्ट्रास, सात्र, मिल्स, गौल्डनर, लेजार फील्ड के योगदान को पढ़ने का अवसर मिला। बाद में मुझे ध्यान आया कि ये सभी विचारक पुरुष एवं श्वेत हैं साथ ही ये सभी उत्तरी विश्व से सम्बद्ध हैं। इस तथ्य को जानकर मैंने और विस्तार से पढ़ना प्रारम्भ किया।

आस्ट्रेलिया वापस आने के बाद, मैं उस समूह में दो बार सम्मिलित हुई जो एक नये विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का एक नवीन कार्यक्रम निर्मित कर रहे थे। हम सब समाजशास्त्र का एक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम निर्मित कर पाये और यह हमारे लिये एक ऐतिहासिक क्षण था। आज विश्वविद्यालय की श्रम शक्ति पर अधिक नियन्त्रण है। इसके बावजूद पाठ्यक्रम की रचना में सृजनात्मकता की सम्भावनाओं को किसी न किसी रूप में सदैव तलाशा जा सकता है।

> संस्थाएं :

आस्ट्रेलिया में लगभग स्नातक शिक्षा का लगभग आधा भाग अस्थायी/आकस्मिक श्रमशक्ति द्वारा संचालित होता है। बड़ी संख्या में युवा जनसंख्या उच्च स्तरीय डिग्रीयां प्राप्त कर दो या तीन परिसरों में विभिन्न मिश्रित कार्यक्रमों (पाठ्यक्रमों) में अंशकालिक श्रमिक के रूप में कार्य कर अपना जीवनयापन करते हैं। क्या तुम इसे पेशे की संज्ञा दे सकते हो? विकासशील देशों में तो अवधि केन्द्रित शिक्षाकर्मियों से बाहुल्यता मूलक भूमिकाओं का

>>

निर्वाह करवाया जाता है। इस स्थिति में यह आसान नहीं है कि समाज शास्त्र की संस्थागत प्रणाली में यथा शोध पत्रिकाओं, कांफ्रेसेज, शोध परियोजनाओं एवं समाजशास्त्र के पेशे से सम्बद्ध समितियों में सक्रिय हुआ जा सके। इसके बावजूद नव्य उदारवादी प्रबन्धकों ने ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करते हुए व्यक्ति (इस संदर्भ में शिक्षक) के योगदान/उपलब्धियों (आउटपुट) के मापन के प्रति अत्यधिक रूचि दिखाई है। प्रतिष्ठामूलक क्रम विन्यास, शुल्क–आय, शोध प्रपत्रों की संख्या एवं डालर्स में वित्तीय सहायता (ग्रान्ट डॉलर्स) आधुनिक विश्वविद्यालयों की मुख्य विशेषताएँ बन गये हैं। कारपोरेट जगत में विद्यमान व्यक्तिगत उपलब्धियों के संकेतकों के महत्व की तरह शैक्षणिक जगत में भी ऐसा उभार आया है। चालीस वर्ष पहले अपनी एक प्रभावी पुस्तक 'इन्डस्ट्री एण्ड इनइक्वलिटी' (उद्योग एवं असमानता) में क्लाज आफे ने इसे एक प्रकार के अतिरिक्त उत्साह (किसी सीमा तक पागलपन अर्थात् क्रेजी) के रूप में स्थापित किया था। विशाल संगठनात्मक ढाँचों में अर्थात् प्रतिष्ठानों में एक व्यक्ति अथवा एक श्रेणी की श्रम शक्ति के योगदान/उपलब्धि अर्थात् आउटपुट के आधार पर प्रतिष्ठान के विकासात्मक योगदान की तर्कसंगतता को निर्धारित करना असम्भव है। यह वास्तव में उपयोगितामूलक समाजशास्त्र का एक उदाहरण है परन्तु हमारे शासक/स्वामी इसे भूल गये हैं।

कारपोरेट जगत, जिसने विश्वविद्यालयों को तीव्रता से अधिग्रहित किया है की उपेक्षा करते हुए हमें व्यक्ति के 'करियर' को एक उत्साहवर्धक अर्थात् वास्तविकता निर्देशित उपयोगी पेशे के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। कारपोरेट जगत के उच्चाधिकारी मीडिया को साक्षात्मकार देते समय कारपोरेशन एवं उसके शेयर होल्डर्स (निगमों एवं उनसे सम्बद्ध निवेशकों) के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता का दावा तब तक दोहराते रहते हैं, जब तक कि उनकी नौकरी अथवा सेवाओं पर असुरक्षा के बादल न गहराने लगें। वे वास्तव में अपने भविष्य की रचना कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों में बहुत कम लोग अपने भविष्य की रचना करेंगे। पर अधिकांश लोग ज्ञान की रचना व उसके विस्तार हेतु वास्तविक सामूहिक परियोजनाओं पर केन्द्रित हों तो यह अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। इस प्रकृति की सहभागिता अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

> समाजशास्त्रीय ज्ञान :

सामूहिक परियोजना की वर्तमान स्थिति, अर्थात् संस्थागत प्रणाली एवं 'ज्ञान का समूचा ढाँचा', अत्यन्त समस्यामूलक हो गयी है। उन्नीसवीं शताब्दी का साम्राज्यवाद एवं बीसवीं शताब्दी के आनुभविकतावाद से समाजशास्त्रीय विचारों को मजबूती प्राप्त हुई इसके साथ ही श्रमिकों के आन्दोलन, महिला आन्दोलन एवं प्रकार्यवाद से वि–रचनावाद तक के बौद्धिक आन्दोलनों/योगदानों ने समाजशास्त्र को गति प्रदान की। अकादमिक क्षेत्र के रूप में समाजशास्त्र दुर्भाग्यजनक रूप से यूरोप केन्द्रित है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान सामान्यतः यान्त्रिक एवं पुनरावृत्तिमूलक है। वास्तविक समस्याओं के साथ घनिष्ठ परिचय हेतु मशीन की प्रक्रियात्मक शक्ति को कम्प्यूटरीकरण ने प्रतिस्थापित किया है। थाण्डिका मैकेन्डावायर के अनुसार विकासशील देशों में सामाजिक अनुसंधान सामान्यतः निर्धन लोगों के लिए सामर्थ्यहीन अनुसंधान हैं जिनमें आर्थिक निवेश कम है, ये अल्पकालिक हैं एवं इनमें सिद्धान्तों को हाशिये पर रखा जाता है।

अतः समाजशास्त्र की परियोजना को समाजशास्त्र की आलोचना की आवश्यकता है। एक ऐसी आलोचना जो नवीन स्वरूप ग्रहण कर रही है। मेरी दृष्टि में यह आवश्यक है कि समाजशास्त्रीय ज्ञान के वैश्विक–उत्तर प्रभुत्व को नकारा जावे एवं दक्षिण में उभरे सिद्धान्तों तथा उत्तर औपनिवेशिक समाज को इस परियोजना के केन्द्र में लाया जाय। यह उस आलोचना के प्रति प्रतिरोध है और मैं जानती हूँ कि ऐसा क्यों है। उत्तरी परिप्रेक्ष्य समाजशास्त्र विषय में संस्थागत है एवं हजारों की संख्या में समाजशास्त्रियों ने इसके आधार पर अपने कैरीयर का उन्नयन किया है एवं उत्तरी परिप्रेक्ष्यों के विस्तार हेतु तथा उन्हें सक्रिय बनाये रखने के लिए अपनी उर्जा का भरपूर प्रयोग किया है। सामाजिक अनुसंधान कठिन है कम से कम एक गुणवत्ता मूलक अनुसंधान सम्पन्न करना एक कठिन प्रयास है। मैं अपने विद्यार्थियों को सलाह देती हूं कि वे पाठ्य पुस्तकों को तब तक अल्मारी में छोड़ दें जब तक कि वे यह बताना आवश्यक न समझें कि एक परोक्ष पक्ष से प्रत्यक्ष पक्ष की तरफ कैसे चक्र को पूरा करते हैं (प्रारम्भकर्ता को सलाह है कि वे परोक्ष को भूल जावें)। प्रत्येक अनुसंधान समस्या नवीन होती है। नये मुद्दे दाव पर लगे हैं विभिन्न संसाधन लोगों के पास उपलब्ध हैं। प्रदत्तों के विषय में विशिष्ट तरीके अब अत्यन्त महत्वपूर्ण व संवेदनशील बन गये हैं। पद्धति को सीखने का सबसे अच्छा तरीका उस पद्धति को क्रियाशील बनाना एवं उसे व्यवहार में लाना है। इसके बाद वाला अच्छा तरीका यह है कि वास्तव में अच्छे अनुसंधान प्रतिवेदनों को पढ़ना है एवं इस विषय पर सोचना है कि अनुसंधानकर्ता अपनी समस्याओं का समाधान कैसे करे। प्रत्येक के पास स्वयं के सर्वोच्च दस अध्ययनों की सूची होनी चाहिए। मेरे द्वारा बनायी गयी ऐसी सूची में बेरी थार्न की पुस्तक 'जेण्डर प्ले', राबर्ट मारेल की 'फ्राम बायज टु जैण्टल मैन' एवं गॉर्डन चिल्ड की पुस्तक 'द डाउन ऑफ यूरोपियन सिविलाइजेशन' सम्मिलित हैं। ये सभी उत्कृष्ट अध्ययन इस योग्य हैं कि इन पर व्यापक शोध कार्य हो। अनुसंधानकर्ताओं की मजबूत पकड़ विस्तृत सूचनाओं के साथ होनी चाहिए इसके बिना समाजशास्त्रीय कल्पना विसंगतियों के साथ जुड़ जाती है।

> दर्शक, जनता :

कुछ दिन पहले मैं पुराने महिला समलैंगिकों (लेस्बियन) के साथ किये गये आत्मकथा/जीवन अनुभवों पर आधारित साक्षात्कारों से जुड़ी वेबसाइट जिसका नाम 55 यूपिटी है (55 Uppity) के उद्घाटन हेतु गयी थी (http://55upitty.com)। सिडनी के समलैंगिक समुदाय के अनेक सदस्य उस समय खुश थे। उस समय पीढ़ियों में आ रहे महत्वपूर्ण बदलावों पर बहुत चर्चा हुई। वृद्धावस्था की स्थिति के उभार स्पष्ट हो रहे थे। यहाँ मुझे यह महसूस हुआ कि यह एक ऐसा समुदाय है जो न केवल स्वयं कल्पना कर रही थी अपितु ज्ञान परियोजना के माध्यम से स्वयं की पुनः रचना भी कर रही थी।

अधिकांश समाजशास्त्रियों की यह इच्छा होती है कि उनके कार्य उपयोगी हों विशेष रूप से उन समुदायों एवं संस्थाओं के लिए जहाँ वे शोध कार्य सम्पन्न किये गये हैं। मैं ऐसी अनेक परियोजनाओं में सशक्त प्रत्यावर्तन मूलक तर्क के साथ संलग्न हूँ। इन परियोजनाओं के माध्यम से स्वयं की पुनः रचना भी कर रही थी।

अधिकांश समाजशास्त्रियों की यह इच्छा होती है कि उनके कार्य उपयोगी हों विशेष रूप से उन समुदायों एवं संस्थाओं के लिए जहाँ वे शोध कार्य सम्पन्न किये गये हैं। मैं ऐसी अनेक परियोजनाओं में सशक्त प्रत्यावर्तन मूलक तर्क के साथ संलग्न हूँ। इन परियोजनाओं में यौनिकता, आस्ट्रेलिया में पुरुष–समलैंगिकों में ऐड्स रोग को रोकने के प्रयासों के लिए किये जा रहे प्रयोग (किपेक्स इत्यादि, सस्टेनिंग सेफ सैक्स) एवं शिक्षकों तथा नीति निर्धारकों हेतु शिक्षा एवं सामाजिक असमानताओं सम्बन्धी अनुसंधान सम्मिलित हैं (कोनेल इत्यादि, मेकिंग द डिफरेन्स; स्कूल्स एण्ड सोशयल जस्टिस)

विश्वविद्यालय में कार्यरत समाजशास्त्रियों के लिए आवश्यक है कि वे उन अन्य समूहों के साथ सम्पर्क स्थापित करें जो समाजशास्त्रीय ज्ञान को प्रयुक्त करें। इस कारण मैंने श्रमिक आन्दोलन से अपने लम्बे सम्बन्धों को सदैव मूल्यवान माना है जिसमें वर्ग से जुड़े हमारे अनुसंधान का एक स्तर तक उपयोग किया गया है। ठीक इसी तरह शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों ने विद्यालयों से सम्बन्धित हमारे अनुसंधान का उपयोग किया है। मेरे अकादमिक कैरियर का आखिरी चरण का सम्बन्ध शिक्षा संकाय एवं समाज कार्य संकाय से रहा ना कि समाजशास्त्र विभाग से। लेकिन समाजशास्त्र के सम्भावित श्रोताओं का क्षेत्र दुबारा से विस्तार प्राप्त कर चुका है। समाजशास्त्र का कुछ ज्ञान जन संचार में प्रविष्ट हो गया है। कुछ हिस्सा बड़े रहस्यपूर्ण तरीके से अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क के द्वारा प्रसारित हो रहा है। साथ ही ऐसी प्रसारण प्रक्रिया में प्रकाशनों, अनुवाद, यात्रा एवं अफवाह की भी भूमिकाएं महत्वपूर्ण हैं। मुझे यह सोच कर आश्चर्य होता है जब मैं आस्ट्रेलिया में यह सुनती हूँ कि मेरे योगदान एवं कृतियों की चर्चा ब्राजील, एस्टोनिया अथवा चीन में लोगों के द्वारा होती है और वे मेरे साथ सम्पर्क के इच्छुक हैं। यह स्थिति मुझे उत्साहित करती है कि मैं वैश्विक परियोजना में हस्तक्षेप करूँ जो समाजशास्त्र कर सकता है।

> और मुख्य/आधारभूतीय उद्देश्य?

मैंने यह पेशा इसलिये चुना क्योंकि मेरा विचार था कि समाज विज्ञान उस ज्ञान को उत्पन्न करते हैं जो हमारे द्वारा सहभागी की जा रही समस्याओं जैसे हिंसा, अन्याय एवं विध्वंस को समझने हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैं यह भी सोचती हूँ कि समाजविज्ञान एक केन्द्रीय लोकतान्त्रिक भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। यह भूमिका समाज के स्व ज्ञान के केन्द्रीय भाग से सम्बद्ध है। मैंने यह सीखा है कि ज्ञान का सृजन करना कितना कठिन है। इसके साथ ही ज्ञान को क्रियाशील बनाना भी एक कठिन प्रयास है। मैंने यह भी सीखा है कि ज्ञान को सृजित करने के लिए सहयोगी कर्मियों एवं संस्थाओं पर कितना आश्रित होना पड़ता है। मैंने यह सीखा है कि हमें इन समस्त मुद्दों पर 'विश्व स्तर' पर सोचने की आवश्यकता है। 'विश्व स्तर' के शब्द को समीर अमीन ने प्रयुक्त किया है। यह हतोत्साहित करने वाली सम्भावना है परन्तु साथ ही ये सम्भावना प्रोत्साहित करने वाली है। यदि समाजशास्त्र एक पेशा है तो यह पुरानी तरह का व्यक्तिगत धार्मिक आव्हान नहीं है। यह एक सामूहिक आव्हान है जिसे विश्व पैमाने पर होना आवश्यक है। ■

> समाजशास्त्र का पेशा : सार्वजनिक परिवेश में आलोचनात्मक सम्बद्धता

रेन्डाल्फ एस डेविड, फिलीपीन्स विश्वविद्यालय, कुइजोन सिटी, फिलीपीन्स

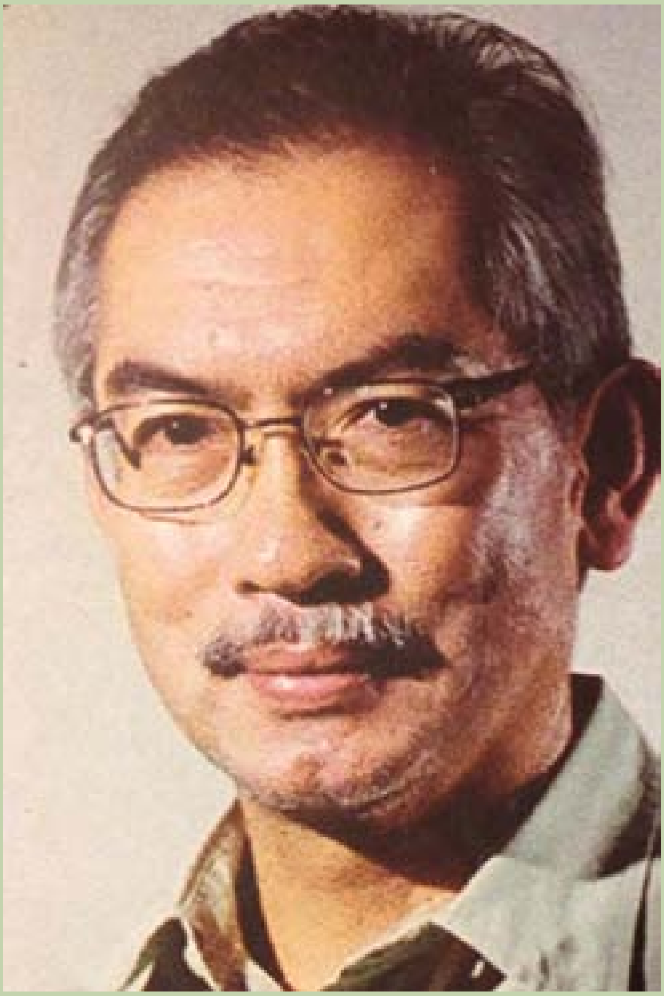

रेन्डाल्फ डेविड

रेन्डाल्फ डेविड एक असाधारण प्रकृति के जन समाजशास्त्री हैं। वे एक विशिष्ट समाजशास्त्री हैं तथा पुरस्कृत पुस्तक 'नेशन, सेल्फ एण्ड सिटीजनशिप' के लेखक हैं। फिलीपीन समाजशास्त्र का आमन्त्रण के अन्तर्गत रेनडाल्फ, डेविड विश्वविद्यालय के बाहर अपने रविवारीय परिशिष्टीय लेख 'पब्लिक लाइव्स' के लिए प्रसिद्ध हैं जो फिलीपीन दैनिक समाचार पत्र इन्क्वायरर में प्रकाशित होता है। यह लेख श्रंखला रेनडाल्फ डेविड ने 1995 में प्रारम्भ की। साथ ही टेलीविजन पर जन सहभागिता/मुद्‌दों से जुड़े कार्यक्रम 'पब्लिक फोरम' के लिए भी उनकी प्रसिद्धि है। समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के समूह के लिए वे प्रेरणा स्त्रोत हैं तथा समाजशास्त्रीय दृष्टि को जनता के सम्मुख लाने वालों में हैं।

समाजशास्त्र मेरे लिए पहला आकर्षण नहीं था। मैं यह कहूँगा कि समाजशास्त्र में प्रवेश के मेरे अनेक कारण थे पर उसमें बुद्धिजीवी होना कारण नहीं था। 1960 के दशक के प्रारम्भ में वकील बनने की आशा में मैं फिलीपीन्स विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुआ। मेरे पिता भी वकील थे। मेरा विचार यह था कि मैं ऐसा बनूं जो सामाजिक समस्याओं को स्थापित कर सकने में सक्षम हो न कि केवल उनका विश्लेषण करने योग्य हो। उन दिनों में कोई भी विश्वविद्यालय में पेशे के शिक्षण हेतु प्रवेश लेता था, शिक्षा प्राप्ति करने के प्रति उस समय रूचि अधिक नहीं थी।

यदि कोई कानून का अध्ययन करने की योजना बना रहा था तो उस विद्यार्थी को स्वीकृत तैयारी के लिए राजनीतिशास्त्र अथवा दर्शनशास्त्र या समाज विज्ञानों के साथ जुड़े किसी विषय का आवश्यक रूप से अध्ययन करना होता था। कानून के पूर्व के अध्ययन की आवश्यकता के लिए योग्यता में छूट दी गयी थी और कोई भी स्नातक डिग्री इसकी अर्हता की गयी थी। इस बदलाव ने नये विषयों जैसे समाज शास्त्र को एक सीमा तक लाभ पहुँचाया।

मेरे पास अंग्रेजी मूलतः एक मुख्य विषय था। स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त मेरी योजना पत्रकार के रूप में सक्रिय होने की थी साथ ही कानून की सांयकालीन कक्षाओं में प्रवेश लेना भी मेरी योजना का भाग था। लेकिन यदि आप युवा हैं तो आपका निर्मित किया

>>

हुआ अच्छे से अच्छा योजना मूलक प्रयास किसी भी समय असफल हो सकता है। कनिष्ठ कक्षाओं में मैंने समाजशास्त्र के प्रारम्भिक परिचयात्मक विषय को एक चयनित पाठ्यक्रम के रूप में लिया क्योंकि मैंने सुना था कि इस विषय में प्रोफेसर उच्च श्रेणी के अंक अथवा ग्रेड प्रदान करते हैं। मैं अपने सामान्य भारित औसत में वृद्धि कर सका जो समाजशास्त्र विषय के अंक/ग्रेड से सम्भव हुआ अन्यथा साहित्य के कठिन विषयों के कारण मेरे अंक/ग्रेड में ह्रास हो सकता था।

इन सब स्थितियों के कारण मैं समाजशास्त्र की तरफ आकृष्ट हो गया। पाठ्यक्रम की समाप्ति के उपरान्त लम्बे समय तक मैं समाजशास्त्र की पुस्तकें पढ़ता रहा वरिष्ठ कक्षाओं में मैं समाजशास्त्र की तरफ खिंचता गया जो मेरे पिता को आश्चर्यचकित करने वाला था। यह उन संदर्भों में से एक है जो किसी के जीवन को निर्णायक रूप से मोड़ देता है। मैं समाजशास्त्र की उन कक्षाओं में अपने भावी जीवनसाथी से मिला तथा सामाजिक मुद्दों के साथ सामना करने के फलस्वरूप मेरे राजनीतिक दृष्टिकोण में रूपान्तरण हुआ कानून सम्भवतया मुझे राजनीति में परिपाटीय करीयर की तरफ ले जा सकता था। मैं वहाँ परिसरीय राजनीति में सक्रिय था। मैं कानून की उस कक्षा का हिस्सा बनता जहाँ मेरे देश के वरिष्ठ वर्तमान विधायकों में से अनेक उपस्थित थे।

समाजशास्त्र ने मुझे वह चेतना मूलक अभिवृत्ति प्रदान की जो कि संकटों से जूझ रहे युवा समाज जैसे फिलीपीन्स के गहन अध्ययन हेतु आवश्यक है। यदि हन्नाह एरेन्ड् की एक युक्ति का मैं अनुकरण करूँगा तो यह कह सकता हूँ कि मैंने स्वयं को ''आश्चर्यों के विस्तृत परिदृश्य'' में बंधा हुआ पाया (Pathos of wonder)। इस युक्ति का अर्थ हैं कि स्वयं में अनुशासित अवलोकन की आदत विकसित करो जो कि प्रत्येक समस्या के तत्काल समाधान के प्रयासों/विचार को हतोत्साहित करता है। एक दीर्घकालिक संरचनात्मक उपागत ने उन कारणों को सामने रखा जो रेडीकल (आमूलचूल परिवर्तनकारी) राजनीति से सम्बद्ध होते हैं। इस कारण साठ के दशक के अन्त में यह कठिन था कि समाजशास्त्री मार्क्सवादी न हो।

परन्तु अकादमिक समाजशास्त्री का मार्क्सवाद मार्क्सवादी दलों के सदस्यों के द्वारा स्वीकृत मार्क्सवाद से भिन्न है। बाद वाला अर्थात् दलीय सदस्यों का मार्क्सवाद क्रान्तिकारी विचारों एवं क्रियाओं के समन्वय के विषय का भाग है जहाँ संगठन के हितों के लिये आलोचनात्मक प्रत्यावर्तन को स्थगित किया जाता है। मार्क्सवादी समाजशास्त्री जबकि किसी भी लेनिन वादी संगठन के सम्मुख समस्या उत्पन्न कर सकता है क्योंकि वह प्रत्यावर्तन की आदत को कभी नहीं छोड़ता। एक संलग्न सहभागी से कही अधिक वह सदैव एक अवलोकन कर्ता के रूप में सक्रिय रहता हैं क्योंकि विचारधारा के कारण उसकी स्वयं की क्रियाएं उसके अनवरत वि–रचनात्मक प्रारूप का भाग बनती है।

इस कारण, मेरे अनुसार विचार व क्रिया का समन्वय (प्रेक्सिस) समाजशास्त्री के लिए कभी भी प्रभावी पक्ष नहीं रहा। व्यावहारिक सलाह देने के लिए कोई व्यक्ति समाज शास्त्री नहीं बनता। प्राथमिक समाजशास्त्रीय प्रतिबद्धता तो द्वितीय स्तर अवलोकन है अर्थात् उन तरीकों का अवलोकन जिनके कारण अन्य व्यक्ति अपने दिन प्रतिदिन के जीवन को विशिष्ट बनाते है। समाजशास्त्रियों की अभिवृत्ति में सम्मिलित है कि वे सामाजिक जटिलताओं को उस रूप में देखें जिस रूप में वे विद्यमान हैं न कि उन जटिलताओं को देख कर वे धैर्य खो दें या उत्तेजित हो जावें/उतावले हो जाए अथवा उन सामाजिक समस्याओं का समाधान न होने के कारण भयभीत हो जावें।

समाजशास्त्रीय दृष्टान्त का यह एक अपरिहार्य चरित्र है। यह एक मात्र तर्क है जिसे केन्द्र में रखकर पुछा जाना चाहिए कि क्या विकासशील समाजों में ऐसे किसी विषय के लिए स्थान है जो वस्तुओं का अवलोकन कर उन्हें सामने लाये या फिर महज समाधान की तरफ अग्रसर हो। वास्तव में इस प्रश्न को मैंने स्वयं से अनेक बार पूछा है।

मैं फिर भी यह तर्क देना चाहूँगा कि अब से पहले यह इतना महत्वपूर्ण नहीं था कि समाज को समझने व व्यक्त करने हेतु बौद्धिक अभिवृत्ति के योगदान को केन्द्रीय महत्व दिया जाए बजाय इसके कि तत्काल समाधान प्रस्तुत किया जावे यह समाधान उन सवालों के संदर्भ में है जिनके संदर्भ–प्रारूपों के कारण विश्व समस्याग्रस्त है। राजनीति के पेशे में बौद्धिक विशेषज्ञों (स्कालर्स) से भिन्न स्वभाव की जरूरत होती है। आप कभी भी एक प्रभावी राजनीतिज्ञ या सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता नहीं हो सकते यदि आप अनवरत रूप से स्वयं का स्व विश्लेषण करने की आदत को अपने व्यक्तित्व में शामिल किये हुए हैं। मेरी दृष्टि में प्रत्यावर्तन राजनीतिक कार्यकर्ता का सबसे खराब दुश्मन है।

मैं विचारता था कि मुझे यह अच्छी तरह ज्ञात हैं कि राजनीति के विश्व में प्रवेश करने से मुझे कौन सा अवयव रोक रहा है। पर मैं गलत था। मैंने संकेतों को पढ़ लिया था और इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि देश के अलोकप्रिय राष्ट्रपति ग्लोरिया मैकापगल अरोयो अपने को भावी राजनीतिक संकट से बचाने के लिए कार्यकाल की समाप्ति के पूर्व कांग्रेस सदस्य पद हेतु चुनावी सीट प्राप्त करेंगी। क्योंकि हम समान/एक ही नामांकन जिले का हिस्सा हैं। मुझे यह पता था कि मैं स्वयं प्रत्याशी बन कर उन्हें चुनाव में पराजित कर सकने में सक्षम था। इस मूर्खतापूर्ण विचार को अस्वीकृत करने की बजाय मैंने गलती की और चुनाव में प्रत्याशी बनने का निर्णय लिया।

मैं इन सभी पक्षों को जान पाता, इसके पूर्व ही मैंने स्वयं को डेविड की भूमिका में देखना शुरू किया जिसे देश के राजनीतिक गोलियाथ को उभरने से रोकना आवश्यक है। यह देश के लिये एक महत्वपूर्ण पड़ाव बनता जहाँ मसीहा की खोज की जानी थी। परन्तु मुझे समाजशास्त्री के रूप में यह ज्ञात था कि मुझे अनेक जोखिम उठानी पड़ सकती हैं यदि मैं कार्यात्मक सीमाओं के परे जाता हूँ। मुझे अपने निर्वाचन जिले की विशिष्ट समस्याओं की जानकारी नहीं थी। मैंने इसके पूर्व किसी सार्वजनिक पदानुषंग को प्राप्त करने की कोशिश चुनावी प्रक्रिया के अन्तर्गत नहीं की थी। मेरे पास चुनावी दौड़ में भाग लेने हेतु पर्याप्त धन भी नहीं था।

कुल मिलाकर कहा जाय तो परम्परागत राजनीति का हिस्सा बनने के लिए मेरे पास विशिष्ट प्रकार का स्वभाव नहीं था। मैं यह सब उस समय जानता था जब मैं शक्ति संरचना के केन्द्र में था पर मैं इस पक्ष को आगे ले जाने का इच्छुक नहीं था।

मेरे पास लेकिन उस समय वापसी की कोई सम्भावना नहीं थी, मैंने स्वयं को एक ऐसे विश्व में प्रवेश के लिए तैयार करना शुरू किया जहाँ जीवन पर्यन्त विवेचना होती थी पर वह किन दिशाओं में थी के पक्ष को एक सीमित अवधि में, जो मेरे पास थी उपयुक्त रूप में समझा नहीं जा सकता था। जिस दिन मुझे चुनाव हेतु नामांकन भरना था, मैंने निर्णय लिया कि यह उचित नहीं हैं कि मैं परिवार को दिये जाने वाले समय की घोर उपेक्षा करूँ और व्यक्तिगत पसन्दगी या ना पसन्दगी समझी जाने वाली दृष्टि को महत्व देकर चुनाव का भाग बन जाऊँ। चुनाव न लड़ने के मेरे निर्णय की मेरे मित्रों सहित अनेक लोगों ने तीखी आलोचना की। ये लोग चुनाव में एक कड़े संघर्ष का इन्तजार कर रहे थे।

ज्ञान के सशक्त हथियार के साथ एक समाजशास्त्री के रूप में सार्वजनिक परिदृश्य में सक्रिय होते हुए आप यह पा सकते हैं कि आप शक्ति संरचना का महत्वपूर्ण अवयव बन गये हैं। यदि आप समाजशास्त्री बने रहने के इच्छुक हैं तो आप को चाहिए कि आप राजनीतिज्ञ या राजनीतिक दल के कार्यकर्त्ता के रूप में सक्रिय न हों अपितु सार्वजनिक जीवन के भाग के रूप में सक्रिय रहें।

एक समाजशास्त्री के रूप में आपका लक्ष्य राजनीति की पड़ताल करना हैं न कि उसे कुछ नियमों या शर्तों के आधार पर जीतना है। ■

> पलटाव/प्रतिघात :

ईरानी विश्वविद्यालयों में लैंगिक पृथक्करण

नाजनीन शाहरोकनी, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू. एस. ए. और परस्तू डोकाउहाकी, पत्रकार, तेहरान, ईरान

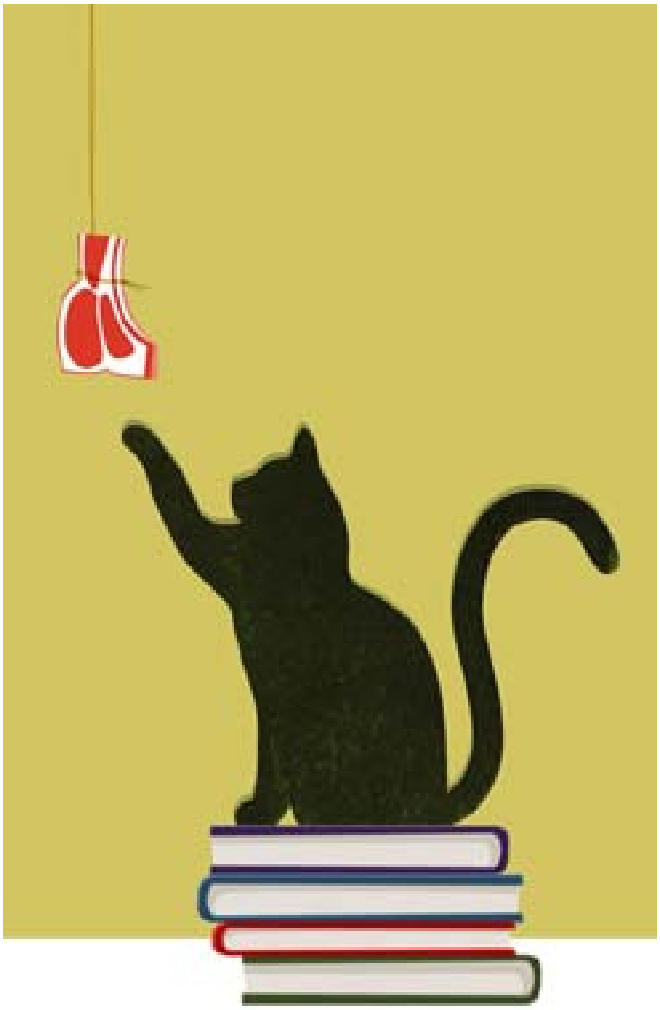

चित्र आरबू द्वारा

ईरान में सरकारी समर्थन प्राप्त मेहर समाचार ऐजेन्सी ने नये शैक्षणिक वर्ष के आगमन को देखते हुए 6 अगस्त 2012 को एक बुलेटिन प्रकाशित किया कि देश के 36 विश्वविद्यालयों ने महिलाओं को 77 अध्ययन क्षेत्रों से वंचित कर दिया है। सूचित प्रतिबंधों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हंगामा खड़ा कर दिया। ब्रिटेन में निर्वासित ईरानी मानवाधिकार अधिवक्ता और नोबल पुरस्कार विजेता शिरीन इबादी ने बान की–मून, संयुक्त राष्ट्र महासचिव और नवी पिल्लै, मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त, को एक पत्र लिखा जिसमें ''इस कदम को इस्लामिक गणतंत्र द्वारा महिलाओं को घरों के निजी डोमेन में पुनः भेजने की कोशिश की। हाल की नीति के एक हिस्से के रूप में निंदित किया क्योंकि वह सार्वजनिक क्षेत्र में उनकी जोशीली उपस्थिति को सहन नहीं कर सकते हैं।'' सरकार की प्रवक्ता विक्टोरिया नुलैंड ने 21 अगस्त को एक बयान पढ़ा जिसमें ''ईरानी अधिकारियों से महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने और ईरान स्वयं के कानून और अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों जो जीवन के सभी क्षेत्र, जिसमें शिक्षा तक पहुँच भी सम्मिलित है, को परिपुष्ट करने की गारण्टी देता है, का समर्थन करने का आह्वान किया था।''

ईरान में लैंगिक भेदभाव के अस्तित्व का खण्डन करते हुए उच्च शिक्षा अधिकारी बचाव की मुद्रा में आ गये। कैबीनेट मंत्री कामरान दानेशू, जो इन प्रतिबंधों का सार्वजनिक चेहरा है, ने सुझाव दिया कि इस कहानी को बी. बी. सी. और वायस ऑफ अमरीका के फारसी भाषा सेवा ने अनुपात से अधिक बढा चढा कर प्रस्तुत किया है। उसने कहा, ''यदि वे दुखी हैं तो इसका अर्थ है कि हम सही कर रहे हैं।''[1]

ईरान में शैक्षणिक वर्ष के शुरू होने के साथ ही यह स्पष्ट है कि इस्लामिक गणतंत्र और पश्चिम दोनों का झुकाव कुछ हद तक भ्रामक था। नये प्रतिबंध दोनों पुरूषों और महिलाओं को प्रभावित करते हैं और वे लैंगिक पृथक्करण की लंबे समय की योजना का हिस्सा हैं। ऐसी योजनाएँ इस्लामिक गणतंत्र के प्रारंभिक वर्षों तक जाती हैं और इन्हें अलग–अलग सरकारों ने भिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग में लिया है। 1980 के दशक में, इस विचार को मानते हुए कि लिंगों का घर के बाहर मिलना–जुलना गैर इस्लामिक और सार्वजनिक नैतिकता के लिये खतरनाक है, राज्य ने पुरूष और महिलाओं को कैम्पस पर शारीरिक रूप से पृथक करने का प्रयास किया। आज, कट्टरपंथी पुनः कैम्पस को 'इस्लामिक' बनाना चाहते हैं और साथ ही ईरान में उच्च शिक्षा के फेमीनाईजेशन के अप्रकट परिणामों को भी सुधारना चाहते हैं। लैंगिक पृथक्करण के नये उपाय पुरूषों के शिक्षा, विवाह और नौकरी

>>

महिलाएं ईरान के सुप्रीम नेता अयातुल्ला खोमैनी की छाया में

के बाजार में जीवन अवसरों की सुरक्षा और राज्य को उच्च बेरोजगारी और आर्थिक रूग्णता के बीच राजनैतिक दवाब से बचाने की तरफ केन्द्रित हैं।

> शैतान विवरण में है

लैंगिक पृथक्करण की सम्पूर्ण व्यवस्था देश भर के विश्वविद्यालयों में लागू, यद्यपि असमान रूप से, विभिन्न व्यवहारों का पैचवर्क है।

कई विश्वविद्यालयों ने इस्लामिक गणतंत्र के प्रथम दशक से लागू कठोर लैंगिक कोटा को विस्तृत कर दिया है, जिसके द्वारा प्रत्येक अध्ययन के क्षेत्र में पुरूष और महिलाओं को निर्दिष्ट जगह आवंटित की गई है। उदाहरण के लिए, ईरानी उच्च शिक्षा की प्रमुख संस्था माना जाने वालों तेहरान विश्वविद्यालय, तकरीबन सभी विषयों में कक्षा की आधी सीटें पुरूष और आधी सीटें महिलाओं को आवंटित करता है। 50–50 कोटा व्यवस्था के कुछ अपवाद हैं : राजधानी में ही स्थित, शादि बेहेस्ती विश्वविद्यालय ने 110 कानून के छात्रों को स्वीकार किया है–60 महिलाएँ और 50 पुरूष। अन्य विद्यालय पुरूष और महिला छात्रों को दो दल में बाँट रहे हैं जो कम से कम सैद्धान्तिक रूप में अपनी पढ़ाई में दो ट्रैक का पालन करेंगे। पुरूष फॉल (शरद ऋतु) सेमेस्टर में प्रवेश लेते हैं और महिलाए बसन्त में। हालांकि व्यवहारिक रूप में और पृथक्करण की निगरानी के अभाव में, दोनों दल अन्ततः मिल जाते हैं और पुरूष और महिलाएँ एक ही वैकल्पिक पाठ्यक्रम में एक साथ पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए ऐसा ही मामला केन्द्रीय ईरान के अरक विश्वविद्यालय और पर्वतीय पश्चिम में लोरेस्टान विश्वविद्यालय का है। अधिकांशतः प्रादेशिक विश्वविद्यालयों द्वारा ऐसी नीतियों का निर्वाह किया जा रहा है। इस्लामिक गणतंत्र ने अक्सर प्रदेशों को अपनी कई विवादास्पद पहलों के लिए परीक्षण स्थल के रूप में इस्तेमाल किया है।

फिर भी अन्य विश्वविद्यालयों ने अध्ययन के कुछ क्षेत्र विशेष रूप से पुरूषों के लिए आरक्षित किये हैं। इनमें अधिकतर वे क्षेत्र हैं जो पारंपरिक तौर पर आर्थिक या सांस्कृतिक कारणों से ''पुरूषोचित'' माने जाते हैं। केवल पुरूष पाठ्यक्रमों ने सर्वाधिक मीडिया का ध्यान आकर्षित किया है परन्तु कई संस्थानों ने कुछ अध्ययन क्षेत्र, प्रायः ''स्त्रियोचित'' को सिर्फ महिलाओं के लिये आरक्षित किया है। शाहिद चमरान विश्वविद्यालय ने फारसी साहित्य, मनोविज्ञान या शिक्षा में 2012 में किसी भी पुरूष को प्रवेश नहीं दिया।

यद्यपि एकल–लिंग के नये प्रकार के प्रवेश के लिये कोई देशव्यापी पैटर्न दिखाई नहीं देता है। कई विश्वविद्यालयों ने इन उपायों को मनमाने ढंग से अपनाया और ''पुरूषोचित'' एवं ''स्त्रियोचित'' अध्ययन क्षेत्रों के बीच की रेखा को बिना किसी योजना के खींचा है।

लैंगिक पृथक्करण, तथापि केवल प्रवेश अधिकारियों का एक प्रशासकीय कार्य–प्रणाली नहीं है। 1980 के दशक के प्रारंभ में, अनुभवहीन इस्लामिक गणतंत्र के उग्रवादी घड़ ने यह माँग की कि कक्षाओं का लैंगिक पृथक्करण होना चाहिए और कुछ मामलों में, पुरूषों और महिलाओं की कतारों के मध्य विभाजक लगाये गये।

आयोतुल्ला रूहोल्ला खुमैनी, 1979 के आंदोलन के नेता, ने अधिक रूप से इस कार्य प्रणाली का विरोध किया। विभाजकों को हटा लिया गया परन्तु लैंगिक पृथक्करण चलता रहा। गलियारों, कक्षाओं, पुस्तकालयों और कैफेटेरिया (जलपान गृह) में ''बहनो'' और ''भाइयों'' के अलग कतारों में चलने या अलग स्थानों पर बैठने के निर्देश देने वाले संकेत लग गये। ये प्रतिबंध अन्ततः मंद पड़ गये क्योंकि छात्रों की हर गतिविधि का निरीक्षण करना मुश्किल और मँहगा था। विज्ञान मंत्री दानेश्जू इन उपायों को वापिस चाहते हैं : ''इस शैक्षणिक वर्ष के आरंभ से पुरूष और महिला छात्रों को पृथक कतार में बैठना होगा और विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता इस प्रक्रिया की निगरानी के लिए उत्तरदायी होंगे।''[2]

दानेश्जू इरानी संसद, मजलेस और धर्मगुरूओं के मध्य भी एकल–लिंग विश्वविद्यालयों के लिए समर्थन प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। मंत्रालय का कहना है कि उनका लक्ष्य देश के प्रत्येक प्रदेश में केवल महिला विश्वविद्यालय का निर्माण करना है।[3] यह देखना अभी बाकी है कि क्या राज्य महिलाओं को इन केवल महिला स्थानों की तरफ निर्देशित करेगी या फिर वह महिलाओं को उच्च शिक्षा में अधिक विकल्प प्रदान करेगा। हालांकि पूर्व अनुभव यह दर्शाता हैं कि महिलाओं ने ऐसी जगहों को सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति और पहुँच का विस्तार करने के एक तरीके के रूप में लिया है।

> सूत और आग, माँस और बिल्लियाँ

विरोध का सामना करते हुए दानेश्जू ने दावा किया कि लैंगिक पृथक्करण की नीतियाँ ''सर्वोच्च नेता की मांगों के अनुकूल थी।[4] वास्तव में, 1980 के दशक के प्रारंभ में उनका कक्षाओं में विभाजकों के प्रति विरोध के बावजूद ऐसा प्रतीत होता हैं कि 1990 के दशक के उत्तरार्ध, मोहम्मद खताभी के सुधारवादी प्रशासन के दौरान सर्वोच्च नेता, आयोतुल्ला खुमैनी ने लैंगिक पृथक्करण की अवधारणा को अंगीकार कर लिया था। लीडर ने तत्कालीन विज्ञान मंत्री, मोहम्मद मोइन को उनकी लापरवाही के लिए एक भाषण में लताड़ा : ''सह–शिक्षा विद्यालय यात्राएं और रिट्रीटस ? मैं चकित हूँ। दुनिया में कुछ ऐसे स्थान हैं जहॉं लिंगों का मिलना–जुलना पूर्ण रूप से सामान्य है। परन्तु हमारे देश के इस्लामिक वातावरण में ऐसा नहीं है।''[5] 2009 में तेहरान की खाजेह नासिर तुसी विश्वविद्यालय में खुमैनी के प्रतिनिधि, होजत–उल–इस्लाम नबियलाह फज़लाली ने कैम्पस में ''असंगत दोस्ती'' की उनकी कड़वी यादों के बारे में बोलते हुए लीडर की सोच के बारे में अन्तदृष्टि प्रदान की। फजलाली ने कहा, ''महिलाएँ और पुरूष सूत और आग के समान

>>

हैं।'' यदि आप उन्हें अलग नहीं रखेंगे, सूत में आग लग जायेगी।'' लड़के और लड़कियों को एक दूसरे के प्रति ''सहज प्रवृत्ति और कामुकता'' के अलावा कुछ भी नहीं आकर्षित करता है।'' जब आप एक बिल्ली को कच्चा माँस फेंकते हैं तो वह उसे खा लेती है। वह कैसे नहीं खायेगी?''[6] दोनों ही रूपक में, युवा पुरूष, युवा महिलाओं का भक्षण करने के लिए पूर्णतः तैयार हैं, फिर भी यह स्पष्ट हैं कि धर्मगुरूओं की चिंता का विषय सिर्फ पुरूष हैं।

2012 में पहले युवाओं पर लक्षित एक धार्मिक टी.वी. कार्यक्रम में, शाहिद बेहेश्ती विश्वविद्यालय में खुमैनी के सांस्कृतिक प्रतिनिधि, होज्जत–उल–इस्लाम नसेर नागवियान ने एक युवा पुरूष छात्र की अत्यधिक कुंठा का स्मरण किया जिसने उससे यह पूछा था कि कक्षा में किसी महिला के पीछे बैठते समय क्या यौन कामेच्छा महसूस करना धार्मिक रूप से स्वीकृत है। नागवियान को दोहराते हुए, एम.पी. मोताहरी ने घोषित किया, ''यदि पुरूष और महिलाओं को मिलना–जुलना है, तो पाश्चात्य दुनिया की तरह यौन सम्बन्धों की अनुमति होनी चाहिए। अन्यथा यौन इच्छाओं का दमन कई प्रकार की मानसिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को पैदा करता है।''[7] डिप्टी की राय के अनुसार यदि स्त्री–पुरूष स्वतन्त्र रूप से मिलते हैं तो युवा पुरूषों को अपनी इच्छाओं को दबाना होगा। नैतिक पाठ यह होगा कि यदि बिल्ली माँस नहीं खा सकती तो माँस को वहाँ से हटा लेना चाहिए।

> आधुनिक महिला की परछाई में खो जाना

लैंगिक पृथक्करण के उपायों के पीछे कामुकता का नियमन ही केवल एक प्रेरणा नहीं हैं और अहमदीनेजाद के अर्न्तगत इरानी विश्वविद्यालयों में महिलाओं की स्थिति पर चिंता करना कोई नई बात नहीं है। ईरान के इतिहास में पहली बार 1998 में महिलाओं ने नव प्रवेश प्राप्त विश्वविद्यालय विद्यार्थियों में पुरूषों को पीछे छोड़ दिया। तब से ही विश्वविद्यालय में स्थानों पर महिलाओं की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। फेमिनाइजेशन का रूझान केवल स्नातक शिक्षा तक ही सीमित नहीं है। सांस्कृतिक आंदोलन की उच्च परिषद की उप–समिति, महिला सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिषद की फेरेश्तेह रूहअफ्जा के अनुसार, पूर्व के दशक में, डाक्टोरल पाठ्यक्रम के अर्न्तगत महिलाओं की संख्या में 269 प्रतिशत वृद्धि हुई हैं, जबकि स्नातकोत्तर डिग्री में प्रवेश लेने वाली महिलाओं की संख्या 26 के फैक्टर से बढ़ी है।[8]

इस्लामिक गणतंत्र को महिला अधिकारों के समर्थक के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के लिए सरकारी अधिकारी और सरकार अनुमोदित अखबार एजेन्सियाँ (विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र में) महिला साक्षरता में विस्फोट को इंगित करने के लिए अन्य के साथ इन आंकड़ों का उद्धरण देती रहते हैं। सत्ता के गलियारों में यद्यपि ये आँकड़े चिंता का स्त्रोत हैं। संसद के शिक्षा एवं शोध आयोग के सदस्य तयैबह सफेई, शिक्षा में महिलाओं के उल्लेखनीय वृद्धि से चिंतित हैं: ''ये असंतुलन सामाजिक संकट पैदा कर सकते हैं।''[9] ''सामाजिक संकट क्या हैं?'' पारम्परिक प्रेस और आनलाईन समालोचक यह चिंता कर रहे हैं कि पुरूष शिक्षा और श्रम–शक्ति में पिछड़ रहे हैं। (वास्तविकता में, पुरूष नौकरी के बाजार में महिलाओं से संख्या में बहुत ज्यादा है और अधिक कमाते भी हैं परन्तु सोच अन्यथा है। एक ऐसा लेख पुरूष महिमा के लिए फातहा की तरह पढ़ता है।)

लेखक का कहना है कि आधुनिक पुरूष आधुनिक महिलाओं की परछाई में खो गये हैं।'' : ''यह स्पष्ट हैं कि पुरूष कनिष्ठ साझेदार बन रहे हैं। आधुनिक पुरूष का वर्णन करने के लिए सर्वोत्तम विशेषण ''कोडा पडा हुआ (whipped) है। नामर्दी आधुनिकता के केन्द्र में हैं : पुरूष अब वैसे पुरूष नहीं है जैसे होते थे। महिलाएँ, सूर्य की भांति, केन्द्र में हैं और पुरूष, चाँद की भांति (जिसकी रोशनी सूर्य का परावर्तन है), निकम्मे और दब्बू हो कर हाशिये पर हैं।[10]

> पुरूष और राज्य की रक्षा

हमशाहरी जवन, युवाओं के लिए राज्य–समर्थित पत्रिका के 15 सितम्बर 2012 के अंक में एक पूरा खण्ड महिलाओं की सफलता को समर्पित है परन्तु उन्हें साथ ही में खतरनाक भी दर्शाते हैं। मुख्य पृष्ठ का शीर्षक है : ''हाथ उपर करो! महिलाएँ सामाजिक क्षेत्र पर घात लगा रही हैं : पहले विश्वविद्यालय, फिर खेल और अब प्रमुख नौकरियाँ। अगला निशाना क्या हैं?''

हमलावार बन्दूक से लैस चीटियों में एक लड़की पतले पैरों और उँची टोपी पहने एक लंबे आदमी जिसकी छाया दीवार पर दिखाई दे रही है, का सामना कर रही है। यह चित्र 1990 के एक जापानी एनीमे टेलीविजन श्रृंखला – My Daddy Long Legs (1912 में जीन वेबस्टर लिखित अमरीकी उपन्यास Daddy-Long-Legs पर आधारित) जिसे फारसी में डब किया गया और 1990 के दशक में सरकारी टी. वी. पर दिखाया गया, की याद ताजा करता है। यह श्रृंखला जूडी एबोट नाम की लड़की की कहानी है जो एक धनी व्यक्ति, जिसे उसने सिर्फ परछाई में देखा हैं, के सहयोग से महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है। ऐसा प्रतीत होता हैं कि हमशाहरी जवन का मुख पृष्ठ यह संदेश देता हैं कि ईरान की जुड़ी एबोट जैसी लड़कियाँ न केवल पुरूष संरक्षक की आवश्यकता से बाहर आ गई हैं अपितु उनके प्रति प्रतिकूल भी हो गई हैं।

ईरानी उच्च शिक्षा के फेमीनाईजेशन की घटना, इस्लामिक गणतंत्र के अन्दर और बाहर राजनैतिक फाड़ की बजाय सामाजिक परिवर्तन में गहन रूप से निहित है। लैंगिक पृथक्करण की व्यवस्था का विरोध न सिर्फ छात्रों और प्रोफेसरों की तरफ से बल्कि रूढ़िवादी महिला समूहों से भी आ रहा है। आलोचना इतनी तीव्र हैं कि कुछ विश्वविद्यालयों, जैसे शाहिद कामरान ने युवा लड़के और लड़कियां क्या और कैसे पढ़ सकते हैं पर अपने प्रारंभिक प्रतिबंध निरस्त कर दिये हैं।

इस दौरान, ईरानी प्रेस द्वारा प्रस्तुत सबूत और सरकारी अधिकारियों के कथन यह सुझाव देते हैं कि लैंगिक पृथक्करण की नीतियों की तरफ यह ताजा मोड़, हालांकि इस की कीमत मुख्य रूप से महिलाओं को भुगतनी पड़ती है, जो यौन कुंठित कम शिक्षित पुरूष जो अंधकारमय भविष्य का सामना कर रहे हैं , की मर्दानगी के संकट के बारे में बढ़ती हुई चिंता है। राज्य एक प्रबल स्त्रीत्व को अलविदा चुम्बन देने की बजाय नपुंसक पुरूषत्व को जीवन दान देना चाहता है। और यह पुरूषों की भावनाओं के बारे में नहीं है। ईरान प्रतिबंधों से दबे, रियल के अवमूल्यन में लड़खड़ाया और उँची बेरोजगारी की दर से क्लांत आर्थिक संकट में हैं। ईरानी राज्य को नियंत्रण में रखने वाले कट्टरपंथी बेराजगार पुरूषों, जिनसे उनकी मान्यताएँ सर्वाधिक डर पैदा करती है, के नेतृत्व में सामाजिक अशांति को टालने के सभी संभव प्रयास कर रहे हैं। ■

1 *Khabar Online*, August 12, 2012.
2 *Fararu*, July 7, 2011.
3 *Fars News Agency*, July 5, 2011.
4 *Student News Agency* (Iran), October 24, 2011.
5 *Radio Farda*, November 20, 2009.
6 *Parsine*, July 6, 2011.
7 *Khabar Online*, October 1, 2011.
8 *Fars News Agency*, February 10, 2012.
9 *Tebyan*, July 10, 2012.
10 *Rasekhoon*, April 30, 2012.

> ईरान के हरित आन्दोलन के पीछे कौन है?

सिमिन फैडी, हम्बोल्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी

ग्रीन आन्दोलन की शक्ति को चित्रित करता हुआ द ग्रीन वेव नामक डॉक्यूमेन्ट्री का पोस्टर

सन् 2009 में राष्ट्रपति चुनाव में महमूद अहमदिनेजाद के मुख्य प्रतिद्वन्द्वी के समर्थकों द्वारा चुनाव परिणामों के विरोध के उपरान्त सड़कों पर प्रदर्शनों के उपरान्त ईरान में हरित आन्दोलन की शुरूआत हुई। इन आन्दोलनकर्त्ताओं ने स्वयं को एक जटिल व लोकप्रिय आन्दोलन के रूप में रूपान्तरित किया जो कि वास्तविक एवं आभासी दोनों क्षेत्रों में सक्रिय है। मध्यपूर्व क्षेत्र में हाल ही में पनपे अन्य विरोध प्रदर्शनों में सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के विषय में उभरी बहस की पृष्ठभूमि में, मैं उन लोगों के सामाजिक आधारों का परीक्षण करूँगा जो कि ईरान के हरित आन्दोलन में सक्रिय रहे हैं। मेरा तर्क हैं कि इस आन्दोलन के पीछे वह सामाजिक शक्ति है जिसने नया उभार लिया है मैं उसे "उत्तर इस्लामिक परिवेश" की संज्ञा दूंगा। सन् 2009 में ईरान में हरित आन्दोलन के संदर्भ में यह केन्द्रीय पक्ष था। ऐसी ही समान प्रकृति की शक्तियों ने एक साल बाद अरब क्षेत्र में आन्दोलनों के उभार हेतु सक्रियता प्रदर्शित की।

हरित आन्दोलन को उस राष्ट्रव्यापी आन्दोलन के संदर्भ में समझने की जरूरत हैं जिसे सुधार आन्दोलन कहा जाता है। यह आन्दोलन 1990 के दशक में अस्तित्व में आया। यह 1979 की क्रान्ति के उपरान्त अस्तित्व में आये इस्लामवाद एवं 1980 के दशक के अन्त में उभरे आर्थिक सुधारों पर प्रतिक्रिया

>>

के कारण प्रारम्भ हुआ। हरित आन्दोलन सुधार आन्दोलन की निरन्तरता के अंग एवं सुधार आन्दोलन की रूपरेखा के अन्तर्गत उपज के रूप में समझा जाना चाहिए।

क्रान्ति के तत्काल बाद इस्लामवाद ने सामाजिक संरचना के सभी पक्षों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। इसका अर्थ यह हुआ कि विद्यमान संस्थाओं को इस्लामिक कानून व नियम–प्रणाली के संदर्भों के साथ पुनः गठित किया गया जबकि ''नवीन'' इस्लामिक संस्थाओं की रचना अर्थतन्त्र, राजनीति व समाज के विभिन्न पक्षों को नियन्त्रित करने हेतु की गयी। ईराक से युद्ध की समाप्ति के उपरान्त एवं 1988 में अयातुल्ला खुमैनी की मृत्यु के उपरान्त बाजार अर्थव्यवस्था के विकास पिछले वर्षों में उभरी इस्लामिक राज्यीय नीतियों को प्रति सन्तुलित करना शुरू किया। इस संदर्भ के अन्तर्गत सुधार आन्दोलन उत्पन्न हुए जिन्होंने विविध–तामूलक सार्वजनिक क्षेत्रों के लिए आह्वान किये। पीयरे बुर्दियो का तर्क है कि मनुष्य भिन्न स्थितियों, जो कि नवीन होती है, के साथ आन्तरिक विशेषताओं के समुच्चय के आधार पर प्रतिक्रिया/प्रत्युत्तर करते अथवा देते हैं जिन्हें बुर्दियो ''हेबिटास'' की संज्ञा देते हैं। समान हैबिटास से सम्बद्ध लोग जिनके पास समान संसाधनों की उपलब्धता है और साथ ही वे समान प्रकृति का जीवनयापन करते हैं, एक ''सामाजिक परिवेश'' से स्वभावतः जुड़ जाते हैं। किसी अन्य स्थान पर मैंने उन पाँच मुख्य सामाजिक परिवेशों के उभार का विश्लेषण किया है जो 1990 के दशक के प्रारम्भ में सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन के आधार पर ईरान में उभरे। सामाजिक संरचनाओं में यह परिवर्तन इस्लामवाद एवं बाजार अर्थव्यवस्था के मध्य की अन्तः सम्बद्धता के कारण हुआ। मैं यहां पर उन मुख्य परिवेशों पर केन्द्रित होने का प्रयास करूँगा जो ''उत्तर–इस्लामिक परिवेश'' हैं क्योंकि ये परिवेश हरित आन्दोलन की उत्प्रेरक शक्ति थे।

उत्तर–इस्लामिक परिवेश में नगरीय मध्यवर्गीय निवासी सम्मिलित हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त हैं तथा इन्टरनेट की सुविधा को प्रयुक्त करते हैं। अकादमिक विशेषज्ञ, कलाकार, पत्रकार एवं विद्यार्थी इस श्रेणी में सम्मिलित हैं। इस्लामिक गणतन्त्र का प्रतिनिधित्व करने वाले ''पुराने'' विवेचनों एवं विचारों को ये श्रेणियाँ अस्वीकृत करती हैं। इन सामाजिक श्रेणियों/मध्यवर्ग के लोगों ने ''नवीन'' समाज के विचारों को अंगीकार किया है। अन्य परिवेशों की तुलना में इन लोगों के पास वैश्विक सांस्कृतिक पूंजी, अर्थात् विदेशी भाषा में दक्षता, इन्टरनेट की उपलब्धता एवं विदेश भ्रमण, का सर्वोच्च स्तर उपलब्ध है। इस परिवेश के कुछ सदस्य इस्लामीकरण प्रक्रिया के पुराने समर्थक हैं परन्तु वे भी राष्ट्र के विकास की नींव हेतु इस्लाम को अनिवार्य ताकत के रूप में अस्वीकृत करते हैं। इस परिवेश के साथ एक जुटता उत्पन्न करने में सामाजिक बाहुल्यता, नागरिकीय अधिकार, एवं उदारवादी लोकतन्त्र जैसे मुद्दों पर सामान्य सहमति एवं चेतना वृद्धि के पक्ष उत्तरदायी हैं ये पक्ष परिणाम के रूप में नवीन माँगों हेतु लोगों को प्रोत्साहित करते हैं।

सन् 1997 में मोहम्मद खतामी का निर्वाचन एवं सुधारों को उनका समर्थन सुधार आन्दोलन की बहुत बड़ी विजय थी लेकिन सन् 2005 में अहमदिनेजाद के राष्ट्रपति के पद पर निर्वाचन के कारण वे आर्थिक एवं लोकप्रिय मुद्दे थे जो परम्परागत मध्यवर्गीय परिवेश, श्रमिक वर्गीय परिवेश एवं ग्रामीण परिवेश की आकांक्षों के अनुरूप थे। आगे के वर्षों में अनवरत बेकारी, असंतुलित एवं मन्द आर्थिक वृद्धि ने इन समूहों में कुंठाओं को उत्पन्न किया। सन् 2009 तक आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ गयी। इसके साथ ही खतामी के दौर में हुए सुधार आन्दोलन से उभरी लोकतान्त्रिक उपलब्धियों को वापस लिया जा चुका है।

2009 के चुनाव के कुछ सप्ताहपूर्व परिवर्तन की हवा प्रारम्भ हुई जबकि सुधार समर्थक प्रत्याशी मुसावी को भारी समर्थन प्राप्त हुआ उनके समर्थक सड़कों पर उतर आये जिन्हें अहमदिनेजाद के नामांकन के विवादास्पद तरीकें से खारिज हो जाने के कारण और मजबूती मिली। यह विरोध हरित आन्दोलन के रूप में उभरा और व्यापक होते हुए बड़े स्तर के राजनीतिक मुद्दों के समकक्ष आया। और इस दायरे के बाहर भी चला गया।

उत्तर इस्लामिक परिवेश ने प्रारम्भिक चरण में सुधार आन्दोलन के भूल को आकार प्रदान किया। हालांकि इसका आगे विकास एवं विशेषतः हरित आन्दोलन का उभार विभिन्न सामाजिक समूहों जैसे परम्परागत मध्यवर्ग परिवेश एवं श्रमिक वर्ग परिवेश की सहभागिता से सम्भव हो सका। आर्थिक ह्रास एवं राजनीतिक चुनाव प्रक्रिया में मत व्यवहार के प्रति उदासीनता का मुकाबला करने वालों के लिए समर्थन प्रदान करने वाली संस्थाओं की कमी के कारण हरित आन्दोलन को शासन के राजनीतक विरोध का सामना करना पड़ा जो निरन्तर बढ़ता गया। परिणामस्वरूप यह एक बहुस्तरीय एवं विविधता मूलक आन्दोलन बन गया जिसमें उन पुरानी राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संरचनाओं में नाटकीय परिवर्तन उत्पन्न करने की क्षमता/सम्भावना है जिनकी ईरान में उपस्थिति हैं। ■

[1] Fadaee, S. (2011) "Global Expansion of Capitalism, Inequalities and Social Movements: The Iranian Case," in Boike Rehbein (ed.) *Globalization and Inequality in Emerging Societies*. Basingstoke: Palgrave-Macmillan.

> अतीत की उपयुक्तता : ईरान में हरित आन्दोलन

अब्बास वारिज काजमी, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका

चित्रः शाइगन FARS *संवाद एजेंसी*

सन् 2009 में ईरान में एक गैर–सामान्य/विशिष्ट सामाजिक आन्दोलन उभरा जिसे तब और अब भी ''हरित आन्दोलन''(द ग्रीन मूवमैण्ट) के नाम से जाना जाता है। यह एक पर्यावरणीय विरोध नही था। यह राष्ट्रपति चुनाव परिणामों के परिणाम स्वरूप उभरा और जिसमें युवाओं की अभिव्यक्ति एवं सुधार सम्बन्धी इच्छा तथा राष्ट्रीय राजनीतिक आशावादिता की सामूहिक लहर सम्मिलित थी। ईरान देश एवं बाहर के देशों में निवास कर रहे ईरानियों ने सड़कों पर भारी प्रदर्शन कर विधिक एवं राजनीतिक सुधारों की मांग की। कुछ लोग हरित आन्दोलन को धार्मिक आन्दोलन की विशेषताओं के अन्तर्गत पाते हैं। हालांकि इस आन्दोलन में धार्मिक प्रतीकों, धार्मिक महापुरूषों एवं धार्मिक शब्दावली का प्रयोग हुआ परन्तु ये सभी अवयव प्रारम्भिक धार्मिक महत्व के पक्षों से अलग होते गये जैसे जैसे प्रदर्शनकारियों ने इन्हें नवीन पारिभाषित संदर्भो एवं राजनीतिक परिवेश के अन्तर्गत प्रयुक्त किया। प्रतीकों एवं सांस्कारिकताओं की पुनः परिभाषा की इस प्रक्रिया को मिशेल डी सर्टियों[1] की टेक्टिक (नये अर्थ देने की इच्छा) की अवधारणा के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। सर्टियो की इस अवधारणा का अभिप्राय हैं कि यदि राज्य विरोध के लिए स्थान (स्पेस) देने से इन्कार कर दे तो जनता उन सभी स्थानो को, जो उसे उपलब्ध हैं, जाम कर दे। ईरान के संदर्भ में ये स्थान धर्म का परिवेश है।

राज्य की रणनीति का जनता के

> *इस्लामिक राज्य की केन्द्रीय संस्थाओं को स्वीकारते हुए ग्रीन आन्दोलन में अपनी स्वंय की ''ग्रीन शुक्रवारीय प्रार्थना'' की रचना की परन्तु स्त्रियों एवं पुरुषों के मध्य पृथक्करण के अपने एक पवित्र सिद्धान्त का उल्लंघन करते हुए*

क्रिया–प्रारूप से कोई मेल नहीं था। एक ऐसे देश में जहां धार्मिकता के क्षेत्र में राज्य स्वीकृत एवं संगठित सांस्कारिकताएं विद्यमान हो और जिनका क्षेत्र अत्याधिक व्यापक हो, ऐसे अन्य अनेक पक्ष–समय एवं क्षेत्र हो सकते हैं जिन्हें प्रभावित किया जा सकता है। अतः हरित आन्दोलन की धार्मिकता, अर्थात् ''हरा इस्लाम'' एक ऐसा सरल वैचारिक अवयव है जो नवीन सामाजिक आन्दोलन की विशेषता बनता है। एक व्यापक स्तर तक हरित आन्दोलन निम्न

>>

> *सांस्कृतिक पुर्नअभिप्रायता की युद्धनीति के एक अंग के रुप में ग्रीन आन्दोलन नें ''ग्रीन'' रंग के ऐतिहासिक अर्थ को अपना लिया है तथा उसका पुर्नराजनैतिकरण कर दिया है।*

वर्गीय समूहों का आन्दोलन था। तेहरान के मध्य वर्ग ने समय समय पर अपने आपको बड़े प्रभावी व आकर्षक ढ़ंग से स्वयं को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। अतः ईरान मे सामाजिक रूपान्तरण अनिवार्यतः उन विरोध प्रदर्शनों की पद्धतियों से जुड़ा है जिन्हें ईरान के मध्य वर्ग ने धर्म एवं सत्ता के साथ समझौते कर अपनाया है।

15 जून 2009 को तेहरान की मुख्य सड़कों पर ''मौन की अभिव्यक्ति'' छायी रही। मौन के इस छाये जाने के केवल तीन माह पूर्व चुनाव की संस्कृति ने सड़क के जीवन को रंग दिया था और उत्साह एवं आशा का संचार किया था। 2009 के चुनाव के पूर्व प्रतिदिन के जीवन में आशावादी राजनीति की उमंग व्याप्त थी। सड़कों पर पुलिस हस्तक्षेप के भय के बिना लोगों को एकत्रित होने की आदत पड़ गयी थी। कारों की हैडलाइट की रोशनी एवं हवा मे उठते हुए लोगों के हाथ आशा की अनुभूति को व्यक्त करते थे। 15 जून को, चुनाव के बाद, मौन प्रदर्शन ईरान के हरित आन्दोलन के भविष्य का ''परिवर्तन बिन्दु'' बन कर उभरा। सैंकड़ों हजारों लोगों ने आन्दोलन कर्त्ता के रूप में आजादी स्कवायर पर विरोध प्रदर्शन मौन अभिव्यक्ति के रूप में किया। आन्दोलन के हाथ हवा में लहरा रहे थे पर वे चुनाव पूर्ण के उत्साह के न होकर विरोध के लिये थे। यह विरोध प्रदर्शन जनता के गुस्से का प्रदर्शन था क्योंकि सरकार ने जनसभाओं पर रोक लगाने एवं राष्ट्रपति चुनाव संघर्ष के उपरान्त एकत्रित होने पर रोक लगाने का निर्णय लिया था। अपने पूर्ववर्ती विरोधियों व आन्दोलन कारियों जिन्होंने 1979 में शाह को हटाने हेतु क्रान्ति का नेतृत्व किया था, के विपरीत हरित आन्दोलन में सहभागिता करने वाले लोग अपनी दिन प्रतिदिन की क्रियाओं के लिए/दैनिक जीवनचर्या हेतु घर वापस नहीं गये और आन्दोलन को सरकार अथवा राज्य की जिम्मेदारी पर छोड़ दिया। ईरानी मध्यवर्गीय युवा ने अपने आपको व्यस्त रखने के तरीके निकाल लिये और साथ ही अपनी माँगों हेतु संघर्ष को जारी रखा। यद्यपि सरकार ने हरित आन्दोलनकारियों पर अपना दमन व प्रहार जारी रखा पर आन्दोलन में सहभागी लोगों ने विरोध करने के नवाचारी उपागमों द्वारा आन्दोलन की निरन्तरता बनाये रखी।

ईरान की कठोर एवं असहिष्णु राजनीतिक संरचना के अन्तर्गत सामाजिक आन्दोलन कैसे सम्भव हैं? मेरा विश्वास है कि डी सर्टियो की ''टेक्टिक एवं स्ट्रेटेजी'' (नये अर्थ को देने की इच्छा एवं रणनीति) की अवधारणायें इन सम्भावनाओं का विवेचन कर सकती हैं। इस संदर्भ प्रारूप (फ्रेमवर्क) के अन्तर्गत समाजों में प्रतिरोध, जो कि अत्यन्त जटिल शक्ति संरचना एवं अतार्किक राज्य की उपस्थिति के साथ है, अदृश्य, विशिष्ट तरीकों (टैक्टिकल) एवं छिपी हुई व्यवहार प्रणालियों द्वारा होता है। डी सर्टियो के विचारों का अनुकरण करते हुए मैं आपको बताउँगा कि किस प्रकार हरित आन्दोलन ने विशिष्ट स्थलों एवं प्रतीकों को पुनः पारिभाषित करने हेतु प्रबन्धन किया।

> हरे रंग की पुनः राजनीतिकी

हम आन्दोलन के नाम एवं इसके प्रतीकात्मक रंग–हरा से अपने विश्लेषण का प्रारम्भ कर सकते हैं। राजनीतिक दृष्टि से संकटकारी महीनों, जो राष्ट्रपति चुनाव के उपरान्त के थे, में हरा रंग विरोध प्रदर्शन एवं विमति का प्रतीक बना जिसे ईरान के एतिहासिक संदर्भों के अन्तर्गत समझा जाना चाहिए जहाँ रंग सांस्कृतिक व धार्मिक आधारों/जड़ों के साथ बड़ी गहराई तक जुड़े हैं। एक तरफ हरे रंग का धार्मिक अर्थ है। शिया मुसलमानों में यह मोहम्मद साहब एवं उनके परिवार के संदर्भ में धार्मिक महत्व से जुड़ता है। पूर्व में भी हरे रंग की पवित्र प्रकृति विरोध का प्रतिनिधित्व करती रही है विशेषतः शिया मुसलमानों के द्वारा प्रभुत्वशाली धर्म (सुन्नी) का विरोध इसके साथ जुड़ा है। शासक दलों की सक्रिय धमकियों के बीच शिया संस्कृति का विकास हुआ। इस स्थिति ने शिया मुसलमानों को गोपनीय स्थानों पर कार्य करते हुए प्रतिरोध के जाल को निर्मित करने हेतु बाध्य किया। अनेक शताब्दियों तक शिया मुस्लिमों ने हरे रंग का प्रदर्शन कर एवं उसका प्रयोग कर अपने विरोध को अभिव्यक्त किया उदाहरण के लिए अपने शहीद साथियों के लिए शोक व्यक्त करने एवं उसकी सांस्कारिकता हेतु। 16वीं शताब्दी से जब शिया शक्तिशाली हुए हरा रंग ईरान की सांस्कृतिक प्रणाली का पवित्र भाग बन गया। अतः जून 2009 के पूर्व हरा रंग सदैव राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा इसके उपरान्त नगरीय मध्यवर्ग के नेतृत्व ने इसे धार्मिक प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में बदल दिया एवं सत्ता के विरूद्ध राजनीतिक प्रदर्शन/विरोध में यह प्रतीक गौरव की अभिव्यक्ति बना। सन् 2009 के राष्ट्रपति चुनाव के पूर्व के अनेक महिनों पहले तेहरान की सड़कें, कारें एवं लोगों ने स्वयं को हरे रंग में ढाल लिया। चारों ओर हरा रंग दृष्टिगोचर होता था। यहाँ तक कि ऑन लाइन पर ब्लाग लिखने वाले ईरानियों ने आन्दोलन को समर्थन देने हेतु अपनी वेबसाइट्स को हरे रंग के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इसकी अनवरत उपस्थिति ने नगर के जीवन को उत्साह से भर दिया, नागरिकों ने ताजगी महसूस की और सम्भावित राजनीतिक सुधार के प्रति उत्साहित किया। हरे कपड़े, कलाई पर हरे बैण्ड, जिन्हें कभी जादुई प्रतीकों या वस्तुओं के रूप में बुरी या अपशगुनी बीमारी के समय बचाव के लिए या किसी चमत्कार के लिये प्रयुक्त किया जाता था, तेहरान के मध्यवर्गीय युवा के द्वारा पहनने वाली पोशाक का आवश्यक हिस्सा बन गये। हरे रंग को अपनाना अब शारीरिक बीमारियों को दूर करने वाले प्रतीक प्रतिनिधित्व न रह कर ज्यादा खतरनाक बीमारियों को दूर करने का अर्थात् ईरान की राजनीतिक एवं सामाजिक बीमारियों को दूर कर स्वास्थ्य को पुर्नस्थापित करने का प्रतीक बन गया। इस मुकाम पर सामूहिक जुड़ाव का आकर्षण एवं हरा रंग दोनों विरोध के नवीन स्पेस क्षेत्र बन गया।

> पुराने नारों की अग्रणता

हरित आन्दोलन की रणनीति में यह पक्ष भी था कि 1979 की क्रान्ति के दौरान तेहरान की सड़कों पर गूंजे राजनीतिक नारों को उपयोग में लाया जाय। ये नारे राज्य की अवहेलना का प्रतिनिधित्व करते थे । 1979 की क्रान्ति का

>>

अनुसरण करते हुए ईरानी इस्लामिक गणतन्त्र की नवीन सरकार ने कार्यालयी विचारधारा के अंग के रूप में आन्दोलनकारियों द्वारा प्रयुक्त नारों एवं विचारों को अपनाया। समय के साथ साथ अधिकांश ईरानी नागरिक उन विचारों को भूल गये क्योंकि राज्य आन्दोलन से पनपे मौलिक जीवन दर्शन का अब प्रतिनिधित्व नहीं करता। लेकिन सन् 2009 में आन्दोलनकारियों ने उन नारों को पुनः जीवित कर दिया लेकिन उन्हें अर्थात् 1979 की सक्रियता को वर्तमान राजसत्ता के प्रभावों एवं राज्य के एजेण्डा से पृथक रखा। मध्य वर्ग के युवा ईरानियों ने अपने हाथों में हरे आर्मबैण्ड पहन कर सड़कों पर विशाल प्रदर्शन किये, 1979 के नारों को पुनः प्रयुक्त किया और हरा आर्मबैण्ड आशा का द्योतक हो गया। ये नारे एवं भावनाएं अर्नेस्ट् ब्लाच के उस विचार का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसमें अतीत के दौर में पूरी न हो सकी आकांक्षों के रेखांकन की चर्चा है, यहॉं अतीत का सम्बन्ध 1979 की क्रान्ति से है। ये पूरी न हो सकी आकांक्षाएं ''भविष्य में आशावादी सम्भावनाओं'' को उभारती हैं। अतः हरित आन्दोलन ने 1979 की क्रान्ति के लोकप्रिय क्रान्तिकारी नारे ''स्वतन्त्रता, स्वाधीनता एवं इस्लामिक गणतन्त्र'' को पुनः स्थापित किया जिसे राज्य निर्देशित मीडिया ने अपरिवर्तनीय अभिव्यक्ति का रूप दे दिया था और अर्थहीन नारे में रूपान्तरित कर दिया था लेकिन अब इसी नारे को राज्य के विरूद्ध लोग लगा रहे थे।

हालांकि आन्दोनकारियों के नारे इस्लामिक गणतन्त्र के आयने के रूप में व्यक्त हो रहे थे पर वे अपने मौलिक अर्थों को खो चुके थे और एक नवीनतम अर्थ को स्थापित कर रहे थे कि 1979 की क्रान्ति अभी एक अपूर्ण अध्याय है। एक बार भूली जा चुकी राजनीति ''अल्लाह ओ अकबर'' और ''या हुसैन मोरे हुसैन'' के रूप में वापसी ले रही थी। सन् 1979 का एक पुराना नारा एक सैनिक नारा बन गया था। ''अल्लाह ओ अकबर'' अर्थात् ''अल्लाह महान है'' के नारे को ईरानी सैनिकों ने अपने शत्रु पर आक्रमण करते समय लगाया था। यह नारा 2009 में चुनाव के उपरान्त विरोध प्रदर्शनों में पुनः राजनीतिक स्वरूप प्राप्त कर गया। ''या हुसैन, मीर हुसैन'' का नारा जो कि मृत शिया धार्मिक नेता इमाम हुसैन के लिए लगाया जाता था कि वे मीर हुसैन की सहायता हेतु आवें, को हरित आन्दोलन के नायक एवं विपक्षी नेता हुसैन मौसवी की सहायता की अपील हेतु लगाया जाने लगा। इस तरह राज्य संचालित धर्म हेतु प्रयुक्त होने वाले नारे विपक्षियों के राजनीतिक नारों का आकार ग्रहण कर सके।

> स्मृतियों की राजनीति

'स्पेस' एवं स्थान के विभिन्न उपयोग जो हरित आन्दोलन में हुए का उद्‌भव शिया संस्कृति से हुआ। कभी अल्पमत धार्मिक सम्प्रदाय के रूप में रही शिया संस्कृति की भूमिका में ये तत्व विद्यमान रहे हैं। असुरा दिन (680 ई0) को करबला में धार्मिक नेता इमाम हुसैन की सरकार द्वारा हत्या के उपरान्त शिया मुसलमानों ने ''प्रत्येक दिन एवं स्थान असुरा एवं करबला है'' के नारे को अपना लिया। शिया मुसलमानों ने इस नारे का आन्तरीकरण कर लिया और यह शिया संस्कृति का भाग बन गया। इस प्रद्यटना को बार बार बताना एवं इस कृत्य को याद रखने की विरासत को आज भी निरन्तरता प्राप्त है। हालांकि शुरूआती घटनायें किसी भी रूप में शिया मुसलमानों की विजय के रूप में नहीं थी, पर इस प्रद्यटना को बार बार बताने से एक सफलता मिली। असुरा दिन ईरान में आधुनिक दिन का एक संस्कार बन गया। प्रारम्भिक शिया मुसलमानों की तरह हरित आन्दोलन से जुड़े आन्दोलनकारियों ने राष्ट्रीय अवकाशों को विद्यार्थी दिवास, फिलीस्तीनी दिन के रूप में मनाना शुरू किया साथ ही राष्ट्रीय व धार्मिक प्रद्यटनाओं को विरोध एवं प्रतिरोध को संगठित करने के अवसर के रूप में प्रयुक्त करना शुरू आया। इन प्रद्यटनाओं ने गैर सरकारी अवकाशों जैसे ग्रीन फ्राइडे प्रेयर (हरा शुक्रवार प्रार्थना) एवं ग्रीन माउण्टेन एक्सकर्सन (हरा पहाड़ यात्रा) को जन्म दिया। इन अवकाशों को सरकार के विरूद्ध चेतना निर्माण के अन्य अवसरों के रूप में प्रयुक्त किया गया।

> छोटे स्तर के संचार माध्यम एवं राजनीति

''आप संचार माध्यम है'' का नारा हरित आन्दोलन में शक्तिशाली नारा बन गया। सरकार को यह संदेश मिल गया कि संचार माध्यम एक शक्तिशाली उपकरण है जिसे विमति संचारित करने व अभिव्यक्त करने हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है। विरोधी नेता मीर हुसैन मौसवी ने घोषणा की, ''जब सरकार एक द्वार बन्द करे तो हमें वैकल्पिक खिड़की खोलने पर ध्यान देना चाहिए यदि एक समाचार पत्र बन्द होता है तो विधिक प्रावधानों के अन्तर्गत दूसरा समाचार पत्र प्रकाशित करना चाहिए। प्रत्येक ब्लाग यदि बन्द करने का प्रयास हो तो अनेक वैकल्पिक ब्लाग सक्रिय किये जाने चाहिए''।[2]

जब अनेक स्वतन्त्र समाचार पत्र एवं वेब साइट्स बन्द की जा रही थी ई–मेल एवं टैक्स्ट संदेश प्रणाली को लोगों को यह सूचित करने के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा कि विरोध प्रदर्शन कब करना है। फेस बुक जैसा सामाजिक मीडिया भी संवाद एवं जानकारी स्त्रोत का हथियार बना साथ ही बी.बी.सी. एवं अन्य परम्परागत संचार/संवाद संगठनों ने प्रत्येक घटना को लोगों को पहुँचाने में सक्रियता प्रदर्शित की। आन्दोलनकारी तत्काल नागरिक पत्रकार एवं अन्तर्वस्तु को प्रेषित करने वाले सजग संवाहक बन गये। उन्होंने अपने कैमरा एवं फोन्स को समाचार एवं सूचनाओं को सहभागी बनाने एवं प्रेषित करने के लिये प्रयुक्त किया। परिणामस्वरूप विदेशी मीडिया अभिकरणों को घटनाओं को प्रसारित करने एवं उन्हें 'लाइव' (जीवन्त) स्वरूपों में दिखाने का अवसर मिला।

> शक्ति के सीमा क्षेत्र एवं स्मृति/यादों के कृत्य

हरित आन्दोलन ने अपनी कार्य प्रणाली के लिए दिशा सूचक उत्तर धार्मिक आन्दोलनों से प्राप्त किये। हालांकि इस आन्दोलन ने धार्मिक महापुरूषों/ रोल मॉडल्स एवं धार्मिक शब्दावली को प्रयुक किया परन्तु ये पक्ष अपने धार्मिक संदर्भों से स्वतन्त्र हो गये और एक नवीन प्रतिनिधान के रूप में ये उभरे। हमें एक पक्ष को सदैव अपनी चेतना का भाग बनाये रखना चाहिए कि राज्य की शक्तिशाली संरचनाएं हमेशा प्रभुत्व की पुनः प्राप्ति करती रहती हैं। प्रतिरोध के प्रयास सामान्यतः भुला दिये जाते हैं जब राज्य उन 'स्पेसेज' (क्षेत्रों) एवं अवसरों पर पुनः नियन्त्रण स्थापित कर लेता है और प्रतिरोध के अवयव हाशिये पर ला दिये जाते हैं। चुनावों के उपरान्त के विरोध प्रदर्शनों के पश्चात्, प्रतिरोध सम्बन्धी क्रियाओं को रोक दिया गया सैल फोन्स को काट दिया गया, टैक्स्ट संदेशों पर निगरानी रखी जाने लगी एवं हरित आन्दोलन के प्रतीकों को धारण करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। तेहरान में जनता का जमाव अथवा नागरिकों की भीड़ तेहरान में कम होती गयी एवं जमावों के बीच दूरी बढ़ती गयी। आन्दोलन प्रारम्भ होने के 6 माह उपरान्त विरोध के सभी प्रतीक सड़कों से हटा लिये गये एवं जनता सामान्य जीवन की तरफ वापस लौट गयी। ठीक उसी समय छिपी हुई (भूमिगत होकर) गतिविधियॉं उभरी व दीवारों पर लेखन उभर कर आया। सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह हुआ कि लोगों को याद करने की सामूहिक उपस्थिति की क्रियाएं तीव्रता से उभरी। यह सब अब भी जारी है और विरोध प्रदर्शन को विस्तार देने का माध्यम बन सकता है। एक नवीन भूमिगत संस्कृति ने जन्म लिया है जिसमें व्यक्ति/लोग कहानियाँ सुनाने वाले बन गये हैं।[3] ■

[1] De Certeau, M. (1984) *The Practice of Everyday Life*. Berkeley: University of California Press.

[2] http://www.irangreenvoice.com/article/2010/apr/18/2594

[3] I would like to thank Ali Sabbagi and Halima Adam for their excellent editing of the English version of this article.

> मिस्त्र की प्रति–क्रान्ति की हिंसा

मोना अबाजा, अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ कैरो, मिस्र

शहीद खालिद सईद जिसे कि मुबारक शासन के पुलिस अफसरों ने अल्कजेन्ड्रिया में मार डाला था का चित्र। सईद की हत्या जनवरी 2011 की क्रान्ति को प्रेरित करने वाली घटनाओं में सबसे प्रमुख थी। सईद का चकनाचूर एवं उत्पीडित चेहरा अनेक रुपों एवं चित्रों में दोहराया गया है।
चित्र मोना अबाजा द्वारा।

मिस्र के नागरिकों की एक बड़ी जनसंख्या आश्चर्यचकित हैं कि वे दिन प्रतिदिन की दुर्भाग्य जनक हिंसा, जिसे मुस्लिम ब्रदरहुड के द्वारा गहन कर दिया गया है, के दौर में अपना अस्तित्व कैसे बनाये हुए हैं। जनवरी 2011 से लगातार पिछले दो वर्ष से इस हिंसा ने अनेक लोगों को भिन्न तरीके से सोचने पर मजबूर किया है। अनेक लोग इस विचार से असहमत हैं कि मुस्लिम ब्रदरहुड की वर्तमान सत्ता, जो कि मुबारक वादियों के भृष्ट आचरण को पुनः जीवित कर रही है, जो कि डाढ़ियों के साथ हैं, की तुलना में सैन्य शासन (मिलिट्री जुन्टा) को सहन किया जा सकता है। इस सत्ता को विभिन्न स्थानों पर जहाँ चर्चा होती हैं मुस्लिम फासीवाद के रूप में व्यक्त किया जाता है अनेक आलेखों में इसका उल्लेख है, विभिन्न चर्चाओं, टॉक शो में इस पर बहस होती है जो हमें यह याद दिलाती है कि यहाँ रिर्पोटर्स हैं और यूरोपीय इतिहास के साथ अनेक समानतायें हैं जिन

>>

पर विमर्श की आवश्यकता है साथ ही उस पर प्रत्यावर्तन सम्भव होना चाहिए।

यह कहा जा सकता है कि चाहे मिलिट्री जुन्टा हो अथवा इस्लामवादी अथवा दोनों ही दल किसी समझौतावादी श्रम विभाजन के आधार पर शासन करें, ब्रदरहुड नागरिकीय जीवन में सामने रहे एवं सेना पीछे रहे, इन दोनों समूहों के मध्य चाहें उच्च स्तर के तनाव रहें, या फिर सिनाई क्षेत्र को लेकर सैनिक बलों एवं ब्रदरहुड के मध्य अन्तर्विरोधी राजनीति खुले युद्ध का रूप ले ले क्योंकि ब्रदरहुड अति–राष्ट्रवादी आकांक्षाओं से जुड़ा है जो कि सैनिक बलों के राष्ट्रीय हितों से टकराता है। कहीं न कहीं हाल के अवलोकन यह संकेत देते हैं कि हमारे चिन्तन से कहीं पहले ही सैन्य तख्ता पलट की प्रद्यटना उपस्थित हो सकती है।

इन दोनों ही स्थितियों में (चाहे कोई भी स्थिति उभर कर आये) मिस्र पिछले महीनों से व्यवस्थित हत्या की क्रूर घटनाओं, अपहरण, अपमान, महत्वपूर्ण साधनों की समाप्ति अर्थात् उन्हें नष्ट करना, खींच कर बाहर लाना, मृत्यु होने तक लगातार पिटाई एवं एक बार फिर विरोधी अथवा आन्दोलन कारियों को सउद्देश्य सामूहिक रूप से अत्याचार का शिकार बनाना जैसी घटनाएं मिस्र नागरिक देख रहे हैं अथवा उन्हें महसूस कर रहे हैं। दूसरी ओर पुलिस बल की अनुपस्थिति में जिसका दायित्व नागरिकों को अपराधों एवं लूटपाट के विरूद्ध संरक्षण देना था, ''लोक प्रिय न्याय'' को स्थापित कर दिया गया है। गन्दी बस्तियों में लोग सामूहिक रूप से एकत्रित होकर किसी की हत्या कर अपना बदला ले रहे है साथ ही लोगों को जिन्दा जला दिया जाता है, ठग एवं चोरों को पीट पीट कर मारा जाता है। पुलिस स्टेशन्स/ पुलिस थानों पर अनायास आक्रमणों की चर्चा ही नहीं की जाती।

यह लघु आलेख इस उद्देश्य के साथ प्रस्तुत किया गया हैं कि विमति की नवीन जन संस्कृति हेतु किये जा रहे संघर्ष में शरीर के स्थान के विषय पर पुनर्विचार किया जावे। जनवरी 2013 में पोर्ट सईद में मोरसी शासन द्वारा कर्फ्यू लगाये जाने के उपरान्त हुई प्रतिक्रिया जिसमें समूचे शहर ने कर्फ्यू की अवहेलना करते हुए शासन के निर्णय का सड़कों पर उतर कर विरोध किया एवं व्यापक स्तर पर भारी संख्या में उमड़ी भीड़ के सामने फुटबाल खेल एवं अन्य सार्वजनिक क्रियाकलापों/उत्सव के बड़े आयोजन किये। मैं जब इस लेख को लिख रही हूँ, मार्च के प्रारम्भ में नागरिकों द्वारा अवज्ञा आन्दोलन पोर्ट सईद के समूचे नगर में जारी है और इसे अधिक प्रभावी एवं व्यापक जनसमर्थन के साथ अवलोकित किया जा सकता है।

मोरसी के सत्ता में आने के उपरान्त मिस्त्र में हत्याओं में तीव्र वृद्धि, अपहरण एवं क्रान्तिकारी विरोध को पूर्णतया अलग करने के प्रयासों की तीव्रता के तत्व उभरे हैं। तब से और अब तो यह पहले से कहीं ज्यादा हैं, निरन्तर नगरीय युद्धों एवं झड़पों में जनता हिंसा का प्रदर्शन कर रही है। पुलिस बल एवं आन्दोलनकारियों के मध्य टकराव तेज हुए है। ये घटनायें इतनी तेज हुई हैं कि स्थिति चिन्ताजनक हो गयी है। मिस्त्र की सड़कों पर अब तो यह मजाक सुनाई देता हैं कि बाहर निकाला गया तानाशाह मुबारक एक दरियादिल आदमी के रूप में देखा जायेगा यदि उसकी तुलना इस्लामवादियों के शासन में हो रहे मानवाधिकार उल्लघंनों के क्रूर एवं न सुने जाने वाले स्वरूपों से की जाए। मोरसी के राष्ट्रपति बने लगभग आठ माह हो गये हैं, इन्होंने समूचे मिस्त्र में सैकड़ों लोगों को शहीद कर दिया है और यह संख्या बढ़ रही है। पोर्ट सईद, एलेक्जेण्डरिया, इस्माइलिया, स्वेज, इन रफह, मंसूरा, महाला–अल–कुब्रा, नगरों में एवं अन्य राज्यों से जुड़े नगरों में, हम इसमें कायरों, ताहिर चौक, सन् 2012 में मुहम्मद स्ट्रीट ॥ पर झगड़े एवं राष्ट्रपति स्थल पर घटनाओं को गिन नहीं रहे हैं, तीव्र हिंसा व आन्दोलन का दौर जारी है।1 25 जनवरी 2013 से ही अब तक पोर्ट सईद में ही 53 लोगों को मारा जा चुका है।2

आज अनेक लोग यह प्रश्न करते हैं कि मुबारक के शासन के दौर में अनेक घटनायें क्या पुलिस उत्पीड़न एवं क्रूरता के द्योतक नहीं थे? एलेक्जेण्डरिया में खालिद सईद की हत्या को फिर से याद करें जिससे क्रान्ति की शुरूआत हुई थी। साथ ही पुलिस थानों में पूर्व में भी पुलिस क्रूरता की अनेक घटनायें घटी हैं। क्या ये घटनायें वे मुख्य कारक नहीं थीं जिनसे सन् 2011 की जनवरी में क्रान्ति प्रारम्भ हुई? तो अब ऐसा नया क्या हैं? सम्भवतया मुबारक के समय की तुलना में जो बदलाव आया है वह मनुष्य की शिष्टता केन्द्रित एवं शालीनता केन्द्रित मूल्य प्रणाली से जुड़ा हैं। आज हम पा रहे हैं कि जनता के आन्दोलन में मानवीय शालीनता का पुनरावृत्तिक एवं व्यवस्थित उल्लंघन हो रहा है। यह पक्ष इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि क्रान्ति प्रारम्भ करने का मुख्य उद्देश्य मानवीय शालीनता को पुनः स्थापित करना था। सामूहिकता का यह अपमान उस शासन के द्वारा किया जा रहा है जो क्रान्ति को समर्थन व संरक्षण देने का दावा करता है। जनता के द्वारा क्रूरता का प्रदर्शन निश्चय ही एक शक्तिशाली प्रभाव है। मीडिया धन्यवाद का पात्र हैं क्योंकि वह इन घटनाओं का तत्काल प्रसारण कर रहा है। यह शायद इसलिये किया जा रहा है कि इस्लामवादी, जिन्हें मुबारक के शासन में प्रताड़ित किया गया था, क्रान्ति की प्रणाली को छीन कर इस बात के लिए आमादा हैं कि ''ब्रदरहुड अनुयाइयों'' की राजसत्ता के लिए अपने समर्थकों को मुख्य पदों पर धारित किया जाए ताकि धार्मिक राज्य के दूरगामी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकें। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। हालांकि वे लोग समान प्रकृति के संवाद (डिसकोर्स) को पुनः केन्द्र में लाना चाहते हैं साथ ही जिन्होंने अर्थात् पुरानी सत्ता ने जिस प्रकार उनका दमन किया एवं क्षति पहुँचाई की पद्धति एवं कार्यप्रणाली को अपनाना चाहते हैं। अन्तर केवल इतना है कि सड़कों पर वे पहले वाली सत्ता की तुलना मे ज्यादा क्रूर हैं।

पिछले महिनों में सामूहिक भ्रम की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। ब्रदरहुड की सतही नकलबाती एवं दिवालियापन वाली रिपोर्ट के विरूद्ध जन आक्रोश यदि नहीं हैं तो प्रति–क्रान्ति की रचना की एक अत्यन्त रूचिकर एकल अध्ययन प्रणाली से विवेचना की जा सकती है। शायद इसलिए मिस्त्र के मनोचिकित्सकों ने मुबारक समर्थकों के बाद के दौर में उत्पन्न हो रहे आक्रामक तत्वों को बताना शुरू किया है जो कि इस्लामिक नैतिकता एवं शुचिता की चर्चा करते हैं पर जनता के बीच में बहुत अपमानजनक शारीरिक क्रियाओं के लिए लोगों को भड़काते हैं जैसे पुरूष एवं स्त्रियों के कपड़े फाड़ कर नंगा कर देना, खींचना, पीटना, लातें मारना, शरीर व चेहरा बिगाड़ देना या विरोधियों को जान से मार देना। जिस तरह से इस्लामिक मिलीशिया (आक्रमण –कारी) क्रान्तिकारियों की युवा पीढ़ी के साथ बदले की कार्यवाही कर रहे हैं और इस हेतु अनेक स्थानों पर वे युवा पुरूषों एवं युवा महिलाओं के साथ क्रूरता पूर्ण व्यवहार कर रहे हैं और उनके शरीर के अंग भंग कर रहे हैं। इन घटनाओं को देख कर आश्चर्य होता हैं कि क्या ये सभी कृत्य दुःखवादी प्रवृत्तियों जो कि शरीर के प्रति है के परिणाम हैं या निरंकुशवादी प्रति–संस्कृति के एक लम्बे दौर से परिणाम के रूप में उभरी सामूहिक अव्यवस्था के कारण है। इस प्रति–संस्कृति को निरंकुशतावादी सत्ता संस्थानों ने उभारा था।

मुस्लिम ब्रदर्स अपने सशस्त्र साथियों को भेजते थे और शान्तिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे

>>

ताहिर चौक के मध्य में शहीदों की तस्वीरों को दर्शाता हुआ क्रान्ति का खुला संग्रहालय। हैलियोपॉलिस में राष्ट्रपति निवास पर भी इस संग्रहालय को दोहराया गया। ताहिर पर पुलिय द्वारा अनेक बार छापे मारे गये तथा संग्रहालय गायब हो गया।
चित्र मोना अबाजा द्वारा।

आन्दोलनकारियों को राष्ट्रपति स्थल पर मरवा देते थे। इन्होंने क्रूर व्यवहार/प्रताड़ना केन्द्र बना रखे थे। हम गुणात्मकता मूलक पक्ष लिए हिंसा के नवीन स्तरों के साक्षी बन गये थे। इस हिंसा की जनता के मध्य अभिव्यक्ति हो रही थी ताकि आन्दोलन कारियों के मध्य भय की लहर दौड़ सके, यह एक सुनियोजित प्रारूप था। 5 दिसम्बर को एक घटना हुई तब राष्ट्रपति की सुरक्षा का उल्लेख कर मिलीशिया/सशस्त्र लोगों ने खुले आम हत्या कर भय का माहौल उत्पन्न किया। मीडिया पर इसका जीवन्त प्रसारण दिल दहलाने वाला था साथ ही यह तत्काल हत्याओं को दूर दराज के क्षेत्रों तक प्रसारित कर देता था।

मीडिया पर जीवन्त प्रसारण द्वारा यह देखा जा सकता था कि आन्दोलनकारियों को किस प्रकार चुन चुन कर अंग भंग की क्रूरता का शिकार बनाया जा रहा था। रात में अनेक सेटेलाइट चैनल पर वे भिन्न–भिन्न छवियाँ/तस्वीरें देखी जा सकती थी जिसमें सशस्त्र लोग आन्दोलनकारियों पर हथियारों का प्रयोग कर रहे थे। सी बी सी + 2 चैनल ने पूरी रात यह दिखाया कि किस प्रकार आन्तरिक सुरक्षा बल भीड में से युवाओं का अपहरण कर रहे थे एवं उन्हें पीट पीट कर मार रहे थे। ये तस्वीरें दिल दहलाने वाली थीं। इसके बावजूद बहुत सारे लोग पूछ रहे थे कि इन सब में नया क्या हैं? एक बार फिर हिंसा फिर उसी तरह उभरी है जैसी मुबारक के शासन में थी। ■

[1] *Al-Tahrir*, February 16, 2013, p. 9.
[2] The Egyptian Initiative for Human Rights, February 19, 2013, http://eipr.org/pressrelease/2013/02/19/1635
[3] Tadros M. "Signs of Islamist Fascism in Egypt?", December 8, 2012, http://www.opendemocracy.net/5050/mariz-tadros/signs-of-islamist-fascism-in-egypt, retrieved February, 14, 2013.
[4] *Al-Tahrir*, February, 12, 2013.
[5] *Al-Tahrir*, February, 12, 2013.
[6] *Al-Tahrir*, February, 14, 2013.
[7] Salem M. "The Horror", *Daily News*, February 11, 2013, http://www.dailynewsegypt.com/2013/02/11/the-horror/
[8] Ali N. *al-Shuruq*, February, 15, 2013.

> भारतीय विश्वविद्यालय कैसे लाभ अर्जित करने वाली मशीन बन जाते हैं?

सतेन्द्र कुमार, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, दिल्ली, भारत

उत्तर प्रदेश में प्रमाण पत्रों की मान्यता का धन्धा करने वाले विज्ञापन

दुनिया भर में विश्वविद्यालय विनियमन और वस्तुकरण के दोहरे दबाब का सामना कर रहे हैं और भारत के विश्वविद्यालय भी इसके अपवाह नहीं है। वैश्विक रूझानों और विश्व बैंक के आदेशों को मानते हुए 1990 के उत्तरार्ध में भारत सरकार ने यह घोषणा की कि उच्च शिक्षण संस्थानों को शुल्क स्तर बढ़ा कर, निजी दान को प्रोत्साहित और परामर्श एवं अन्य गतिविधियॉ द्वारा अपने संसाधनों में वृद्धि करने की कोशिश करनी चाहिए। सरकार ने इस निर्णय को सार्वजनिक खर्चे पर दबाब को कम करने के लिये आवश्यक मान उचित माना। प्रधानमंत्री की व्यापार और उद्योग परिषद ने अप्रैल 2000 में श्री मुकेश अंबानी और श्री कुमारमंगलम के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के सुझाव देने हेतु एक समिति का गठन किया। इस समिति ने शिक्षा को मुनाफे वाला बाजार माना और यह सुझाव दिया कि सरकार को स्वयं को प्राथमिक शिक्षा तक ही सीमित रखना चाहिए और उच्च शिक्षा को निजी क्षेत्र के लिए छोड़ देना चाहिए। दोनों उद्योगपतियों ने उच्च शिक्षा के पूर्ण वस्तुकरण की पैरवी की। आने वाले वर्षों में उच्च शिक्षा के बजटीय आवंटन में कमी आई और नियमित शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कार्य हेतु नये कर्मचारियों की भर्ती कमोबेश रूक गई। अब मैं यह चर्चा करना चाहूँगा कि इस वस्तुकरण ने किस प्रकार मेरठ, उत्तरप्रदेश के सरकारी विश्वविद्यालय का प्रभावी विखण्डन किया और इसकी जगह निजी शिक्षा की विकृत व्यवस्था का प्रतिस्थापन किया है।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (CCSU), जिसका नाम इस क्षेत्र के एक किसान नेता और पूर्व प्रधानमंत्री पर रखा गया है, की स्थापना 1966 में हुई थी। विश्वविद्यालय कला और विज्ञान में एम.ए., एम.फिल और पीएच.डी. पाठ्यक्रम चलाता है। इसके अतिरिक्त कला, विज्ञान, और प्रबंधन के 55 महाविद्यालय (स्नातक और स्नात्तकोत्तर स्तर के) इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे।

यद्यपि विश्वविद्यालय में निम्न गुणवत्ता का शिक्षण, अत्यधिक भरी हुई कक्षाऐं और बुनियादी सेवाओं का अभाव था फिर भी यह विभिन्न वर्गों और जाति की पृष्ठभूमि वाले लोगों को अनेक क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का सराहनीय कार्य कर रहा था। हॉलाकि, 2000 के दशक के शुरूआत में चीजें नाटकीय रूप से बदल गई जब सरकारी नीति में परिवर्तन, जिसमें कठोर बजटीय कटौती सम्मिलित थी, के अनुरूप विश्वविद्यालय ने स्व–वित्त पोषित पाठ्यक्रमों को चलाने के लिए प्रमाण पत्र और अन्य प्रकार की स्वीकृतियॉ दे कर अपने संसाधनों में वृद्धि की। ये पाठ्यक्रम पहले विश्वविद्यालय के विभागो के अन्तर्गत और बाद में इससे सम्बद्ध सरकारी महाविद्यालयों में शुरू किये गये।[1]

निजी पक्षों को प्रोफेशनल पाठ्यक्रम चलाने के प्रमाण पत्र देने की विश्वविद्यालय की पहल ने कई स्थानीय औद्योगिक घरानों को नये महाविद्यालय खोलने की प्रेरणा दी। शीघ्र ही इस पहल ने शिक्षित बेरोजगार युवा जिनमें से कुछ कोंचिग केन्द्र चला रहे थे, का ध्यान आकर्षित किया। इसने स्थानीय राजनीतिक नेता जिनकी विश्वद्यिालय प्रशासन और प्रभुत्व राजनीतिक वर्ग के साथ पहुँच थी, का भी ध्यान आकर्षित किया। कई एक कमरे वाले कोंचिग संस्थान रातों रात व्यवसायिक महाविद्यालयों में परिवर्तित हो गये। किसानों से कौडियों के भाव ली गई हजारों एकड़ सार्वजनिक भूमि को स्थानीय अधिकारियों ने नेताओं को आवंटित कर दी। इन नेताओं ने धर्मार्थ ट्रस्ट के तहत महाविद्यालय खोले, जिससे उन्हें अपने ''काले धन को सफेद करने'' और समाज सेवा के नाम पर कर की चोरी के नये तरीके ईजाद करने में मदद मिली।[2] एक दशक के अन्तर्गत ग्रामीण और नगरीय मेरठ और उसके आस पास के शहरों में 350 से भी अधिक निजी महाविद्यालय स्थापित किये गये। CCSU ने इन महाविद्यालयों को अभियांत्रिकी,

>>

प्रबंधन और फार्मेसी के विभिन्न पाठ्यक्रम और शिक्षा में स्नातक डिग्री (B.Ed.) संचालित करने का प्रमाण–पत्र दिया। शायद ही कोई निजी संस्थान कला, सामाजिक विज्ञान या दर्शन शास्त्र के पाठ्यक्रम संचालित करने मे रूचि रखते हैं। इसका परिणाम यह है कि CCSU एक बड़े और व्यापक सरकारी विश्वविद्यालय से एक ऐसी मशीन बन गया है जो मुनाफा बनाने वाले निजी महाविद्यालयों को प्रमाण पत्र वितरित करता है।

राज्य/सरकार द्वारा सरकारी विश्वविद्यालयों की समाप्ति और व्यापक निजी क्षेत्र के उभार ने शिक्षा और सामाजिक न्याय की गुणवत्तता पर कई विकृत प्रभाव डाले हैं। प्रारंभ में, सरकार द्वारा निर्धारित निजी महाविद्यालय खोलने के निर्देशों की पालना किये बिना कई संस्थान खोले गये और संचालित किये गये। इसका परिणाम हुआ कि सैंकड़ों महाविद्यालय और संस्थान बगैर उचित बुनियादी सुविधाओं और योग्य शैक्षणिक स्टाफ के संचालित किए जा रहे हैं। आज आपको ऐसे संस्थान मिल सकते हैं जहॉ विद्यार्थी कागजों में पंजीकृत हैं परन्तु जहॉ कोई कक्षाएँ आयोजित नहीं की जाती है। ये महाविद्यालय मौजूदा नियमों को ताक में रख कर भारी कैपीटेशन शुल्क[3] चार्ज करते हैं जिसका कई गरीब और निम्न वर्ग के विद्यार्थी भुगतान नहीं कर सकते।

गरीब और निम्न वर्ग या जाति के विद्यार्थियों की मदद करने के लिए सरकार, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की मदद करने के लिए, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को व्यवसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश देने वाली संस्थानों को फैलाशीप और अनुदान देती है। परन्तु, इसने सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के बजाय, निजी महाविद्यालयों को लाभ पहुँचाया जिन्होंने इस कार्यक्रम को अपने लाभ के लिए काम में लिया। कई महाविद्यालयों और संस्थानों ने तथा–कथित 'सलाहकार' (दलाल) को मेरठ के आस पास के गाँवों और शहरी इलाकों में घर–घर जा कर अनुसूचित जाति के छात्रों की सूची तैयार करने को कहा। इन छात्रों को सरकारी अनुदान योग्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में नामांकन हेतु कहा गया। कई मामलों में छात्रों की इन पाठ्यक्रमों में रूचि नहीं थी फिर भी उनका कागजों में नामांकन किया गया। इसके अलावा, कई छात्रों को उनकी जानकारी के बिना, एक से अधिक महाविद्यालय में प्रवेश दिया गया। पहले मामले में, कक्षा में भाग लिए बगैर डिग्री प्राप्त कर छात्रों को फैलोशिप से लाभ हुआ जबकि महाविद्यालय के मालिकों को बड़ा अनुदान प्राप्त हुआ। दूसरे मामले में, महाविद्यालय के मालिक और सलाहकार छात्रों को कोई लाभ दिये बगैर, लाभार्थी थे। इस तरह बड़ी मात्रा में राजकीय धन को निजी क्षेत्र में वैध किया गया।

निजी महाविद्यालय वोट संग्रह करने वाली राजनैतिक मशीन बन गये। कई नेताओं ने ग्रामीण और अर्द्ध–शहरी क्षेत्रों में व्यवसायिक महाविद्यालयों की स्थापना की। इनमें से कईयों के लिए देहात में सस्ते खेत खरीदना भी एक उद्देश्य था। इन नेताओं ने अपने आप को सिर्फ अपने साथी जाति सदस्यों की मदद करने वाले ही नहीं अपितु शिक्षण सुविधाओं के अभावग्रस्त ग्रामीण क्षेत्रों की जातियों और वर्गों के लोगों की मदद करने वाले, दान दाता के रूप में प्रस्तुत किया। निजी महाविद्यालय उन गरीब माता–पिता जो भारी कैपीटेशन शुल्क वहन नहीं कर सकते और नौकरी पाने के लिए संघर्ष कर रहे शिक्षित युवाओं को संरक्षण देने वाले यन्त्र बन गये। चुनाव के दौरान ये माता–पिता और युवा लोग अपने संरक्षकों के लिए चुनाव अभियान में भाग लेते हैं और मतदान करते हैं।

हकीकत में, भारत में निजी संस्थानों के विस्तार के लिए सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल किया गया है। इस निजीकरण ने न केवल महाविद्यालयों के मालिकों का एक अमीर वर्ग जो उच्च और मध्यम जाति से सम्बन्धित है का निर्माण किया है अपितु इसने उच्च शिक्षा तक पहुँच में असमानता को भी भड़काया है। निजी महाविद्यालयों के स्नातक छात्रों का एक बड़ा हिस्सा अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त पाठ्यक्रमों में दाखिला लेते हैं या फिर वे बहुत ही कम वेतन पर नौकरी कर लेते हैं। अनुसूचित जाति और गरीब छात्र, निजी महाविद्यालयों की भूलभूलैया में अपने आप को फँसा हुआ पाते हैं। अतः इसका परिणाम वर्ग और जाति का पुनरूत्पादन और ज्ञान का शुद्ध यंत्रीकरण है। मैंने इस प्रघटना का अध्ययन केवल मेरठ और पश्चिम उत्तर प्रदेश में किया है परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि भारत में अन्य कहीं भी सरकारी शिक्षा के निजीकरण के समान परिणाम होगें, जहां पर कि सरकार के नियमों को घूस या भ्रष्टाचार के अन्य स्वरूपों से ठगा जा सकता है। यह सरकारी मिलीभगत या सकारात्मक प्रोत्साहन के द्वारा सरकारी माल को निजी कम्पनियों को हस्तांतरित करने के विश्वव्यापी रूझान के समान दिखाई देता है। ■

[1] स्व–वित्त पोषित पाठ्यक्रमों में एक छात्र को सामान्य से अधिक शुल्क देना पड़ता है परन्तु बिल्डिंग, शैक्षणिक स्टाफ और पुस्तकालय जैसी बुनियादी सेवाएँ इन कैम्पस पर संचालित परन्तु स्व–वित्त पोषित पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय प्रदान करता है। संक्षिप्त में, सरकार निजी शिक्षा को फण्ड करने हेतु सरकारी संसाधन उपलब्ध करा रही है।

[2] शिक्षण संस्था चलाना समाजसेवा के अन्तर्गत आता है। यह एक गैर–लाभ गतिविधि और कर–मुक्त है।

[3] कैपीटेशन शुल्क एक अनाधिकारिक भुगतान है जो भारत में, अधिकांशतः उच्च शिक्षा के संस्थानों में प्रवेश के लिए आवश्यक होता है।

>अकादमिक क्रम विन्यास का

जर्मन समाजशास्त्रियों द्वारा बहिष्कार

क्लोस डोरे, स्टीफन लैसिन्च एव इन्गो सींज, फ्रैड्रिक–शिलर विश्वविद्यालय, जेना, जर्मनी

जेना में फेड्रिक–शिलर–विश्वविद्यालय में एम.ए. की छात्रा जोहाना सिटेल अकादमिक क्रमविन्यास व्यवस्था के राष्ट्रीय बहिष्कार में अनेक अन्य जर्मन समाजशास्त्रियों के साथ शामिल हुई।

समूचे विश्व में विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा केन्द्रों पर उस संरचनात्मक परिवर्तन का प्रभाव देखा जा सकता है जो उद्यमी विश्वविद्यालय के सिद्धान्तों से निर्देशित हैं। नवीन सार्वजनिक प्रबन्धन सिद्धान्तों को लागू करने का अर्थ है कि विश्वविद्यालयों को बड़ी तेजी के साथ निजी प्रतिष्ठानों की तरह प्रबन्धन प्रक्रिया से जोड़ा जाय। संसाधनों का आवंटन उपलब्धियों के अर्जन एवं लक्ष्यों से सम्बद्ध सहमति के आधार पर किया जाय। अकादमिक पूंजीवाद जर्मनी में प्रवेश कर चुका है एवं इसके मुख्य उपकरण विश्वविद्यालय के विभागों का क्रम विन्यास में स्थान तथा 'लीग टेबिल्स' हैं। परिमाणात्मक उपलब्धियों के संकेतकों (अनुसंधान में आर्थिक सहायता/राशि, पी एच डी की संख्या एवं स्नातकों की संख्या) की तरफ पूर्वाग्रही झुकाव अकादमिक क्रिया बन गयी है जबकि गुणात्मक पक्षों की उपेक्षा देखी जाती है। शिक्षकों की कार्य प्रणाली में डिजाइन एवं अन्तर्वस्तु दोनों दृष्टियों से आधारभूतीय परिवर्तन आये हैं। शिक्षण एवं अनुसंधान गतिविधियों में प्रशासनिक दायित्वों में वृद्धि के कारण बाधाओं में बढ़ोत्तरी हो रही है। उपलब्धियों/प्रदर्शन के मापन के प्रयास इस कारण आन्तरिक रूप से बढ़ रहे है ''अधिक से अधिक पर उपयुक्त नहीं'' यह तर्क अब उभार ले रहा है। इस स्थिति के कारण कार्यभार गहन होता जा रहा है, तनाव में वृद्धि हो रही है एवं अकादमिक श्रम शक्ति से जुड़े सभी समूहों पर कार्य का अतिरिक्त भार बढ़ता जा रहा है। अनुसंधान एवं अध्यापन की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव को अब महसूस किया जाने लगा है।

जर्मन समाजशास्त्र परिषद (द जर्मन सोशियोलोजिकल एसोशियेशन, जीएसए) ने इस कारण यह निर्णय लिया है कि वह अकादमिक पूंजीवाद का विरोध करेगी। यह विरोध 2013 सीएचई (सैण्टर फौर द डवलपमैण्ट ऑफ हायर एज्यूकेशन) क्रम विन्यास के बहिष्कार द्वारा किया गया है। यह क्रम विन्यास जर्मन भाषायी विश्व में निश्चय ही सबसे अधिक प्रभावी है। अध्यापन एवं अनुसंधान में गुणवत्ता, विषय विशेषज्ञों की प्रतिष्ठा, वैज्ञानिक आधारभूत संरचना एवं अन्तर्राष्ट्रीय 'दृश्यता/स्पष्टता' वे कुछ संकेतक है जिनसे विश्वविद्यालय विभागों के मूल्यांकन के पक्ष निर्मित होते हैं। इस उद्देश्य हेतु आंकड़े (उदाहरण हेतु तृतीय पक्ष की फण्डिंग) विश्वविद्यालय निदेशालयों से एकत्रित किये जाते हैं,

>>

विद्यार्थियों का सर्वेक्षण किया जाता है तथा कुछ प्रोफेसर्स से परामर्श लिया जाता है। सर्वाधिक प्रतिष्ठित साप्ताहिक पत्रिका 'डाइजिएट' (Die Zeit) के सहयोग से परिणामों का प्रकाशन किया जाता है और निश्चय ही विज्ञान से सम्बद्ध प्रशासन तन्त्र तथा विश्वविद्यालय निदेशालयों के लिए ये बहुत महत्वपूर्ण संदर्भ बिन्दु हो जाते हैं।

जीएसए ने हाल ही में विभागों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आव्हान किया है कि वे सीएचई क्रम विन्यास में सहभागिता न करें। जैना में स्थित फ्रैडरिक शिलर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के संस्थान ने इसमें सर्वप्रथम पहल की, लीग टेबिल्स में उत्कृष्ट संस्थानों के क्रम विन्यास में उच्च स्थान प्राप्त कर चुके विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग ने इस मूल्यांकन में सहभागिता न करने की सार्वजनिक घोषणा की यह घोषणा अत्यन्त प्रभावी थी। सन् 2011 के क्रम विन्यास के परिणामों के प्रकाशन के कुछ समय उपरान्त यह घोषणा की गयी। विभाग ने अपने पारित प्रस्ताव में यह मत व्यक्त किया :

'डाइ जिएट' में प्रकाशित नवीन 2011/12 सीएचई क्रम विन्यास में फ्रैडरिक–शिलर विश्वविद्यालय में स्थित इन्स्टीट्यूट ऑफ साशियोलोजी (समाजशास्त्र का संस्थान) को उच्चतम स्थान प्रदान किया गया है। हमारे योगदान की सराहना की इस अभिव्यक्ति से हम प्रसन्न हैं। लेकिन हम विश्वविद्यालय के क्रम विन्यास मापन के उपकरणों के विषय में काफी सन्देहास्पद हैं। हम सीएचई के सूचना–मूल्य से निर्धारित क्रम विन्यास को निम्न मानते हैं क्योंकि यदि केवल एक कारण से उदाहरणार्थ अपूर्ण तथ्यों के आधार पर बड़ी संख्या में संस्थानों को क्रम विन्यास में निम्न स्थान मिल सकता है, तो प्रणाली संदेहास्पद हो जाती है। हमारा यह विचार प्रथम दृष्टया अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि विश्वविद्यालयों के क्रम विन्यास में स्थान संकाय सदस्यों (एकेडमिया) में प्रतियोगिता मूलक संस्कृति को स्थापित करने का माध्यम बन जाते हैं। यह स्थिति व्यवस्थित रूप में विजेता एवं पराजित को उत्पन्न करती है पर वैज्ञानिक कार्य की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक नहीं होती। 'इंस्टीट्यूट ऑफ सोश्सियोलोजी' ने इस कारण प्रतियोगिता के आगामी चरण में भाग न लेने की योजना बनाई है। जैसा कि कहा जा चुका है कि हम जी. एस. ए. की प्रबन्ध समिति व काउन्सिल से इस विषय पर सलाह लेंगे और समाजशास्त्र विषय के संदर्भ में इस मुद्दे पर संयुक्त दृष्टिकोण बना कर पारस्परिक सहयोग करेंगे और समन्वय स्थापित करेंगे। इस अवसर पर यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक गुणवत्ता को सुनिश्चित करने वाले उपयुक्त उपकरणों/विद्याओं का आदान प्रदान किया जावे तथा उन तरीकों को प्रयुक्त किया जाय जिनसे जर्मनी के विश्वविद्यालयों में जारी समाजशास्त्र के विभिन्न कार्यक्रमों की सूचना विद्यार्थियों को दी जा सके'' इस बहिष्कार को संचार माध्यमों ने व्यापक रूप से प्रसारित किया तथा जी. एस. ए. एवं जर्मनी के अधिकांश समाजशास्त्र विभागों ने इसका समर्थन कर स्वयं को इस बहिष्कार से जोड़ लिया। अन्य विषय के विभागों ने इसका समर्थन कर स्वयं को इस बहिष्कार से जोड़ लिया। अन्य विषय के विभागों ने भी इसका समर्थन किया। इतिहासकार, अंग्रेजी साहित्य के विशेषज्ञ, रसायन शास्त्री, शिक्षण पद्धति विशेषज्ञ एवं राजनीति शास्त्रियों ने निर्णय लिया है कि वे कुछ समयावधि के लिए सी एच ई क्रम विन्यास प्रतियोगिता का भाग नहीं बनेंगे।

विश्वविद्यालय प्रबन्धन मण्डलों ने इस बहिष्कार का बिना शर्त समर्थन नहीं किया है। जी एस ए ने यह स्पष्ट किया है कि सैद्धान्तिक आधार पर वह उपलब्धि आंकड़ों से व्यक्त तुलना को नकार नहीं रही है। जी एस ए की प्रबन्धन समिति ने अक्टूबर 2012 में निर्णय लिया कि वह विद्यार्थियों के लिए विकल्प के रूप में विवेचनात्मक सूचना व्यवस्था को स्थापित करेगी। जी एस ए ने एक, कार्य समूह बनाने का निर्णय लिया है जिसे Task Force Studiengangsevaluation का नाम दिया गया है जो कि वैद्य मूल्यांकन तन्त्र को स्थापित करने के वैकल्पिक तरीकों पर विचार करेगी। सन् 2013 की गर्मी के सत्र में बहिष्कार का वह कार्यक्रम 'चरम स्तर' (हॉट फेज) में प्रवेश करेगा। आने वाले महीनों में यह पता चल जायेगा कि सन्तोषजनक संख्या में शिक्षक एवं विद्यार्थी बहिष्कार के इस आव्हान का समर्थन कर रहे हैं अथवा नहीं। इस समय तो परिणाम अनिश्चित है लेकिन जेना के समाजशास्त्री और वास्तव में तो जर्मनी के समाजशास्त्री अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय से अपील कर रहे है कि वे हमारे मत का समर्थन करें और क्रम विन्यास प्रतियोगिता का बहिष्कार करें। ■

इस विषय पर और सूचनाओं के लिए देखें :
www.sozeologie.de/che

> अपहरण योग्य : नगरीय मैक्सिको में हिंसा के सामान्यीकरण पर

एना विलारियल, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू.एस.ए.

अपने आफिस से 2012 में अपहरित 31 वर्षीय व्यापारी तथा पक्के शिकारी के फेसबुक पर आये खाके के आधार पर एना विलारियल द्वारा बनाया गया रेखाचित्र। हालांकि उसके परिवार ने उसे छुडाने के लिए अनेक बार फिरौती चुकाई परन्तु एक सप्ताह बाद ही उसका गोलियों से मृत शरीर पास ही के राजमार्ग पर मिला। समान भाग्य के भय के मारे मोन्टेरे के अनेक व्यापारियों ने यह निश्चय किया है कि अब वो अपनी व्यापारिक गतिविधियों को दूर से ही सम्भालेंगे या तो अपने कार्यालयों को पास के ही किसी अन्य स्थान पर ले जाकर या फिर घर के अन्दर से ही।

केरोलिना अपनी सात वर्षीय बेटी को मूवी थियेटर में रेप्यूनजेल दिखाने ले गई और उसे बहुत अफसोस हुआ। आने वाले कई महीनों तक, नन्हीं मारियाना हर समय इस डर का जिक्र करती रही कि कोई खिड़की से आकर उसका अपहरण कर लेगा। ''मुझे ऐसा महसूस होता है कि यहाँ कुछ बुरे लोग हैं'' ऐसा उसने अपनी माँ से कहा। मोण्टेरे, मेक्सिको की एक धनी नगरपालिका की बाल्कनी में बैठे काफी पीते समय एक साक्षात्कार के दौरान उसकी माँ ने यह वार्तालाप सुनाया। उसे याद था कि उसने अपनी बेटी से कहा कि ''हाँ, परन्तु तुम्हें इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। पहला, यह महल नहीं है, दूसरा तुम्हारे पास जादुई बाल नहीं है। तीसरा, उन दिनों में कोई द्वार अलार्म नहीं थे और उसके माता–पिता बहुत दूर सोते थे जबकि हम तो तुम्हारे बगल के कमरे में सोते हैं। मारियान को यह समझाने में कि विद्यालय, जिम और उसके भाई–बहनों के साथ वह बिल्कुल सुरक्षित है, काफी मेहनत और कल्पनाशीलता लगी। कैरोलीना ने गुस्से में कहा ''डिज्नी, भाड़ में जाओ, वे क्यों बच्चों के अपहरण पर फिल्म बना रहे हैं?''

फिल्म ने एक ऐसा डर छोड़ा जो आज कई मेक्सिकी लोग अनुभव करते हैं। अपहरण का डर। किसी समय उच्च वर्ग में विशिष्ट

> >

रूप से पाये जाने वाली, अपहरण की घटना मैक्सिको के उत्तर पूर्व में स्थित 4.5 मिलियन जनसंख्या वाले औद्योगिक केन्द्र मोण्टेरे जैसे शहरों में आज सभी वर्गों में सामान्य घटना हो गई है। कभी अपनी उद्यमशीलता की भावना के लिए प्रशंसनीय मोण्टेरे हाल ही में दुनिया भर के समाचार पत्रों में वीभत्स ड्रग हिंसा के एक घटना स्थल के रूप में सुर्खियों में रहा। लटकती हुई लाशों और आस पास के राजमार्गों पर बेधड़ लाशों के ढेर के वर्णन अनगिनत भाषाओं में विश्व में प्रचारित हो गया। फिर भी ड्रग हिंसा ने आपराधिक हिंसा के अन्य रूप जो स्थानीय आबादी के लिए उतने ही हानिकारक हैं परन्तु सुर्खियों में नहीं है, को और बिगाड़ दिया है।

मैक्सिको शहर के एक थिंक टैंक द्वारा हाल ही कराये गये एक अध्ययन के अनुसार संगठित अपराध से सम्बन्धित नरहत्या से भी बहुत ज्यादा, आपराधिक गतिविधियों में अपहरण ने नागरिकों में असुरक्षा के भाव को सर्वाधिक प्रभावित किया है (CIDAC, 2012)। अपहरण सम्बन्धित अधिकारिक अपराध के आंकड़े विशिष्ट रूप से अविश्वसनीय है क्योंकि पीड़ित और उसके परिवार के लोग द्वारा ऐसे मामलों की पुलिस व्यवस्था और न्यायिक संस्थाओं में उनके कम विश्वास के कारण और साथ ही अपहरण्कर्त्ताओं की सीधी धमकियों के कारण रिपोर्ट करने की संभावना कम है। तथापि, उपलब्ध अपराध आंकड़े और पीड़ितों के सर्वेक्षण का सावधानी पूर्वक पुनरीक्षण दोनों मैक्सिकों और न्यूवो लियोन राज्य, जहाँ मोण्टेरे स्थित हैं, में अपहरण की दर में वृद्धि दर्शाता है। यहाँ मैं नगरीय मैक्सिकों में अपहरण कैसे सामान्यीकृत हो गया है के एक संकेतक की व्याख्या करना चाहता हूं। हिंसा कैसे मोण्टेरे में रोजमर्रा की जिन्दगी को बदल रही है के चल रहे क्षेत्रीय अध्ययन से यह व्याख्या पोषित होती है।

आप जानते हैं कि जब हिंसा सामान्य भाषा और दैनिक व्यवहार के दायरे में आ जाती है तो उसका सामान्यीकरण हो जाता है। भाषा के संदर्भ में, पिछले दो महीनों से मैंने कम से कम मध्यम और उच्च वर्ग में तो लोगों से अपहरण की बढ़ती हुई दर के जवाब में भाषाई नवाचार सुना। व्यक्ति अपने आप को secuestrable या नहीं, ''अपहरण योग्य'' "Kidnappable" अंग्रेजी में, के रूप में परिभाषित करने लगे हैं। मैंने यह शब्द पहली बार शुक्रवार 25 जनवरी, 2013 को 43 वर्षीय उच्च वर्ग की महिला लुसिया से सुना जिसने अपने डर और परिवार जनों के डर को किनारा कर शहर के बाहर स्थित अपने ग्रामीण आवास जाने का निर्णय किया। उस क्षेत्र में अपराधिक और सैन्य कार्यवाही के कारण बड़े पूल और दर्जनों संतरे के पेड़ों से घिरा और माली एवं उसके परिवार द्वारा रक्षित इस दो मंजिले ग्रामीण आवास को पिछले अठारह महीनों से किसी ने भी भ्रमण नहीं किया था। हमारे वहाँ पहुँचने पर बीयर पीते और धूप में अपना पेट सेकते हुए उसने मुझे कहा कि ''मेरा परिवार सोचता है कि मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए क्योंकि मैं अपहरण योग्य हूँ।'' हममें से कोई भी क्रास–फायर में फँस सकता है, और मेरे साथ ऐसा हो चुका है। उसने यह भी कहा कि ''परन्तु यहाँ यह चिंता का विषय नहीं है बल्कि डर यह है कि आप बिल्कुल अकेले होने के कारण अपहरित किये जा सकते हो। क्योंकि आप अपहरण योग्य हो, वे आपसे पैसे की माँग कर सकते हैं।''

दूसरी बार मैंने यह शब्द मध्यमवर्गीय इलाके में रहने वाले 28 वर्षीय आदमी सेन्टियागो के मुँह से सुना। मंगलवार 26 फरवरी, 2013 को साक्षात्कार के दौरान उसने बताया, ''मैं जानता हूँ कि मैं अपहरणयोग्य नहीं हूँ, मेरी आय लगभग 17000 पीसोस प्रति माह है, यह मेरे लिए तो काफी है परन्तु मेरे बैंक खाते में कितना पैसा जमा हो सकता है? यदि मेरी आय 100,000 या 200,000 होती तो फिर मुझे महसूस होता कि मैं अपहरण योग्य हूँ। मेरी कार 2002 केवेलियर है। कार के सम्बन्ध में यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है क्योंकि कई मोण्टेरे निवासियों ने अधिक पृथक जीवन शैली के हिस्से के रूप में अपनी कारें बदल ली हैं। एक ऐसे ही आदमी ने अपनी बी.एम. डब्ल्यू (BMW) को सेन्टियागों के दोस्त को बेच दी है जिससे सेन्टियागो उसके बारे में चिंता करने लगा है। दोस्त जोर देकर कहता है कि यह एक पुरानी BMW है जिसे उसने सस्ते में खरीदा है परन्तु सेन्टियागो उससे कहता है कि यह तथ्य अपहरणकर्ता को पता नहीं होगा। ''वे तुम्हारा अपहरण कर सकते हैं'' और ''तुम कैसे फिरौती चुकाओगे?'' उसने उसे कहा। अतः एक बहुत बड़ी चिंता सिर्फ अपहरण योग्य होने की नहीं है बल्कि अपहरण योग्य दिखने या नहीं की भी है।

इस संदर्भ में, हिंसा के सामान्यीकरण को कैसे secuestrar (अपहरण करना) क्रिया विशेषण में बदलती है के रूप में देखा जा सकता है। अपहरण की उच्च दर अपराध के सम्बन्ध में एक नये सामाजिक वर्गीकरण के स्वरूप की रचना कर रही हैं। वे जनसंख्या को दो समूहों : वे जो अपने आप को अपहरणित होने की जोखिम के रूप में देखते हैं और वे जो ऐसा नहीं सोचते, में बाँटते हैं। इस संदर्भ में अपहरण योग्य होना स्वयं की अभिन्न विशेषता बन जाता है जो उपभोग व्यवहार, कार्यक्रम, कार्य और परिवहन रणनीतियों की एक श्रृंखला को निर्धारण करने में सक्षम है और जिसे मैं अभी रिकॉर्ड कर रहा हूँ।

''उन्हें यह जानने की जरूरत नहीं है कि ऐसी घटनाएँ हो रही हैं'' कैरोलिना अपने बच्चों के संदर्भ में यह बात साक्षात्कार की समाप्ति पर और कहती है। मैं अभी भी उन्हें इससे बचाना चाहती हूँ, उनके इस बुलबुले और उनके बचपने को संजो कर रखना चाहती हूँ। कैरोलीना कहती है कि वह नहीं सोचती कि वह अपहरणयोग्य है परन्तु वह अपने रिहायशी धनी इलाके/पड़ौस (जहाँ वह रहती है) को नहीं छोड़ने के बारे में सावधान है। वह अब अपनी न तो कारटियर घड़ी पहनती है और न ही चमकती हुई कार चलाती है। वह न तो अखबार पढ़ती है और न ही टेलीविजन पर खबरें देखती है। वह रात में बहुत कम ही बाहर जाती है और उसने अपने सामाजिक दायरे को अपने विद्यालय के दोस्त और परिवार तक ही सीमित कर लिया है। इन परिवर्तनों के बारे में वह मुखर है और ऐसा लगता है कि वह जानती है कि छोटी मारियाना के लिए बुलबुला बनाने की कोशिश में वह अपने स्वयं के लिए भी बुलबुला बनाने की कोशिश कर रही है। फिर भी हमारे साक्षात्कार के अन्त में वह लापरवाही से कहती हैं, ''मैं आश्चर्य करती हूँ कि युद्ध के इलाकों में लोग कैसे रहते हैं। वे ऐसा कैसे करते हैं? वे अपनी उत्कंठा का प्रबंधन कैसे करते हैं? वह बहुत भयावह होगा।'' ■

References

CIDAC (2012) *8 Delitos Primero*. Índice Delictivo. Centro Integral para el Desarrollo, A.C.
México Evalúa (2012) *Indicadores de víctimas visibles e invisibles de homicidios*.

> मैक्सिको के युवाओं के मध्य सामाजिक विखण्डन

गोन्जालो ए. सारावी, सेण्टर फार रिसर्च एण्ड हायर स्टडीज इन सोश्यल एन्थ्रोपोलोजी (सी.आइ.इ.एस.ए.एस.), मैक्सिको

असमानता मैक्सिकों में एक खतरनाक व्याधि बन गयी है। एक सामान्य आर्थिक वृद्धि एवं कुछ सामाजिक संकेतकों में उन्नयन के बावजूद मैक्सिकों में उच्च स्तरीय सामाजिक असमानता विद्यमान है। कुल मिलाकर शिक्षा स्तर में वृद्धि हुई है कुछ आधारभूतीय स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हुआ है एवं स्थिति जन्य नकद हस्तान्तरण कार्यक्रम जैसे ''अपौरचुनअडिड'' आज पचास लाख से अधिक परिवारों को लाभान्वित कर रहे हैं जो कि कुल जनसंख्या का लगभग एक बटा पाँच है (बीस प्रतिशत लगभग)। इसके बावजूद निर्धनता निवारण हेतु ये योगदान प्रभावी नहीं हैं और साथ ही ये बहुत असंगत हैं इन सबके बावजूद, अन्तर्राष्ट्रीय मानव कल्याण से सम्बद्ध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रगति के इन एवं अन्य संकेतकों की पृष्ठभूमि में हम अनवरत असमानता की उपस्थिति पाते हैं। अन्तर्विरोधी संदर्भों में ''असमान समावेश'' का नवीन प्रारूप उभर रहा है। विशेषाधिकार एवं वंचन की उपस्थिति साथ साथ है, ये दोनों अवयव एक दूसरे की उपेक्षा करते हैं एवं रणनीतिक दृष्टि से एक दूसरे को स्वीकारते हैं। असमानता ने गुणात्मक छलांग लगाई है। यह छलांग विखण्डित सामाजिक संरचना की तरफ समावेश के उस क्षेत्र (स्पेस) के माध्यम से है जो न केवल असमान है अपितु जिसमें सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भों में दूरी भी है।

विखण्डन की यह प्रक्रिया अभिव्यक्त होती है जब हम युवावस्था की ओर संक्रमण का परीक्षण करते हैं। बाल्यावस्था एवं युवावस्था जीवन चक्र के महत्वपूर्ण काल हैं। एक ओर इस चरण में अवसर एवं अवरोध उन सम्भावनाओं एवं स्थितियों को परिभाषित करते है जिनका सम्बन्ध लोगों के भावी जीवन कल्याण से है। दूसरी ओर समाजीकरण एवं विषयीकरण के ये अत्यन्त संवेदनशील क्षण होते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि किस प्रकार कोई वयस्क जीवन में सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों (स्पेसेज) से स्वयं को एकीकृत कर लेता है। इस विषय पर उपलब्ध साहित्य हमें संरचनात्मक असमानता एवं उन प्रणालियों के विषय में महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है जिनके माध्यम से लोग इन संदर्भों में सक्रिय होते हैं, परन्तु हम इस पक्ष के बारे में कम जानते हैं कि किस प्रकार असमानता सामाजिक विखण्डीकरण की प्रक्रिया को बढ़ाती है। युवावस्था में संक्रमण एवं युवा के अनुभव वे आदर्श प्रक्रियाएं हैं जिनसे सामाजिक विखण्डीकरण के सिद्धान्त अपने संरचनात्मक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक आयामों के साथ प्रकाश में आते हैं।

> **"वर्गों के पार मुठभेड़ों की सम्भावना लगभग शून्य है"**

पिछले कुछ दशकों में मैक्सिमों में शिक्षा की उपलब्धता में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। 1990 से 2010 के मध्य प्रारम्भिक शिक्षा (बेसिक एज्यूकेशन), जो कि 9 वर्ष की आयु तक है, का दायरा लगभग सार्वभौमिक हो गया है तथा 25 वर्ष से 29 वर्ष के आयु समूह के मध्य विद्यालय में अध्ययन की अवधि 7.9 वर्ष से 10.2 वर्ष हो गयी है। अनिवार्य शिक्षा के विस्तार हेतु अनेक संवैधानिक सुधार किये गये हैं। सन् 2011 में अनिवार्य शिक्षा को 12 वर्ष तक कर दिया गया परन्तु इसके साथ ही शिक्षा व्यवस्था में एक गहरा विखण्डन उभरा है। अतः विशेषाधिकार अर्थात् समृद्ध बच्चों एवं युवाओं द्वारा समान निजी स्कूलों में प्रवेश लिया जाता है, विद्यालयों में शिक्षण हेतु उनके पास अधिक एवं अच्छे संसाधन हैं ये संसाधन परिवार में भी इनके पास उपलब्ध हैं। इसके कारण ये बच्चे व युवा उच्च गुणवत्तामूलक एवं अधिक विविधतामूलक शिक्षा प्राप्त करते हैं। निर्धन समूहों के बच्चे एवं युवा सामाजिक दृष्टि से समरूपीय विद्यालयों में प्रवेश लेते हैं। इन विद्यालयों में आधारभूतीय संरचनात्मक सुविधाओं की कमी है। वे विद्यार्थी जिनके परिवार के पास बहुत कम सामाजिक व सांस्कृतिक पूंजी है को शिक्षाशास्त्रीय संसाधनों की कम उपलब्धता है। परिणाम स्वरूप शैक्षणिक उपलब्धि के स्कोर्स में बड़ा अन्तर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए विज्ञान की 2006 पी आइ एस ए परीक्षा में सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक मापक के उच्चतम क्वार्टायल में केवल 25 प्रतिशत विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हुए पर द्वितीय क्वार्टायल में यह प्रतिशत बढ़ कर 56 प्रतिशत हो गया जबकि प्रथम अथवा निम्नतम क्वार्टायल में यह प्रतिशत बढ़ कर 71 हो गया।

शैक्षणिक उपलब्धियों तक ही इस विखण्डन के परिणाम सीमित नहीं है। इनका विस्तार विद्यालयी अनुभव एवं शिक्षा के अर्थ तक देखा जा सकता है। विशेषाधिकार वाले

>>

बच्चों एवं युवाओं हेतु विद्यालय एवं समग्र एवं बन्द परिवेश का प्रतिनिधित्व करता है। उनके जीवन का एक बड़ा हिस्सा विद्यालय में उभरता है तथा संगठित रूप लेता है यह हिस्सा समाजीकरण का मुख्य 'स्पेस' बन जाता है साथ ही अस्मिताओं की परिभाषा एवं संस्कृति पूंजी की रचना का भी मुख्य आधार बन जाता है। विद्यालय में निर्मित होने वाली यह समरूपता एवं सामाजिक जालतन्त्र (नेटवर्क) के अवयव अन्य क्षेत्रों (स्पेसेज) में प्रवेश करते जाते हैं व विस्तार लेते हैं एवं बाल्यावस्था के प्रारम्भ से लेकर युवावस्था तक निरन्तर सक्रिय रहते हैं। उनके लिए विद्यालय एकमात्र ऐसा सम्भावित माध्यम है जो युवावस्था की तरफ संक्रमण का रास्ता बनता है साथ ही इसकी शैक्षणिक जटिलताएं सतत् एवं रेखीय बनी रहती हैं। इस बीच में निर्धन स्तृत के बच्चों एवं युवाओं के लिए विद्यालय एक सीमित अनुभव है जिसके साथ अन्य गतिविधियाँ एवं दायित्व सम्बद्ध होते जाते हैं। इसके साथ ही यह अन्य मुद्‌दों, हितों एवं बाह्य स्थितियों के प्रभावों के प्रति एक खुला परिवेश बन जाता है। परिणामस्वरूप ऐसे बच्चों के विद्यालयी कैरीयर में अनेक बाधायें तथा टूटन के तत्व सम्मिलित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप जैसे जैसे वे प्रगति करते हैं विद्यालयों का महत्व अन्य रास्तों तथा संक्रमण एवं सामाजिक एकीकरण के क्षेत्रों (स्पेसेज) के सम्मुख कम होता जाता है।

शिक्षा में विखण्डीकरण के सम्बन्ध को नगरीय विखण्डन के साथ देखा जा सकता है। इस क्षेत्र में स्थित अन्य देशों की भाँति मैक्सिकों में भी बड़े नगरों में आवासीय खण्डीयकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से बढ़ रही है। मैक्सिको नगर में जैसे निर्धन परिधि क्षेत्र पर ज्यादा बढ़ते जा रहे हैं और दूर होते जा रहे हैं। जबकि विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग विशिष्ट क्षेत्रों में तथा सुरक्षित एवं पूर्ण रूपेण सम्पन्न समुदायों में सिमटते जा रहे हैं। जुड़ाव एवं पृथकता अभिजनों के लिए कोई विशेष घटना नहीं है। नगरीय असुरक्षा एवं नगरों का भय उन्हें जुड़ाव व पृथकता हेतु प्रेरित करता है। परिणामस्वरूप वे मध्य वर्गों के मध्य और यहाँ तक कि निम्नवर्गीय लोगों के मध्य उच्च गतिशीलता की आकांक्षा के साथ फैल गये हैं।

सामाजिक – स्थानिक विखण्डीकरण आवासीय खण्डों के परे जा कर नगर के अनुभव एवं बच्चों तथा युवा की नगरीय सामाजिकता तक पहुँच गया है। मकान, विद्यालय, दुकान एवं मनोरंजन केन्द्र अब सामाजिक–स्थानिक केन्द्र के रूप में सक्रिय हैं जो किसी के नगरीय अनुभव को निर्धारित करते है। ये सभी केन्द्र मुख्यतः स्थानिक संदर्भ बिन्दु हैं एवं सामाजिक सम्बन्धों की केन्द्रीयता हैं। यह प्रक्रिया एक विशिष्ट एवं असमान स्थानिक संरचना को उत्पन्न करती है। गरीब एवं समृद्धि/विशेषाधिकार प्राप्त युवा लोगों की अपनी अपनी नगरीय भौगोलिक स्थितियाँ एवं इनके स्वयं के स्थानिक हेबिटास हैं।

इनकी सामान्य नगरीय जीवन की परिभाषायें एवं नगर में जीवन के अर्थ क्या हैं की रचना उन संदर्भों से निर्मित होती है जिसमें परिवहन, आवास, यातायात, सड़क, हरित क्षेत्र, दुकानों के केन्द्रों की विशेषताएँ सम्मिलित हैं यहाँ तक कि व्यवहार, पोशाक एवं बोलने के तरीके बिल्कुल भिन्न होते हैं। ये पक्ष न केवल भिन्न एवं असमान नगरों को व्यक्त करते हैं अपितु स्वयं के स्वामित्व के स्पेसेज जो नगरों के अन्दर स्थित हैं को भी व्यक्त करते हैं। ये स्पेसेज न केवल पारस्परिक रूप में अलग अलग हैं अपितु एक दूसरे से अपरिचित हैं।

यहाँ तक कि जब खण्डीयकरण का पैमाना नीचे की तरफ जाता है, नगरीय, सामाजिक जीवन में ''अन्यों'' की उपेक्षा एक विशेषता बन जाती है साथ ही मुठभेड़ों/सम्पर्क एवं अन्तः क्रियाओं में सामाजिक समरूपता का तत्व उभार लेता है। विशेषाधिकार प्राप्त युवा लोग खुले सार्वजनिक स्पेसेज से परहेज करते हैं वे बन्द ब्लाक से उभरे आवासीय परिसरों में निवास करते हैं। वे निजी विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हैं। विशिष्ट दुकानों से बने शापिंग केन्द्रों एवं रेस्टोरेण्ट में वे उपभोग प्रक्रिया का भाग बनते हैं निजी कारों में वे यात्रा करते है। दो निजी विश्वविद्यालयों से जुड़े बीस युवाओं के साथ साक्षात्कार में मैंने पाया कि केवल तीन के पास अपनी कार नहीं है जबकि दो सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के 19 साक्षात्कारदाताओं में से किसी एक के पास भी अपनी कार नहीं है। इन साक्षात्कारदाताओं में से 90 प्रतिशत आखिरी सप्ताह के तीन दिनों से अधिक में सार्वजनिक यातायात साधनों को प्रयुक्त करते हैं। इसके विपरीत समृद्ध/विशेषाधिकार प्राप्त युवाओं में से केवल 15 प्रतिशत (बिना कार वाले तीन) ने ही सार्वजनिक यातायात प्रणाली का अनुभव किया है।

सार्वजनिक स्पेसेज से पृथक होते जाना केवल अभिजनों के मध्य ही नहीं है। नवीन अर्द्ध–सार्वजनिक स्पेसेज व निजी सुरक्षा के विभिन्न स्तरों के साथ बन्द क्षेत्र अन्य सामाजिक वर्गों के लिए भी उभरे हैं। लेकिन खुले सार्वजनिक स्पेस (क्षेत्र) पर लोकप्रिय वर्गों (निम्न वर्गों) का प्रभुत्व है। वर्गों के मध्य मुठभेड़ एवं सामाजिक अनुभवों की सहभागिता लगभग शून्य है। साथ ही नगर के बाहर युवा लोग अधिकांशतः रिक्त स्पेसेज अथवा प्रतिबन्धित क्षेत्र पाते हैं। अपरिचितों के साथ अन्तः क्रिया, यदि यह अपरिहार्य है, में पारस्परिक आरोपीकरण (स्टिगमटाइजेशन) का अवयव प्रभावी होता है। साथ ही नियन्त्रण मूलक संस्तरणात्मक सम्बन्ध भी इन अन्तः क्रियाओं में प्रविष्ट हो जाते हैं।

इस प्रकार सामाजिक विखण्डीकरण के दो परिणाम हैं। प्रथम सम्भावना यह है कि सामाजिक संकेतकों के पीछे जहाँ उन्नयन एवं प्रगति के बिन्दु हैं, ''असमान समावेश'' का प्रारूप मजबूती से सक्रिय होता है और इसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। दूसरे, दूरी एवं पारस्परिक अपवर्जन प्रभावित सामाजिक व सांस्कृतिक स्पेसेज सामूहिक उत्तरदायित्व एवं अन्यों की मान्यता एवं उनके प्रति चेतना को कमजोर करते हैं। सामाजिक विखण्डीकरण असमानता को छिपा सकता है तथा साथ ही सामाजिक एकजुटता को हतोत्साहित करता है। ■

> समकालीन जापान में सामाजिक असमानता

स्वाको शिरहासे, टोक्यो विश्वविद्यालय और आईएसए विश्व कांग्रेस, 2014, योकाहामा, जापान की स्थानीय आयोजन समिति के सदस्य

हार्वड समाजशास्त्री एवं पूर्व एशिया विशेषज्ञ एजरा वोगेल्स की 1979 में प्रकाशित जापान एज नम्बर वनः लैसन्स फार अमेरिका जापान में अत्यधिक बिकने वाली पुस्तक बनी।

युद्ध के बाद के जापान में, असमानता पर बहस को विशिष्ट रूप में पुर्नजीवित किया गया जिससे वर्गों का धुंधला विभाजन और जापानी विलक्षणता एक अजीब तरह से साथ आये। जापान, एशिया में पहला देश था जो सफलता पूर्वक औद्योगिक हुआ। 1950 के दशक में शुरू तीव्र आर्थिक वृद्धि के समय ने देश के औद्योगिक ढाँचे का रूपान्तरण किया और जापान को अग्रणी आर्थिक शक्ति बनाया। अमरीकी समाजशास्त्री एजरा वोगेल की किताब (1976)–Japan As number one, जिसने कई जापानी संस्थाओं की प्रशंसा की और कई जापानी पाठकों को उनकी श्रेष्ठता की भावना से अपील कर खुश किया, विशेष महत्व की है। आर्थिक आयाम में, कम से कम जापान अपना सिर उँचा रख सकता था। राष्ट्रीय चरित्र की बहसों ने एक उत्साहवर्धक मोड़ लिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह जापान था और हम सब जापानी नागरिक थे और हमने अप्रत्याशित आर्थिक वृद्धि को प्राप्त करने में सफलता ली थी। इन विशिष्ट जापानी विशेषताओं को कारण–सम्बन्धी महत्व प्राप्त हुआ। यह सब विशेषताएँ अन्य देशों से भिन्न थीं और इन्हें सम्पूर्ण एवं विशिष्ट के रूप में बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया।

"समस्त मध्यम–वर्गीय समाज" की धारणा बहुचर्चित शब्द बन गई। हालाँकि वृद्धि दर में कुछ कमी आई, औसत आय में वृद्धि जारी रही; अधिकांश लोग बिजली के घरेलू उपकरण और कारें खरीद पाये। 1976 के आय–वितरण के एक तुलनात्मक अध्ययन में, आर्थिक सहयोग और विकास के संगठन (OECD) ने जापान को सबसे अधिक समतावादी देश पाया (सायर, 1976)। यह जापानी "अनोखेपन" का एक अतिरिक्त सबूत के रूप में देखा गया और जापान को एक पूरी तरह से मध्यम वर्गीय और सजातीय समाज के रूप में चित्रण को पुनः प्रोत्साहन मिला। जापान का समतावादी समाज के रूप का ऐसा आश्वस्त दावा 1980 के दशक के उत्तरार्ध से 1990 के दशक तक सामाजिक असमानता की डिग्री पर बढ़ते शक की पृष्ठभूमि में धुंधले पड़ने लगा।

1990 के दशक के शुरूआत में "बुलबली अर्थव्यवस्था" के पतन के साथ ही जापान ने लंबे आर्थिक मंदी के दौर में प्रवेश किया। बेरोजगारी दर, विशेषतः पन्द्रह से उन्नीस वर्षीय बच्चों में जो ज्यादा से ज्यादा उच्च विद्यालय पास थे, 1990 में 6.6 प्रतिशत से 2002 में 12.8 प्रतिशत तेजी से बढ़ गई। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, पारंपरिक जापानी रोजगार प्रणाली जो वरिष्ठता और जीवन पर्यन्त रोजगार द्वारा प्रतिनिधित्व की जाती है की अब कोई गारण्टी नहीं थी। 1950 और 1960 के दशक में आर्थिक वृद्धि को सुगम बनाने वाली मुख्य शक्तियाँ अनुकूल आर्थिक वातावरण था जिसके अन्तर्गत कम्पनीयाँ नव नियोजित युवा कामगारों को उनकी शिक्षा खत्म होने के तुरन्त बाद ही प्रशिक्षित कर सकती थीं और उनको और उनके परिवार को एक सुशिक्षित आजीविका प्रदान कर सकती थीं। वरिष्ठता की व्यवस्था युवा और मध्य आयु के कामगारों को उनके भविष्य की सुरक्षा प्रदान करती थी। इस स्थिति तक कि वे रोजगार सुरक्षा के आधार पर अपने भविष्य की योजना बना सकते थे। हालाँकि वर्तमान में, पन्द्रह से चौबीस वर्षीय व्यक्तियों में तकरीबन आधे, जो स्कूल में नहीं है, अमानक नौकरियों में लगे हुए हैं और इसलिए एक आर्थिक रूप से स्वतन्त्र जीवन जीने में असमर्थ हैं।

एक तरफ तो, युवा पुरूष दावा करते हैं कि वे आर्थिक सुरक्षा के अभाव में विवाह नहीं कर सकते हैं जो इन्हें अपने परिवार का समर्थन करने में सक्षम होने से रोकता है। दूसरी तरफ, हालांकि, युवा महिलाएँ दावा करती हैं कि उनकी विवाह करने और बच्चों को जन्म देने की अनिच्छा प्राथमिक तौर पर अपनी स्वतन्त्रता खोने के डर से पैदा होती है। प्रत्यक्षतः पारिवारिक व्यवस्था में गहन रूप से अंतः स्थापित लैंगिक असमानता, समकालीन जापान में सामाजिक असमानता के लिए महत्वपूर्ण योगदान हैं। परिवार जापानी सामाजिक संस्थाओं में से एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था है और बुनियादी सुरक्षा प्रदान करने में एक मुख्य भूमिका अदा करता है। भरोसा करने के लिए अपने परिवार के होने से सामाजिक–आर्थिक दिक्कतों को कम किया जा सकता है। वास्तव में, बिना पारिवारिक मदद के एकल माताएँ और अकेले रहने वाली वृद्ध महिलाएँ कठोर आर्थिक दिक्कतों की उच्च जोखिम का सामना करती हैं।

लिंग और पीढ़ी जापान के वर्ग असमानता को संरचित करने में मुख्य कारक हैं परन्तु मैक्रो (वृहद) परिप्रेक्ष्य से असमानता के ऐसे अध्ययन बहुत कम ही हुए हैं यद्यपि वे विभिन्न सामाजिक और सार्वजनिक मुद्दों की व्याख्या करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। वास्तव में, हम यह कह सकते हैं कि सभी औद्योगिक समाज सामाजिक समस्याओं का सामना करते हैं जिन पर सामाजिक असमानता के ढाचें में चर्चा होनी चाहिए, ऐसा ढांचा जो देशों के मध्य अंतर और समानता दोनों को ही प्रकाशित/उल्लेखित करे। ■

References

Sawyer, M. (1976) "Income Distribution in OECD Countries" *OECD Employment Outlook.*

Vogel, E. (1979) *Japan as Number One*. Cambridge: Harvard University Press.

> हाइकू : सादगी में सौन्दर्य

कोइची हासेगावा, तोहोकू विश्वविद्यालय, सेनडाई एवं आईएसए 2014 समाजशास्त्र विश्व कांग्रेस, योकोहामा, जापान की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष

यामागाटा प्रान्त के हीगाशाईन शहर जो कि उसके हिराईज़ूमि से वापसी के रास्ते में पडता था जहां पर कि उसने मानव गौरव की नश्वरता पर अपनी प्रसिद्ध हाईकू लिखि थी, में सडक के किनारे बाशो मात्सुओ की प्रतिमा।
चित्र कोईची हासेगावा द्वारा।

"हाइकू" दुनिया में कविता का लघुत्तम रूप है। यह मूल रूप से परंपरागत जापानी संस्कृति का एक हिस्सा था; फिर भी, आज यह अन्य संस्कृतियों और भाषाओं में भी व्यापक रूप से उपयोग में लिया जाता है। एक पारंपरिक हाइकू में 5–7–5 अक्षरों की तीन पंक्तियाँ के साथ कुल मिलाकर 17 या फिर उससे कम अक्षर होते हैं। इसमें एक शब्द या पदबंध के साल के एक मौसम का प्रतीक होने की आवश्यकता होती है। हाइकू लिखने के यही दो नियम हैं। हाइकू का इतिहास कविता गुरू बाशो मात्सुओ (1644–1694), जो एक उर्जावान यात्री भी थे, तक जाता है। तब से हाइकू जापानी दैनिक जीवन का बेहद लोकप्रिय हिस्सा बन गया हैं। प्रमुख जापानी समाचार पत्र प्रतिदिन लघु व्याख्या के साथ प्रसिद्ध हाइकू प्रकाशित करते हैं। वे पाठकों द्वारा भेजी गई हाइकू में से नियमित रूप से चार या पाँच निर्णायकों द्वारा चुनी गई 40 से 50 उच्च गुणवत्ता वाली हाइकू कविता का साप्ताहिक रूप से चयन प्रस्तुत करते हैं। हाइकू रचयिता अपनी रचनाओं को साझा करने और अपनी काव्यात्मक प्रतिभा में निखार लाने के लिए जापान में सप्ताहांत सामुदायिक केन्द्र में एकत्रित होते हैं। आज जापान में लाखों हाइकू कवि और उत्साही प्रशंसक हैं।

हाइकू के लिए अत्यावश्यक है सादगी, एक धारणा जो वह जापानी जेन बौद्ध धर्म, चाय समारोह और जापानी पाक शैली के साथ सांझा करती है। सादगी जापानी संस्कृति और जीवन की सुंदरता में एक महत्वपूर्ण मूल्य का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक जापानी चित्रकला अपने चित्रों में बड़े रिक्त स्थान छोड़ती है और अत्यधिक रंग, लकीरों और भावों से परहेज करती है। इस तरह कला आपको संचार के सर्वाधिक सरल और सहज कृत्य को सक्रिय रूप से व्याख्या करने के लिए आमंत्रित करती है। इसी तरह हाइकू भी बहुत अधिक शब्दों और वाक्यांशों से परहेज करती है; अतः हाइकू के गूढ़ अर्थ को पाठकों पर उनकी स्वयं की व्याख्या के लिए छोड़ना महत्व पूर्ण माना जाता है। कुल मिलाकर हाइकू सादगी के सौन्दर्य का प्रतिनिधित्व करती है।

दुनिया के मेरे समाजशास्त्री मित्रों, मुझे बाशो मात्सुओं, 17वीं शताब्दी से हाइकू के संस्थापक पिता द्वारा लिखित सबसे प्रसिद्ध हाइकू

>>

से आपका परिचय कराने दो। जापानी साहित्य विशेषज्ञ और कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर इमेरिटस, डोनाल्ड कीन, ने बाशो की हाइकू का अंग्रेजी में अनुवाद किया जो ऐसा है:

गर्मियों की घास.....
बहादुर सिपाहियों के
सपनों का परिणाम।

बाशों ने इसे 1689 में लिखा था जब उन्होंने हिराइजूमी, जापान में वर्तमान में इवाते प्रांत, और 12 शताब्दी का एक प्रसिद्ध युद्ध स्थल का दौरा किया। प्रत्येक वर्ष गर्मी की घास विध्वस्त युद्ध स्थल पर बढ़िया उगती है। फिर भी ऐसा क्षेत्र प्रकृति की अनंत शक्ति और चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरी तरफ, यौद्धाओं की कामना क्षणिक उम्मीदें और स्वप्न थे। इन तीन पंक्तियों में, बाशो ने अनंतकाल तक चक्रीय और शक्तिशाली प्रकृति को किसी विशिष्ट समय की अल्पकालिक राजनैतिक सत्ता के साथ जीवन्त रूप से तुलना की है। इस तरह हाइकू विभिन्न तकनीक जैसे रूपक, तुलना, प्रतीकवाद का प्रयोग करती है, फिर भी ऐसी तकनीके स्वयं बाधक नहीं हो सकती। प्रकृति को कड़ाई से प्रदर्शित करना हाइकू भावाभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण लक्षण है।

जापान में प्रकृति हमेशा से जीवन के सिद्धान्त का केन्द्र रही है। स्पष्ट रूप से बाँटे गये चार मौसम, लोगों को प्रत्येक मौसम और उसके परिवर्तनों की तरफ अपनी संवेदनशीलता को संजोये रखते हैं। उदाहरण के लिए, आप ''नाटिश'' के लिए कितने शब्द और भावों की जानकारी रखते हैं।

सर्वसामान्य रूप से काम में ली जाने वाली जापानी शब्दकोष में ''बारिश'' से सम्बन्धित 160 संज्ञाएँ सम्मिलित है जैसे ''रेशमी बारिश'' और ''फूल जैसी बारिश की बूंदे'' जो चैरी ब्लासम के खिलने के साथ ही उनकी बौछार करते हैं। जापानी संस्कृति बारिश और अन्य मौसमी शब्दावली की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के भाव प्रदान करती है। ऐसी नाजुक सांस्कृतिक चरित्र ने कई जोशीले हाइकू प्रशंसकों को जापान और विश्व में आकर्षित किया है। मैं भी ऐसा एक प्रशंसक हूँ, जो एक महीने में दस से बीस हाइकू कविता लिखता है। समाजशास्त्री के मेरे पेशे से जुड़कर मैंने अपनी स्व–रचित हाइकू का एक संग्रह, शीर्षक श्योको–यू (हरी पत्तियों के मौसम में बारिश) प्रकाशित किया है। पर्यावरणीय समाजशास्त्री के रूप में, मेरी प्रेरणा पर्यावरणीय चुनौतियों, घटनाओं और मुद्दों और यहाँ तक कि प्राकृतिक आपदाओं से भी आती है। हाइकू की रचना करना जीवन, समाज और प्रकृति से जुड़े अपने अनुभव को स्नेपशॉट कैमरे से तस्वीर खींचने के एक क्षण जैसा है।

मैं इस निबन्ध को बाशो मत्सुओ की बारिश पर एक अन्य हाइकू जिसको चुसोन–जी मंदिर, हिराइजुमी, जापान में रिकॉर्ड किया गया, से समाप्त करना चाहूंगा[2]:

क्या बसन्त की बारिश ने
उनके हमले से आप को बख्शा है
स्वर्ण का दकमता हॉल?

हिराइजुमी, जहाँ बाशो मत्सुओं ने जीवन का एक क्षण को ''गर्मीयों में घास'' हाइकू में व्यक्त किया, वह यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त विश्व सांस्कृतिक धरोहर विरासत का हिस्सा है। (http://whc.unesco.org/en/list/1277) यह योकोहामा जहाँ 2014 में समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस होने वाली है से तीन घंटे की दूरी पर स्थित है। हाइकू और समाजशास्त्र में बहुत कुछ समान है; दोनों समाज और प्रकृति के अपने जीवन अनुभवों को रिकार्ड और विश्लेषित एवं आलोचना करते हैं। ■

[1] In Japanese: Natsukusa ya/ Tsuwamono domo ga/ Yume no ato.
[2] Samidare no/ Furinokoshite ya/ Hikaridou.

> बिल्बाओ में कार्यकारी समिति की बैठक

माईकल बुरावे, यूनिर्वसिटी ऑफ कैलीफोर्निया, बर्कले तथा आईएसए अध्यक्ष

बिल्बाओ में आईएसए की कार्यकारी समिति की मीटिंग के अवसर पर उसके सदस्य शहर की सैर करते हुए।

आईएसए की कार्यकारी समिति अपनी वार्षिक बैठक के लिए पांच दिनों तक यूनिर्वसिटी ऑफ बास्क कन्ट्री में एकत्रित हुई जहां पर प्रोफेसर बैन्जामिन टेजेरिना जो कि कार्यकारी समिति के सदस्य भी हैं तथा उनके समाजशास्त्र विभाग के साथियों द्वारा खुले दिल से मेजबानी की गई। हमारी बैठक के दो दिन ''संकटकाल के उस पारः नये जोखिमों, अनिश्चितताओं तथा संदिग्धताओं से समाजशास्त्र का सामना'' विषय पर उसी समय पर आयोजित एक आकर्षक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के साथ थी जिसमे कि कार्यकारी समिति के सदस्यों तथा कार्यक्रम समिति के बाहरी सदस्यों ने भागीदारी की।

योकोहामा कांग्रेस 2014 की कार्यक्रम समिति की बैठक, जिसकी अध्यक्षता राकेल सोसा एलीगाजा ने की; प्रकाशन समिति की बैठक, जिसकी अध्यक्षता उपाध्यक्ष जैनीफर प्लाट ने की; वित्त तथा सदस्यता समिति की बैठक, उपाध्यक्ष राबर्ट वॉन क्राइकैन की अध्यक्षता में; शोध समन्वय समिति की बैठक, उपाध्यक्ष मारर्गेट अब्राहम की अध्यक्षता में; तथा नेशनल एसोशिएशन्स लियाजा समिति की बैठक, उपाध्यक्ष टीना उईस की अध्यक्षता में होने वाली हमारी पांच दिन लम्बी बैठकें शुरु हुई। उनकी बैठकों के संक्षिप्त प्रतिवेदन नीचे दिये गये हैं।

सप्ताह के अन्तिम दो दिनो में समग्र कार्यकारी समिति की बैठकें हुई। ताईपे में एक सफलतापूर्वक आयोजित पीएच.डी. लैब, तथा ब्यूनोस आयर्स मे एक उत्तेजक आईएसए फोरम के साथ यह एक अच्छा साल बीता जिसमें कि 2014 में आयोजित होने वाली कांग्रेस को गति प्रदान की। मैनें अपनी विभिन्न महाद्वीपों की यात्राओ तथा बीते वर्ष के दौरान आईएसए के डिजिटल विश्व *(ग्लोबल डायलॉग, युनिवर्सिटीज इन क्राइसिस, पब्लिक सोशियोलोजी लाईव, जर्नीज थ्रू सोशियोलोजी, तथा प्रपोज्ड प्रोफेशनल डवलपमेन्ट साईट)* की प्रगति की रिपोर्ट दी।

कार्यकारी समिति ने टोरेन्टो को 2018 में आयोजित होने वाली कांग्रेस का स्थान निश्चित किये जाने पर प्रसन्न्ता जाहिर की। यह तय करना कि 2016 में आयाजित होने वाला आईएसए विश्व फोरम कहां होगा हमारा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य था। बुडापेस्ट, कोपेनहेगन, तथा वियना से हमारे पास तीन उत्कृष्ट प्रस्ताव थे। हमने उनमें से दो – बुडापेस्ट तथा वियना – को लघु सूचिबद्ध किया तथा अन्तिम निर्णय दोनो स्थलों के देखने के बाद लिया जाना तय किया।

कुछ अन्य निर्णय जो हमने लिए इस प्रकार हैंः

1 आईएसए की पुनःसंरचना के एक प्रस्ताव को स्वीकार किया जिसमें कि कार्यक्रम समिति के सदस्यो के लिए अधिक ध्यान दिया जायेगा। इस समिति की अध्यक्षता आईएसए के अध्यक्ष के द्वारा की जायेगी और इस प्रकार उपाध्यक्ष कार्यक्रम के पद को अनावश्यक बना दिया जायेगा। यह प्रस्ताव अब एक इलैक्ट्रोनिक मतदान के लिए असेम्बली आफ काउंसिल्स के पास भिजवाया जाएगा।

2 आईएसए द्वारा मानवाधिकार हनन का सामना कर रहे समाजशास्त्रियों के बचाव में सार्वजनिक बयान जारी कर सकने की परिस्थितियों की पहचान तथा स्थापना की।

3 आईएसए के प्रमुख सम्मेलनों में विकलांगों की पहुंच के बारे में एक आईएसए नीति को विकसित किया गया।

>>

4 आईएसए की परियोजनाओं के लिए बाहरी संसाधनों से वित्त प्रबन्धन की संभावनाओं को तलाशने के लिए एक समिति की स्थापना की गई।

5 एक नया आईएसए पुरस्कार Excellence in Research and Practice स्थापित किया गया।

> मारग्रेट अब्राहम, उपाध्यक्ष शोध

शोध समन्वय समिति (आरसीसी) ने बिल्बाओ में एक उत्पादक बैठक की। मैंनें अपने प्रतिवेदन में ब्यूनोस आयर्स (जुलाई 31 – अगस्त 4, 2012) आईएसए के द्वितिय फोरम आफ सोशियोलोजी की सफलता को बताया जिसमें कि 650 से अधिक सत्रों में भागीदारी के लिए 84 देशों से 3,592 पंजीकरण किये गये। सामाजिक न्याय एवं लोकतान्त्रिकरण क्षेत्र एक बड़ी सफलता थी और हम इसमें और सुधार करने की योजना बना रहे हैं।

अधिनियम की समीक्षा के लिए गठित उपसमिति ने उन शोध समितियों (आरसीज), कार्य तथा विषय समूहों (डब्लूजीज तथा टीजीज) पर अपनी रिपोर्ट दी जिन्होंने अपने अधिनियमों की समीक्षा तथा संशोधन कर लिए हैं तथा उन आरसीज को सूचिबद्ध किया जिन्हें यह कार्य आगामी चुनावों से पूर्व पूरा करना है। आरसीसी ने वर्ष 2011 तथा 2012 के अनुदान आबंटनों की समीक्षा की तथा वर्ष 2013 के लिए आबंटनों को अनुमोदित कर दिया। पारितोषिक उपसमिति ने बताया कि आरसी 37 (सोशियोलोजी आफ आर्टस्) के पारितोषिक प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया गया है। विषय समूह 05 (विज्युअल सोशियोलोजी) के कार्यसमूह को उन्नत करने के आवेदन को स्वीकार कर लिया गया। सोशियोलोजी एण्ड सोशल वर्क नामक नये विषय समूह की सावधानीपूर्वक समीक्षा की गई परन्तु अन्त में वर्तमान में स्थित आरसीज से अतिच्छादन के कारण अस्वीकृत कर दिया गया।

आरसीसी ने 2014 में योकोहामा में आयोजित होने वाली समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस की तैयारियों पर चर्चा की जिसमें शामिल हैंः

1 द्वितीय आईएसए फोरम तथा आरसी कार्यक्रम समन्वयकों द्वारा प्रदत्त जानकारियों के आधार पर आन लाइन तन्त्र को उत्कृष्ट करने हेतु कान्फेक्स (Confex) की प्रगति पर विचार करना।

2 आरसीसी तथा नाल्क की संयुक्त समिति द्वारा विश्व कांग्रेस के लिए दस समाकलनात्मक (Intergrative) प्रस्तावों का चुनाव करना।

3 कांग्रेस द्वारा आरसी–डब्लूजी–टीजी के भागीदारों को दिये जाने वाले अनुदानों को पंजीकरण सहायता के रुप में दे कर अनुदानों के उपयोग को सुधारा जाना।

4 नये चुने गये आरसी/डब्लुजी/टीजी अधिकारियों के प्रशिक्षण तथा शोध समिति की मीटिंग के लिए कार्यक्रम बनाना।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि योकोहामा में कार्यक्रम समन्वयकों के लिए पंजीकरण शुल्क में सहायता के लिए हमारे अतिरिक्त धन (10,000€) के आवेदन को आईएसए की वित्त तथा सदस्यता समिति ने स्वीकार कर लिया है।

> राकेल सोसा एलीगाजा, उपाध्यक्ष कार्यक्रम

पिछले तीन सालों के दौरान कार्यक्रम समिति कार्यकारी समिति की बैठकों के अवसर पर तीन बार मिल चुकी है, जिसके सदस्य हैंः माईकल बुरावे (आईएसए अध्यक्ष), मारग्रेट अब्राहम (आईएसए उपाध्यक्ष, शोध), टीना उईस (आईएसए उपाध्यक्ष, नेशनल एसोसिऐशन्स), एलेना जाद्रावोमाइस्लोवा, बैंजामिन टेजैरीना, सारी हनाफी, चिन चुन यी, और मैं खुद बतौर उपाध्यक्ष, कार्यक्रम। कोईची हासेगावा ने बतौर स्थानीय संगठन समिति के अध्यक्ष इस बैठक में हिस्सा लिया। इसके अतिरिक्त एक समूह जो कि असमानता अध्ययन में विशिष्ट है, ने भी हमारी समिति के बाहरी सदस्य के रुप में हमारे निमंत्रण को स्वीकार किया जिसमें एडगार्डो लेण्डर, गोरान थेरबोंन, कल्पना कन्नाबिरन, मारकस शुल्ज, जे. एस्टेबान कास्ट्रो, बोवेन्चुरा ड सूजा सान्टोज (जो कि दुर्भाग्यवश बैठक में नहीं आ सके) सम्मिलित थे। समिति के सभी सदस्यों की विद्वता तथा अनुभव ने एक उच्च स्तरीय वैज्ञानिक बहस को सुनिश्चित किया। उनके सहयोग, जिसकी हम गहराई से प्रशंसा करते हैं, से हम अपना प्रलेख *असमानता का सामना* तैयार करने में सफल हुए जो कि एसोसिऐशन की वैबसाईट पर प्रकाशित किया गया है तथा जो कि हमारे तर्क का आधार है कि हम किस प्रकार अपनी समस्याओं की बुनियाद तक पहुंच सकते हैं जो कि हमारे पूर्ण सत्रों में बहस का प्रमुख मुद्दा रहेगी। उन सभी का प्रयास कार्यक्रम की संरचना तथा संगठन को तय करने, पूर्ण सत्रों के वक्ताओं की विशेषताओं तथा संख्या को तय करने, जो कि अब उन सम्पर्क करनें वाले विशेषज्ञ साथियों को निर्देशित किया जाएगा जिनके योगदान को विश्वभर में जाना जाता है में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। उनके इस कार्य के परिणामों को कई पुस्तकों में प्रस्तुत किया जाएगा जो कि हमारी एसोसिऐशन के द्वारा प्रकाशित की जाएंगी।

समिति में इस बात पर भी विस्तार से चर्चा की गई कि पूर्ण सत्र किस प्रकार हमारी कांग्रेस के सामान्य आयोजन तथा इसकी संरचना में अपना योगदान दे सकते हैं। हमारे विषय पर बढ़ती हुए दिलचस्पी ने हमें इजाजत दी कि हम अपने सहयोगियों के साथ अपने क्षितिजों का विस्तार अनुकलनात्मक सत्रों, नेशनल एसोसिऐशन्स तथा तदर्थ सत्रों में करें तथा साथ ही ऑथर्स मीट क्रिटिक्स सत्रों, स्थानीय व्यवस्था समिति द्वारा विशेष रुप से बनाए गये अतिरिक्त सत्रों तथा अध्यक्षीय सत्रों में भी करें जिसके लिए इस अवसर पर पहली बार दस पूर्णकालिक सत्रों की अनुमति दी गई है। योकोहामा कांग्रेस यूनेस्को के मिलेनियम डवलपमेन्ट गोल्स के पूरे होने के एक वर्ष पूर्व आयोजित की जा रही है। हम ईमानदारी से आशा करते हैं कि हमारा अपना कार्य असमानता को गहराई से समझने में यथा सम्भव योगदान देगा तथा साथ ही इससे उबरने के उपायों को भी तलाशेगा।

> जैनीफर प्लाट, उपाध्यक्ष प्रकाशन

हमारे प्रकाशन अच्छा काम कर रहे हैं परन्तु जब हम परिवर्तित परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं तब कुछ नये महत्वपूर्ण विकास होते हैं।

करण्ट सोशियोलोजी का प्रथम समीक्षात्मक अंक जो कि सोशियोपीडिया के सहयोग से निकाला जाएगा इस वर्ष बाद में प्रकाशित होगा। इस अंक में विभिन्न क्षेत्रों यथा सामाजिक मतभिन्नता, आपदा अध्ययन, स्वास्थ्य, तथा बिमारियां आदि शामिल की जाऐंगी जो कि अब तक सोशियोपीडिया मे उपलब्ध हैं, में किये गये कार्यों की ताजा समालोचनाएं विस्तृत अध्ययन के लिए खोली जा सकेंगी। बाद में आने वाले अकों के लिए अन्य सम्बन्धित विषयों की समालोचनाओं की सीधी प्रस्तुतियां आमंत्रित की जाऐंगी । इन्टरनेशनल सोशियोलोजी रिव्यू ऑफ बुक्स ऐसे विषयों यथा फिल्मों जो कि किसी भी तरह से पुस्तक नहीं हैं की समालोचना को भी स्वीकार करेगी। ई–सिम्पोजियम केपल चलती फिरतीा व्यवस्था का अंग है जो कि हमारी सामाजिक न्याय एवं प्रजातान्त्रिकरण की वैबसाहट http://sjdspace.sagepub.com/ पर केवल आईएसए के सदस्यों को ही अगले अंक के प्रकाशन तक दिखाया जायेगा । विनीता सिन्हा, वर्तमान सम्पादक अब वैबसाइट

>>

की निदेशक बन जाएगी तथा कैल्विन लॉ उनके उत्तराधिकारी सम्पादक होंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय समुदाय की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को व्यक्त करनें में हमारी मदद करने के लिए करण्ट सोशियोलोजी तथा इन्टरनेशनल सोशियोलोजी में शामिल विषय वस्तु पर एक ऑन–लाईन सर्वे किया जायेगा जिसके परिणागों पर वर्ल्ड कांग्रेस में विस्तृत चर्चा की जाएगी।

सेज स्टडीज इन इन्टरनेशनल सोशियोलोजी की हमारी पुस्तकों की कीमतों के लिए एक महत्वपूर्ण नवरीति लागू की गई है, पुस्तकालयों के लिए सजिल्द संस्करण प्रस्तुत किये जाऐंगे, लेकिन आईएसए के सदस्यों तथा विस्तृत होते बाजार के लिए कम कीमत के पेपरबैक संस्करण उपलब्ध कराये जाऐंगे। विश्व समाजशास्त्र में प्रमुख मूल पाठों *(Key Texts in World Sociology)* की हमारी इस श्रृंखला में प्रथम पुस्तक तैयारी पर है।

कुछ देशों में जर्नल्स में प्रकाशित लेखों की ''खुली पहुंच'' जो कि कुछ वित्त प्रबन्धन संस्थानों के सहयोग से हो सकती है के दबाव के चलते कुछ नई व्यवस्थाऐ आवश्यक हो गई हैं। यह स्वीकार किया गया कि जिन लेखकों के कार्यों को इसकी आवश्यकता है, इसका निश्चित शुल्क अदा करके अपने पर्चे को सब के लिए खुला रख सकते हैं तथा जिनके लिए खुलेपन का ''हरा'' विकल्प केवल एक वर्ष के बाद उचित है वे इसे बिना शुल्क के रख सकते हैं।

> टीना उईस, उपाध्यक्ष नेशनल एसोसिऐशन्स

नेशनल एसोसिऐशन्स लियाजन कमेटी का वर्ष 2012 एक उत्पादक वर्ष था। मिडिल ईस्ट टेक्नीकल युनिवर्सिटी के प्रांगण में काउन्सिल ऑफ नेशनल एसोसिऐशन्स की मई 13–16, 2013 के दौरान आयोजित की जाने वाली बैंठक नाल्क कैलेण्डर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी। कांफ्रेस का विषय है ''सोशियोलोजी इन टाइम्स ऑफ टर्माइलः कम्पैरेटिव एप्रोचेज''। कांफ्रेन्स में लगभग 70 प्रतिनिधियों की भागीदारी होगी जिनमें से 40 आईएसए के नियमित सामूहिक सदस्य राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि हैं। प्रोफेसर डाक्टर आयसे सक्तानबर जो कि एमईटीयू में समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष भी हैं, की अध्यक्षता में टर्किश स्थानीय व्यवस्था समिति को उनके कांफ्रेन्स को सफल बनाने के इस मुश्किल कार्य और मेहनत के लिए हम उनकी प्रशंसा करना चाहते हैं।

सउदी सोसाईटी आफ सोशियोलोजी एण्ड सोशल वर्क के नियमित सामूहिक सदस्यता के आवेदन को उनके अधिनियमों पर चर्चा के बाद अनुमोदित कर दिया गया। वर्तमान में आईएसए के पास 57 नियमित सामूहिक सदस्य हैं। हमनें वार्षिक ईसी बैठकों के अन्तराल में प्राप्त होने वाली नियमित सामूहिक सदस्यता आवेदनों पर विचार करने के तरीके को भी बदला है ताकि आवेदकों को परिणामों के लिए अगली एनएएलसी/ईसी की बैठकों का इन्तजार नहीं करना पडे।

द सोशियोलोजिकल एसोसिऐशन ऑफ किर्गिस्तान, द इबेरिक मीटिंग ऑफ सोशियोलोजी, द बुल्गारियन सोशियोलोजिकल एसोसिऐशन, तथा मोजाम्बीक सोशियोलोजिकल एसोसिऐशन ने आईएसए अनुदानों की सहायता से आयोजित अपनी क्षेत्रीय कांफ्रेन्सेज के प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। प्रतिवेदनों पर चर्चा के बाद उन्हें अनुमोदित कर दिया गया।

अपनी वैबसाईट्स को प्रोन्नत करने के लिए अर्जेन्टीनियन कोन्सेजो ड प्रोफेश्नल्स एन सोशियोलोगिया, आस्ट्रेलियन, क्रोशियन, जर्मन, तथा ईरानियन सोशियोलोजिकल एसोसिऐशन्स को अनुदान प्रदान किये गये। नोर्डिक राष्ट्रों के डाक्टोरल विद्यार्थियों के लिए आयोजित क्षेत्रिय पीएच.डी. वर्कशाप के लिए द फिनिश वैर्स्टमार्क सोसाईटी को अनुदान दिया गया। एनएएलसी के सदस्यों नें अनुदानों के लिए आवेदन करने के लिए वर्कशाप्स के क्षेत्रीय होने के महत्व पर जोर दिया।

> राबर्ट वान क्राईकेन उपाध्यक्ष वित्त तथा सदस्यता

सदस्यता

समिति ने समूहिक सदस्यता के साथ ही साथ व्यक्तिगत सदस्यता की समीक्षा की जो कि दिसम्बर 2012 में सर्वकालिक उच्चतम 5300 थी।

शोध समितियों, कार्य समूहों, तथा विषयात्मक समूहों की सदस्यता की समीक्षा की गई और यह पाया कि चार आरसीज की स्थिति मध्यम से उच्च जोखिम स्तर के बीच है तथा उनकी सदस्यता में गिरावट आ रही है। जो आरसीज तथा टीजीज उल्लेखनीय रुप से बढ रहीं हैं उनमें सम्मिलित हैः आरसी 07 फ्यूचर्स रिसर्च, आरसी 09 सोशल ट्रान्सफार्मेशन्स एण्ड सोशियोलाजी आफ डवलपमेन्ट, आरसी 13 सोशियोलाजी आफ लेजर, आरसी 19 सोशियोलाजी आफ पावर्टी, सोशल वैल्फेयर एण सोशल पॉलिसी, आरसी 21 रीजनल एण्ड अरबन डवलपमेन्ट, आरसी 31 सोशियोलाजी आफ माईग्रेशन, आरसी 32 वूमन इन सोसाईटी, टीजी 03 ह्यूमन राईट एण्ड सोशल जस्टिस, टीजी 04 सोशियोलाजी आफ रिस्क एण्ड अनसर्टेन्टि, टीजी 05 विज्युअल सोशियोलाजी।

आजीवन सदस्यता के बढ़ते हुए अनुपात पर चिन्ता व्यक्त की गई तथा समिति ने कार्यकारिणी समिति के पास यह प्रश्न विचार विमर्श के लिए भेजा। ईश्वर मोदी तथा टॉम डायर की एक उपसमिति ने सदस्यता आंकडों पर अपना विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा सदस्यता में सुधार के लिए कुछ अनुशंसाऐं की जिनमें एक उपसमिति की स्थापना शामिल है जो कि सदस्यता के विकास की देखभाल करेगी।

वित्त

समिति ने सदस्यता शुल्क, प्रकाशनों से प्राप्त अधिशुल्क, तथा ब्याज की आय में आई कमी तथा साथ ही साथ आईएसए के विभिन्न कार्यक्रमों पर होने वाले खर्चों में वृद्धि को चिन्हित किया लेकिन सेज (Sage) के योगदान में महत्वपूर्ण वृद्धि को भी रेखांकित किया ।

आईएसए की वैबसाइट पर वर्ष 2011–2012 के लिए एक विस्तृत वित्तीय विवरण लगाया जाएगा।

अतिरिक्त वित्त के आवेदनों पर चर्चा की गई तथा उन्हे पारित किया गया अथवा कार्यकारिणी समिति के पास विचार विमर्श के लिए भेजा गया जिनमें शामिल हैं योकोहामा में नेशनल एसोसिऐशन्स के प्रतिनिधियों के लिए तथा प्रोग्राम संयोजकों के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहयोग की व्यवस्था जो कि वर्ल्ड कांग्रेस के बजट का एक भाग हो। ■

>पौलिश सम्पादक दल का परिचय

लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला

कैरोलिना मिकोलाजेवस्का, वार्सा विश्वविद्यालय तथा कोजमिन्सकी विश्वविद्यालय, पौलेण्ड

सन् 2011 के पतझड में हमने विद्यार्थियों का एक संगठन लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला (पौलिश में : Koło Naukowe Socjologii Publicznej) के नाम से स्थापित किया तथा वार्सा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र संस्थान से सम्बद्धता प्राप्त की। हमारे साथी विद्यार्थीयों जो कि अण्डरग्रेज्युएट, ग्रेज्युएट, तथा पोस्टग्रेज्युएट कोर्स कर रहे थे, सी. राइट मिल्स के प्रसिद्ध वाक्य को ध्येय बना कर निजी समस्याओं में सार्वजनिक मुद्दों को खोजने के समान्य उद्देश्य से इसमें शामिल हुए। हम एक सामाजिक जांच–पडताल को जारी रखना चाहते थे जो कि हमारे सामाजिक जीवन में व्याप्त रहती है।

हमारे समूह द्वारा अनेक क्रियाकलाप किये जाते हैं परन्तु उनमें वैश्विक संवाद का पौलिश भाषा में अनुवाद निश्चय ही सर्वोत्कृष्ट कार्य है । जीडी 2.4 में हमने स्टोम्पका तथा बुरावे के मध्य विवाद में उठाए गये मुद्दों पर आधारित एक परिचर्चा के संक्षेप को प्रकाशित करवाया था जिसमें विशेष तौर पर पौलिश शैक्षणिक जीवन की परिस्थितियों का जिक्र था। लोक समाजशास्त्र को करने की यह हमारी अलग ढ़ंग की परिचर्चा थी जिसने कि उल्लेखनीय श्रोताओं को आकर्षित किया। इसके अलावा, हमने सेमिनारों की एक श्रृंखला का आयोजन किया जिसमें कि सक्रिय समाजशास्त्रियों ने भागीदारी की। वर्तमान में हम पौलेण्ड में समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के एक तन्त्र को बनाने की योजना बना रहे हैं। हम जीडी तन्त्र में भागीदारी कर के और अधिक खुश हैं, तथा अपनी लोक समाजशास्त्र की परिचर्चाओं को पौलेण्ड के बाहर भी फैलाना चाहते हैं।

आप हमें ई–मेल द्वारा सम्पर्क कर सकते हैं:
public.sociology.kn@uw.edu.pl

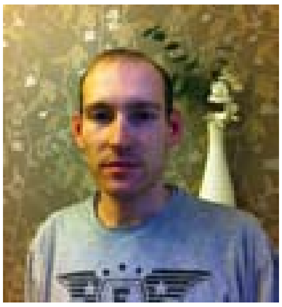

एडम मुलर वार्सा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र संस्थान जहां से उन्होनें अपनी एम.ए. की उपाधि प्राप्त की है में पीएच.डी के उम्मीदवार हैं। वर्तमान में उनकी शोध रुचियां सहकारी बैकिंग संस्थानों तथा नैतिक अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित हैं।

कैरोलिना मिकोलाजेवस्का वार्सा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र संस्थान में पीएच.डी की उम्मीदवार, जहां से उन्होनें अपनी समाजशास्त्र में एम.ए. की उपाधी प्राप्त की। वह कोजमिन्सकी विश्वविद्यालय के सेन्टर फार रिसर्च आन ओरग्नाइजेश्नस एण्ड वर्कप्लेसेज में पढा रही हैं तथा शोध सहायक के रुप में कार्य कर रही हैं। उनकी शोध रुचियां आर्थिक नृवंशविज्ञान तथा समाजशास्त्र, श्रम सम्बन्ध और संगठन अध्यनों को समाविष्ट करती हैं।

किरजाईस्टोफ गुबान्सकी वार्सा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र तथा संस्कृति अध्ययन में अण्डरग्रेज्युएट विद्यार्थी। उसनें एक वर्ष म्युनिख के लुडविंग मैक्सिमिलयन्स् युर्निवर्सटाट में भी बिताया है। आर्थिक समाजशास्त्र, शहरी अध्ययन, संवाद विश्लेषण आदि मे रुचि है। विद्यार्थियों की काउन्सिल का सक्रिय सदस्य है। वह अपना बैचलर्स शोध पत्र पौलेण्ड में उच्च शिक्षा में परिवर्तन पर लिख रहा है।

मिकोलाज मिरजेवस्की वार्सा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र अध्ययन में अण्डरग्रेज्युएट विद्यार्थी। उसकी रुचियों के क्षेत्र उच्च शिक्षा का समाजशास्त्र, विज्ञान का समाजशास्त्र, आर्थिक समाजशास्त्र, वर्ग विश्लेषण, तथा लोक समाजशास्त्र जैसे विषय हैं। वह"नये विश्वविद्यालयों की शुरुआत" के आन्दोलनात्मक कदम तथा शोध संस्थान जो कि शैक्षिक गतिविधियों में परिवर्तन पर केन्द्रित है का सदस्य भी है।

>>

जैकब रोजेन्बाम वार्सा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र अध्ययन में ग्रेज्युएट का विद्यार्थी। वह एक शोध पत्र साम्यवाद के बाद वार्सा में निजी सम्पत्ति का पुर्नस्थापन पर लिख रहा है। श्रम सम्बन्ध, नागरीकीय (विशेषतः युवा) भागीदारी, तथा आवासीय प्रश्न उसकी प्रमुख समाजशास्त्रीय अभिरुचियां हैं। वह सामाजिक परिवर्तनों में समाज विज्ञानों की सहभागिता का एक प्रखर समर्थक है।

अन्ना पाईकुटोवस्का वार्सा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र अध्ययन में ग्रेज्युएट की विद्यार्थी। उसकी प्रमुख अभिरुचियों में सामाजिक आन्दोलन तथा सामाजिक अर्थशास्त्र, लैंगिक समाजशास्त्र तथा लैंगिकता शामिल हैं। उसके पूर्व में किये गये शोध नारीवादी संगठनों का विश्लेषण तथा पौलेण्ड में नारियों की स्थिति और प्रभाव पर हैं। अपने मास्टर्स थिसिस के लिए वह सामाजिक सहकारिता का सामाजिक समावेशन के एक औजार के रुप में परीक्षण करना चाहती है।

टोमाज पाईटेक वार्सा विश्वविद्यालय के राबर्ट बी. जाजोन्क समाज विज्ञान संस्थान में पीएच. डी के उम्मीदवार। समाजशास्त्र में उसके मुख्य अभिरुचि क्षेत्र हैं शिक्षा और शैक्षणिक व्यवस्था का समाजशास्त्र, युवा अध्ययन, जटिल अध्यापन कला, तथा समाजशास्त्रियों की सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रश्न।

जूलिया लेगेट वार्सा विश्विद्यालय के समाजशास्त्र संस्थान में एम.ए. की विद्यार्थी जहां से कि उसने अपनी बी.ए. उपाधि भी ली है। उसकी प्रमुख अभिरुचियां सामाजिक आन्दोलन, नागरिकीय भागीदारी तथा समाजिक असमानताऐं हैं।

जोफिया व्लोडरजिक वार्सा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र अध्ययन में ग्रेज्युएट की विद्यार्थी। वह एक शोध पत्र ग्रामीण महिलाओं की जीवनी के विभिन्न प्रत्यक्षीकरण के अभिकरण पर लिख रही है। लोक समाजशास्त्र, नागरीकीय (विशेषतः युवा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में) भागीदारी, तथा जीवनियों का समाजशास्त्र उसकी प्रमुख अभिरुचियां हैं।

एमिलिया हुइजिन्सका वार्सा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र अध्ययन में ग्रेज्युएट की विद्यार्थी तथा वर्तमान में अमेरिकन अध्ययन तथा उपनिवेशों की राजनैतिक स्वतन्त्रता के मुद्दों में रुचि रखती है। उसने वार्सा विश्वविद्यालय की समाजशास्त्र संस्थान से ग्रेज्युएट किया है जहां से उसने अपनी एम.ए उपाधि भी ली है। अपने मास्टर्स थिसिस के लिए उसने पौलिश प्रतिष्ठित समुदाय तथा राजनेताओं के मध्य शक्ति सम्बन्धों का परीक्षण किया है।

> कनाडाई समाजशास्त्र आपके स्वागत हेतु तत्पर है

पैट्रिजिया अलबनीज, अध्यक्ष–निर्वाचित, कनाडाई समाजशास्त्र परिषद, अध्यक्ष – स्थानीय संगठन समिति–2018 आई. एस. ए. विश्व कांग्रेस एवं रायरसन विश्वविद्यालय, टोरेन्टो, कनाडा

2018 की विश्व कांग्रेस के आयोजन के बारे में चर्चा करने के लिए टोरेन्टो क्षेत्र के समाजशास्त्री माईकल बुरावे तथा इजाबेला बार्लिन्सका से मिले। पीछे की पंक्ति में बायें से दायें: लोर्न टेपरमान (टोरेन्टो विश्वविद्यालय), चैरिल टैलुकसिंग टेपरमान (रियरसन विश्वविद्यालय), इजाबेला बार्लिन्सका (आईएसए की कार्यकारी सचिव), तथा बॉब एन्डरसन (टोरेन्टो विश्वविद्यालय), सामने की पंक्ति में बायें से दायें: नैन्सी मैन्डल (यार्क विश्वविद्यालय), पैट्रीजिया अल्बानीज (रियरसन विश्वविद्यालय), तथा लेस्ली वुड (यार्क विश्वविद्यालय)।

कनाडाई समाजशास्त्री प्रसन्नता के साथ यह समाचार आपको प्रेषित करते हैं कि सन् 2018 की आइ एस ए की विश्व कांग्रेस के लिए टोरेन्टो कनाडा को चुना गया है। 2018 में विश्व कांग्रेस की तैयारियों की तरफ बढ़ते हुए हमें आशा है कि हमें आपको जानने के और आपको हमें जानने के अनेक अवसर और अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। हम विशिष्ट लेकिन मित्रता मूलक लोग हैं हममें आलोचनात्मक एवं प्रत्यावर्तनीय शैली का समावेश है। हम यहाँ अपना एक संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं कि हम कौन हैं तथा हम क्या करते हैं।

कनाडियन समाजशास्त्र, यह रेखांकित करना सरल है कि यह क्या नहीं है बजाय इस निर्धारण के कि यह क्या है और ऐसा क्या है जो हमें विशिष्ट बनाता है। परन्तु प्रारम्भ में हम यह अवश्य कहेंगे कि यह नीरस नहीं है, यह स्थिर नहीं है, यह समरूपीय नहीं है और यह इतना आसान नहीं है कि इसे कुछ शब्दों में विवेचित किया जा सके।

समाजशास्त्र सामान्यतः सदैव परम्परागत विषयों एवं विशेषज्ञों के अन्दर से और बाहर से ग्रहण करता रहा है और इसलिये यह खुला व लचीला विषय है। हमारा विषय एक सफाई कर्मी की तरह है और हमारा पेशा भी सफाई कर्मी की तरह है। हमें विभिन्न स्थानों, क्षेत्रों, विचारों एवं विशेष ''प्रतिमानों'' से परे जाने में कोई डर नहीं लगता। हम रोशनी एकत्रित करते व जलाते हैं तथा नावों को तेज गति देते हैं और चारों और दौड़ाते हैं। हम प्रश्न करते हैं और स्वयं से भी प्रश्न करते हैं कि हम एक जीवन के लिए क्या कर रहे है। अनेक वर्षों से अन्य समाजशास्त्रों में उभरे सवालों की भाँति कनाडियन समाजशास्त्रियों ने भी यह प्रश्न किये हैं कि हम कौन है, हम क्या करते हैं और हम यह क्यों करते हैं। कनाडा में राबर्ट ब्रायम (2003), नील मैक्लोग्लिन (2005) एवं डाव बेयर (2005) उन समाजशास्त्रियों में से कुछ है जिन्होंने यह बहस छेड़ी कि क्या कनाडियन समाजशास्त्र संकट के दौर से गुजर रहा है। हमारा मत है कि इस तरह की बहस एवं विमर्श का होना एक स्वस्थ संकेत है। सभी दृष्टिकोणों को विराम देने के लिए हम यहां मार्क ट्वेन के इस मत को प्रस्तुत करेंगे कि 'मेरी मृत्यु के सभी प्रतिवेदनों को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया है'।

कनाडियन समाजशास्त्र जीवन्त एवं उपयुक्त है। वास्तव में कनाडियन सोशियोलोजिकल एसोशियन का विस्तार हो रहा है। साथ ही समाजशास्त्र की कनाडियन शोध पत्रिकाओं की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो रही है। डॉ0 रेजा नखाले (विंडसर विश्वविद्यालय), जो कि कनाडियन रिव्यु ऑफ सोशियोलोजी के वर्तमान सम्पादक हैं, ने इस शोध पत्रिका के पिछले 45 वर्षों के इतिहास का प्रकाशन किया। यह शोध पत्रिका कनाडा की सर्वाधिक पुरानी पत्रिका है और इसमें विशेषज्ञों के कठोर मूल्यांकन के उपरान्त ही लेखों का प्रकाशन होता है। शोध पत्रिका के इतिहास का विश्लेषण करते हुए उनका मत है कि ''आर सी एस में प्रकाशित हुए शोध आलेखों ने समाजशास्त्री एवं अन्य बुद्धिजीवियों के मध्य, जो कनाडा के मुख्य धारायी एवं वैज्ञानिक समाजशास्त्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, सृजनात्मक एवं उपयोगी विमर्श स्थापित किया है। यह विमर्श अकादमिक व अनेक अवसरों पर आलोचनात्मक, रेडीकल एवं परस्पर विपरीत प्रकृति का हो जाता है। एस सी आर अपने आप में विचारों का प्रसारण एवं पेशेवरों तथा कनाडियन अकादमिक आलोचकों के मध्य पारस्परिक विमर्श का माध्यम है।''[1]

हम यह आशा करते हैं कि हम अपने विषय के प्रति सदैव सत्यता का भाव अपनायेंगे एवं हमारी योग्यता सदैव उपयुक्त एवं समीचीन बनी रहेगी। वे समाजशास्त्री जो उपयुक्त व समीचीन नहीं है सम्भवतया संकट की स्थिति का सामना करते हैं। कार्यक्रम विवेचन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कनाडा में 54 अंग्रेजी माध्यम के समाजशास्त्र विभाग है जिनमें स्नातक स्तर के कार्यक्रमों में मुख्यतः आलोचनात्मक सोच सम्बन्धी व्यवहार पर बल दिया जाता है साथ ही व्यापकता पर आधारित उदारवादी (लिबरल) कला शिक्षा एवं समीप के परिवेश में व्याप्त सामाजिक स्थितियों पर अमिट प्रभाव को स्थापित करने के अवसर सम्बन्धी पक्षों पर बल दिया जाता है (पुडेफैट एवं नेल्सन, 2010: 423)। हम यदि इसमें से कुछ भी स्नातक विद्यार्थियों के लिए कर पाते

>>

हैं (इससे कुछ अधिक यदि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए कर पाते हैं) तो हम उस दिशा की ओर ठीक तरीके से अग्रसर हैं जो हमारे विषय की उपादेयता व महत्व को स्थापित करती है।

इस संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी को विराम देते हुए मुझे अवसर दें कि मैं आपके साथ कनाडा में कार्यरत अपने सहयोगियों के कुछ दृष्टिकोण प्रस्तुत करूँ ताकि आप वैचारिक साझेदारी कर पायें। कनाडियन समाजशास्त्र को विशिष्ट बनाने हेतु सुझावों को प्रेषित करने का ई–मेल अनुरोध किया गया था। इस आलेख में आपके सामने कुछ कनाडियन सहयोगियों (समाजशास्त्रियों) के विचार प्रस्तुत कर रहा हूं :

– कनाडियन समाजशास्त्र अनेक पक्षों में विशिष्ट हैं जिनमें भाषा, क्षेत्र, शैक्षणिक प्रशिक्षणए सैद्धान्तिक उपागम एवं आनुभाविक क्रियान्वनता के अवयव सम्मिलित हैं। यदि देश के समाज शास्त्र की विधाओं में कोई एक सत्यता है तो उसका सम्बन्ध अमेरिकन व यूरोपियन परम्पराओं को एकता के तत्व के साथ जोड़ने की प्रतिबद्ध ता, ऐतिहासिक प्रवृत्तियों के प्रति प्रतिबद्धताओं से है। कनाडियन समाजशास्त्र की स्थिति प्रथम बार उदारवादी ''पोर्टेरियन परम्परा'' में स्थापित होती है तत्पश्चात् मार्क्सवादी नवीन राजनीतिक अर्थवाद तथा हाल ही में वि उपनिवेशवादी, नारीवादी, उत्तर–आधुनिक एवं अन्य उभर रहे परिप्रेक्ष्यों से कनाडियन समाजशास्त्र को शक्ति प्राप्त हुई है। कनाडियन समाजशास्त्र के सन्तुलित विकास के चिन्ह के रूप में नियम/प्रतिमान वादी परिप्रेक्ष्य हालांकि विवेचन प्रक्रिया में उपेक्षित हुआ है। (डॉ0 हावर्ड रामोस, एसोशियेट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र विभाग, डलहौजी विश्वविद्यालय)

– सास्केचवान विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर सिद्धान्त से सम्बद्ध सेमीनार में जो विवेचना हुई तथा वहाँ उपस्थित समूह जिस विचार में साझेदारी कर रहा था उसे मैं आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं: ''कनाडा की व्यग्र जनसंख्या का वितरण, जिसका सम्बन्ध विविध् तामूलक प्राकृतिक एवं भौगोलिक परिवेश से है, एक चुनौती प्रस्तुत करता है कि जटिल सामाजिक सम्बन्धों को कैसे समझा जावे। कनाडियन समाजशास्त्र इस अत्यन्त विविधतामूलक जनसंख्या के अभिव्यक्ति मूलक पक्षों को समझ कर समृद्ध हुआ है। कनाडियन समाजशास्त्र ने आलोचनात्मक बढ़त ले रखी है जो कि राष्ट्रीय छवि एवं ढाँचें के ''बैक स्टेज'' (पीछे के चरण) को सामने लाने हेतु महत्वपूर्ण है। इस 'बैक स्टेज' को सामान्यतः सहभागी मूल्यों एवं सांस्कृतिक गुणों की अवधारणों के द्वारा सतह पर व्यक्त किया जाता है।

– यॉर्क विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के विभागाध्यक्ष ने अपने कार्यक्रम पर टिप्पणी की है। यह विभाग देश के सबसे बड़े विभागों में से एक है। इनका मत है कि ''1960 के दशक से आलोचनात्मक समाजशास्त्र से उत्पन्न उपयुक्त व संतुलित विरासत एवं इसका कनाडा एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवहार मूलक पक्ष वे अवयव हैं जिनके साथ समाजशास्त्र के हमारे विद्यार्थी जुड़े हुए हैं। सब मिला कर विभाग विभिन्न अध्ययनों एवं अध्ययनकर्ताओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाता है जो कि परिपाटीय पूर्व स्थापनाओं/अनुमानों को चुनोती देता है और ऐसा करते हुए स्वास्थ्य की समान उपलब्धता, यौनिक स्वतन्त्रता व न्याय से जुड़े अधिकारियों की जवाबदेही जैसे मुद्दों पर बल दिया गया है ताकि सामाजिक न्याय के वृहद ढाँचें की प्राप्ति के उद्देश्य की ओर अग्रसर हो सके। व्यापक रूप से कहा जा सकता है कि अन्याय, शक्ति सम्बन्ध एवं विचारधारायी मुद्दों पर हमारा विशेष ध्यान होता है जिससे सामाजिक सक्रियता को प्रोत्साहन मिलता है। अनेक संकाय सदस्यों ने अपने अध्ययन उपागमों में इतिहास को केन्द्रीयता प्रदान की है विशेषतः औपनिवेशिक एवं साम्राज्यवादी विस्तार का समूचे विश्व पर प्रभाव के पक्ष को उन्होंने केन्द्रीय महत्व दिया है जिसके द्वारा हमारे (कनाडा) यथार्थ/वर्तमान की समझ को समझा जा सकता है एवं विश्लेषण किया जा सकता है।

– न्यूफाउण्डलैण्ड मैमोरियल विश्वविद्यालय में शोध कार्य कर रही पाउला ग्राहम ने लिखा ''सामाजिक आन्दोलन पर मेरे शोध कार्य से सम्बद्ध परिप्रेक्ष्य के अनुसार कैनाडियन समाजशास्त्र सामान्यतः मुक्ति की द्योतक है। मेरी उन प्रयासों से सहानुभूति है जो ''कैनाडियन समाजशास्त्र'' में कनाडियन क्या है, को रेखांकित करते हैं। साथ ही इसे केन्द्र में रख कर अध्ययन कार्यक्रम को मजबूती देते हैं। यह मजबूती अपने अधिकार के साथ भी सम्बद्ध हो जाती है। मेरा मत है कि ''कनाडियन समाजशास्त्र'' की अस्पष्ट अस्मिता अनेक दृष्टियों से सहायक सिद्ध होती है। अमेरिकन, यूरोपियन या अन्य विवेचनात्मक उपागमों को प्रयुक्त या स्वीकार किये बिना मैं समाजशास्त्र के सभी हिस्सों से सम्बद्ध साहित्य एवं सिद्धान्तों के साथ मैं खुले रूप में सम्बन्ध रखती हूँ और उसके प्रति स्वीकृति का भाव रखती हूँ। इस में कनाडा से सम्बद्ध साहित्य व सिद्धान्त भी सम्मिलित हैं।

इस मत के साथ मैं अपने विचारों को विराम देता हूँ। कनाडियन समाजशास्त्री आपके व्यक्तिगत रूप से स्वागत के लिए व्यग्र हैं। वे उत्सुक हैं कि हमारे कांफ्रेस सेमीनार कमरों, पब्स, रेस्टोरेण्ट में आपसे उनका जीवन्त संवाद हो। हम निश्चित हैं कि इन सबसे नवीन व आकर्षक अकादमिक सहयोग हम सब के बीच उत्पन्न होगा। ■

References

Baer, D. (2005) "On the Crisis in Canadian Sociology: Comment on McLaughlin." *Canadian Journal of Sociology* 30(4): 491-502.

Brym, R. (2003) "The Decline of the Canadian Sociology and Anthropology Association." *Canadian Journal of Sociology* 28: 411-416.

McLaughlin, N. (2005) "Canada's Impossible Science: Historical and Institutional Origins of the Coming-Crisis of Anglo-Canadian Sociology." *Canadian Journal of Sociology* 30(1): 1-40.

Nakhaie, R. 2010. *"Les 45 années de la* Revue canadienne de sociologie *(et d'anthropologie). 45 years of the* Canadian Review of Sociology *(and Anthropology)." Canadian Review of Sociology* 47(3): 319-325.

Puddephatt, A. and R.W. Nelsen (2010) "The Promise of a Sociology Degree in Canadian Higher Education." *Canadian Review of Sociology* 47(2): 405-430.

[1] Translation: "The articles published in the *CRS* have been instrumental in producing dynamic dialogue among sociologists and other intellectuals who represent Canada's mainstream and scientific sociology which is academic and at times critical, radical and oppositional. As such, the *CRS* represents and has been an outlet for the dissemination of ideas and dialogue among Canadian professionals and critical academics."

> सम्पादक के नाम पत्र

फेरास हम्मामी के लेख इजरायली विश्वविद्यालयों पर प्रतिक्रिया (ग्लोबल डायलॉग 3.2)

प्रिय सम्पादक,

फेरास हम्मामी के लेख "इजरायली विश्वविद्यालयों में राजनीतिक संकट" (जी डी 3.2) पर हम यह असहमति मूलक प्रतिक्रिया कर रहे हैं। अन्य विचारकों ने भी इस मुद्दे पर अपने विचार प्रस्तुति किये हैं। आन्द्रे बेतेइ लिखते हैं कि एक समाजशास्त्री के रूप में अपनी भूमिका में वे नैतिकता को प्रेषित करने का तत्व नहीं पाते। जबकि जैक्लीन काक राजनीतिक पक्षों को गहराई से लेते हुए लिखती है कि बिना उन लोगों को जो अनेक समस्याओं से गुजरे हैं, महिमा मण्डित किये अथवा वे लोग जो शोषण का शिकार हैं को प्रस्तुत करते हुए तथा वे लोग जो इनके शोषण हेतु उत्तरदायी हैं को आलोचना एवं भर्त्सना के साथ प्रस्तुत करते हुए विश्लेषणों को प्रस्तुत करना आवश्यक है। ऐसा इसलिए नहीं है कि वे इसके लिए उत्तरदायी नहीं है पर लेखक यह दावा नहीं करती कि वह एक विधिवेत्ता है अथवा एक न्यायाधीश है। इजरायल पर लिखा गया आलेख, इसके विपरीत पहलु नैतिकतावादी एवं खण्डनमूलक है और साथ ही अनेक उच्चाधिकारियों से एवं कठिनाई मूलक स्थितियों से सम्बद्ध उदाहरणों को सम्मिलित करता है। इन उदाहरणों/साक्ष्यों को सक्रियतामूलक स्त्रोतों से ग्रहण किया गया है। लेखक अकादमिक स्त्रोतों एवं समाचार पत्रों को स्त्रोतों के रूप में अपने तर्कों हेतु प्रयुक्त कर सकता था (ये सब अकादमिक प्रकाशन ही तो है)। लेख अन्तिम तिथि की सीमा रेखा के परे भी जा सकता था क्योंकि इजरायल की उच्च शिक्षा काउन्सिल ने 13 फरवरी को अपने निर्णय को निरस्त कर दिया जिसे हम्मामी ने प्रस्तुत किया है। पूर्व में यह निर्णय बेन–गुरियन विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र विभाग को बन्द करने से सम्बद्ध था।

यह लेख व्यक्तिगत घटनाओं अर्थात् व्यक्ति केन्द्रित घटनाओं को व्यापक रूप से फैले स्वरूप के रूप में प्रस्तुत करता है। ऐसे अनेक दक्षिण पन्थी समूह हैं जो इजरायल में प्रोफेसर्स की उनके मतों के लिए विचार / के लिए भर्त्सना करते हैं। कभी कभी तो यह दबाव दुर्भाग्य जनक रूप ग्रहण कर लेता है, जैसा कि नीव गॉर्डन के साथ हुआ परन्तु लेखक को कम से कम आलेख में वे साक्ष्य प्रस्तुत करने चाहिए थे जो अत्यन्त गम्भीर प्रकृति के व व्यापक बताये गये आरोपों को स्थापित कर सकें। इन आरोपों में "जन असहमति या आक्रोश की उपेक्षा, रोजगार समाप्ति, कारावास, हत्या/मृत्यु, कार्यालय कर्मियों द्वारा उन सूचनाओं के प्रेषण जो उच्चाधिकारियों को उत्तेजित करते हैं "जैसे पक्ष सम्मिलित हैं। यह एक ऐसा दावा है जिसे बिना किसी सावधानी के सामने लाया गया है। पर किसी भी स्थिति में नीव गार्डन अपने विश्वविद्यालय में निर्धारित अवधि हेतु प्रोफेसर हैं। वास्तव में तो एरिएला अजाउले की अवधि को आगे न बढ़ाने के निर्णय पर तीखी आलोचना हुई थी और यह मत उभरा था कि अवधि न बढ़ाने का निर्णय राजनीति से प्रेरित था और इस मत को अनेक लोगों ने स्वीकारा था। इसके कारण/बावजूद कुछ साक्ष्य वहाँ आवश्यक थे और वे निर्विवाद रूप से दिये जाने चाहिए थे। यह क्योंकि एक गम्भीर मुद्दा है कि एक विश्वविद्यालय पर नियुक्तियों में राजनीतिक पूर्वाग्रह के आरोप लगे हैं।

यह लेख व्यक्तियों में व्याप्त व्यक्तिवादिता के खतरनाक पक्षों के कारण बहिष्कार का आव्हान करता है एवं उन लोगों को दण्ड दिये जाने की वकालत करता है जो एक देश में रहते हैं और अपनी सरकार की गलतियों के लिए जिम्मेदार कहे जा सकते हैं। बहिष्कार निश्चय ही एक महत्वपूर्ण विद्या है और प्रभाव डालती है। इसका उद्देश्य चेतना को उभारना है और इस विषय में तो बहिष्कार इजरायली शिक्षाविदों को प्रोत्साहित करता है कि वे अपनी सरकार के क्रिया कलापों पर प्रतिक्रिया करें। लेकिन यह किसी ऐसे प्रचार (कैम्पेन) को तर्क संगत नहीं ठहराता जो अपने सहयोगियों (सम्भवतया) की समूची जनसंख्या को अलग थलग कर दे। प्रचारकों के लिए अच्छा होगा यदि वे उन पक्षों पर अपने को केन्द्रित करें जो वास्तव में सरकार को नुकसान पहुँचा सकते हैं। वास्तव में, मैं, उदाहरण के लिए, इजरायल के यूरोपीयन यूनियन (ई यू) के साथ सहयोगी व्यापार सम्बन्धों को समाप्त करने का समर्थन करूँगा जो अनेक जटिलताओं को पहले ही उत्पन्न कर चुका है जैसे वैस्ट बैंक के उत्पादों को "इजरायल के उत्पादन" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

दक्षिण अफ्रीका के समकक्ष इस प्रकरण को रखा जाना समस्या मूलक है क्योंकि विश्वविद्यालयों एवं खेल समितियों के द्वारा ही स्वयं उस देश में भेदभाव को नीति के रूप को अपनाया जा रहा है। ऐसा इजरायल में नहीं है। लेकिन बहिष्कार एक संकुचित दृष्टिकोण का प्रस्ताव है। यह पेशेवर एवं बौद्धिक सम्बन्धों को जहरीला बनाती है। यह स्थिति और आगे जाकर इजरायली वैज्ञानिकों के साथ अकादमिक सहयोग को राजनीतिक मुद्दा बना देगी।

डेविड लेहमन, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (यू.के.)

प्रिय सम्पादक,

फेरास हम्मामी के द्वारा इजरायली विश्वविद्यालयों में राजनीतिक संकट के विषय पर खोज परक लेख से पता चलता है कि ऐसे इजरायली शिक्षाविदों की संख्या कम है जो सरकारी नीतियों के विरूद्ध विरोध को आवश्यक मानते हैं। फिलास्तीनी विश्वविद्यालयों को बन्द करने के निर्णय पर शिक्षाविदों का एक बड़ा बहुमत शानत रहा लेकिन जब उनकी स्वयं की अकादमिक स्वतन्त्रता को चुनौती मिली तो उनकी प्रतिक्रियाएँ बिल्कुल भिन्न थीं। संकट हालांकि अनेक तरह के अवसर भी प्रदान करता है।

इजरायल राज्य का एक शक्तिशाली प्रोपेगैण्डा हथियार यह रहा है कि अरब निरंकुशवादी राजनीतिक सीमा के अन्दर वह स्वयं को लोकतन्त्र के द्वीप के रूप में प्रस्तुत करता है साथ ही वह अपने विश्वविद्यालयों को उदारवादी आलोचना का एक स्त्रोत बताता रहा है। मीडिया की लहर ने अति उत्साह में परिपक्वता के पूर्व ही यह दावा प्रसारित करना प्रारम्भ कर दिया कि अरब में आन्दोलनों की लहर थम गयी है। इजरायल का यह दावा कि वह लोकतान्त्रिक है एवं उसके विश्वविद्यालय उदारवादी आलोचना के गढ़ हैं, अनेक कठिनाइयों का शिकार बन गया है। एक अच्छी संख्या में सहयोगियों ने जिन्हें विरोधियों के एक छोटे समूह का समर्थन प्राप्त है पर इन सहयोगियों को खासा अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त है ने उत्पीड़न की प्रक्रिया को सीमित कर दिया है हालांकि यह पूर्णरूपेण रूकी नहीं है। बेन गुरियन विश्वविद्यालय में एक समूचे विभाग को बन्द करने के प्रस्ताव पर अन्तर्राष्ट्रीय पैनल (समिति) की यह भूमिका आलोचना का शिकार रही जिसमें अकादमिक स्वतन्त्रता के प्रति इजरायल की प्रतिबद्धता को बड़े निर्दोष तरीके से प्रस्तुत करने की कोशिश हुई है। काउन्सिल फार हायर एज्यूकेशन (सी एच ई) ने इजरायली विश्वविद्यालयी व्यवस्था में राजनीति शास्त्र के समस्त विभागों के मूल्यांकन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय पैनल (समूह) को आमन्त्रित किया और इनके द्वारा विभाग को बन्द करने की अनुशंसा की गयी है, ऐसा बताया गया। यह निर्विवाद है कि सी एच ई अति यहूदी राष्ट्रवादियों के दबाव में थी जो विश्वविद्यालय के बाहर इस विश्वविद्यालय के विभाग को तथा प्रोफेसर नेव गार्डन को यहूदीवाद के विरोध का गढ़ बता रहे थे। यह विभाग अकादमिक बहिष्कार का जन समर्थन पा सका जो कि मुख्य था। विभाग व प्रोफेसर नेव गार्डन ऐसे तत्वों का निशाना थे।

सी एच ई ने इस दबाव के सम्मुख समर्पण कर दिया एवं सितम्बर, 2012 में विभाग को बन्द करने का प्रस्ताव कर दिया। लेकिन वरिष्ठ शिक्षाविदों जिसमें विजमान संस्थान, जो कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उत्कृष्ट संस्थान है, के शिक्षाविदों को तत्काल लगा कि यह प्रस्ताव इजरायली विश्वविद्यालयों की अकादमिक स्वतन्त्रता के गढ़ की छवि को भयानक हानि पहुँचायेगा। एक सप्ताह के अन्दर 300 इजरायली शिक्षाविदों ने एक याचिका पर हस्ताक्षर कर इस निर्णय की तीखी आलोचना की। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक शिक्षाविदों ने निजी स्तर पर तथा अनेक समितियों ने भी इस निर्णय की आलोचना की बेन गुरियन, जहाँ के विभाग को बन्द करना प्रस्तावित था, जो कि इजरायल के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में एक है, ने इस खतरे को भाँपा और सी एच ई के विरूद्ध विधिक् कार्यवाही प्रारम्भ की और यह तर्क दिया कि यह एक गुप्त एवं अकादमिक दृष्टि से अतार्किक दृष्टिकोण है जो कि अकादमिक स्वतन्त्रता की विधिक् परिभाषा के विरूद्ध है। सबसे बुरी स्थिति तब उत्पन्न हुई जब अन्तर्राष्ट्रीय समूह (पैनल) ने कहा कि उन्होंने विभाग को बन्द करने की अनुशंसा नहीं की। सी एच ई अब बुरी तरह घिर गयी थी। अन्तर्राष्ट्रीय समूह ने सी एच ई की इस प्रस्तावित कार्यवाही पर प्रश्नचिन्ह उत्पन्न कर दिया और सी एच ई को निर्देश दिये कि वे बार इलान विश्वविद्यालय के विरूद्ध भी कोई कार्यवाही न करें हालांकि समूह ने इस विश्वविद्यालय के विभाग की भी आलोचना की थी।

सी एच ई पर दबाव के कारण जनवरी चुनावों तक विभाग को बन्द करने का निर्णय स्थगित कर दिया गया। एक धुर दक्षिण पन्थी सरकार चुनी गयी परन्तु बन्द करने के निर्णय की बहाली नहीं हुई। फरवरी के प्रारम्भ में हारेट्ज (Haaretz), जो कि इजरायल में सबसे उदारवादी प्रेस है, ने 13 फरवरी, 2013 को यह सूचना/समाचार दिया कि बन्द करने के निर्णय को वापस ले लिया है परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय पेनल (समूह) विभाग पर अपनी निगरानी निरन्तर बनाये रखेगा।

आशा यह है कि अब इजरायल के शिक्षाविदों ने अपनी अकादमिक स्वतन्त्रता पर खतरे को महसूस कर लिया है। वे अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन के साथ इसका विरोध करेंगे। वे इस तर्क को भी मान्यता देना प्रारम्भ करेंगे कि अकादमिक स्वतन्त्रता विभाज्य नहीं है और यह अपने उन फिलिस्तीनी सहयोगियों पर भी समान रूप से लागू होती है जो सड़क के नीचे कुछ मील दूर अध्यापन व अनुसंधान कार्य करते हैं। यह एक अवसर है।

हिलेरी रोज, ब्रेडफोर्ड विश्वविद्यालय (यू.के.)